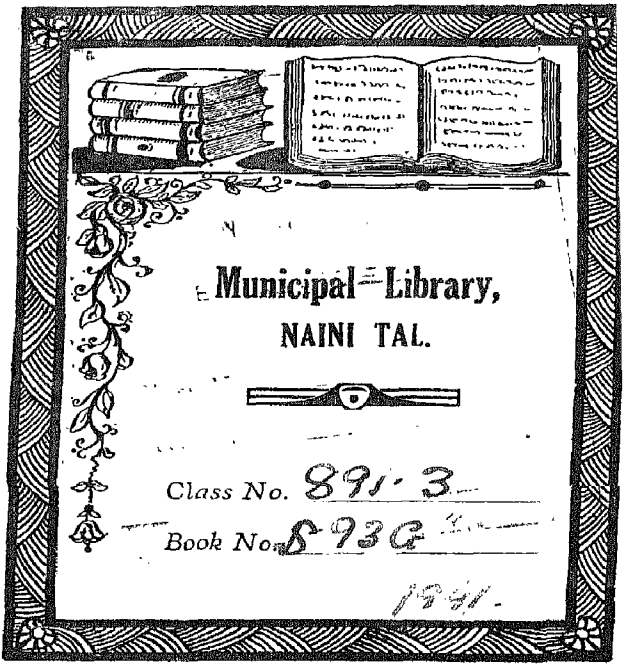

Municipal Library,
NAINI TAL.

Class No. 891.3
Book No. S93G

बुलबुल-सीरीज़—संख्या १६

गोरिल्ला

—:०:—

लेखक

श्री सत्यभक्त

फरवरी, १६४६

[... संस्करण] [एक रुपया

प्रकाशक—
श्री सत्यभक्त,
सतयुग आश्रम,
बहादुरगंज,
इलाहाबाद

Durga Sah Municipal Library,
Naini Tal.
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
नैनीताल
Class No, (विभाग ....891.3........
Book No, (पुस्तक) ....S 93 G........
Received On. ....July 1950........

1951

मुद्रक—
श्री सत्यभक्त,
सतयुग प्रेस,
बहादुरगंज,
इलाहाबाद

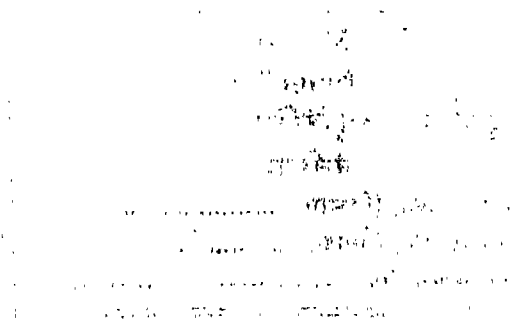

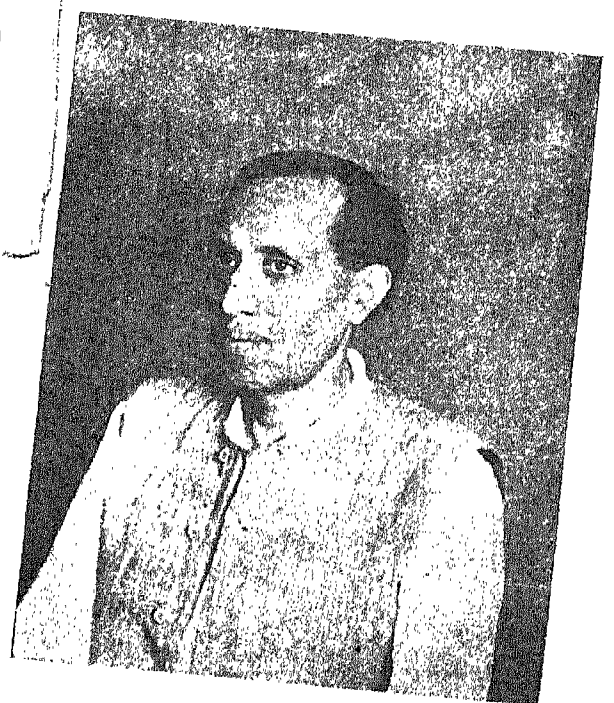

लेखक

दो शब्द

गोरिल्ला-युद्ध की प्रणाली कोई नई चीज़ नहीं है। हमारे देश में शिवाजी महाराज और उनके मराठे सैनिक इस कला में दक्ष थे और उन्होंने इसी के द्वारा मुगल-सम्राट् औरंगजेब के घमण्ड को चूर-चूर किया था। इधर जब से रायफल, तोप, बम, लड़ाकू वायुयान आदि युद्ध के आधुनिक साधन ढूँढ लिये गये थे, गोरिल्ला प्रणाली का नाम कम सुनने में आता था। पर इस महायुद्ध में रूस, जापान, ब्रिटिश जैसी बड़ी शक्तियों ने भी गोरिल्ला प्रणाली को अपनाया और उसके द्वारा बड़ी सफलता प्राप्त की। इन्डोनीशिया, जावा आदि में राष्ट्रीय दल वाले इस समय भी इसीका प्रयोग कर रहे हैं। निस्सन्देह जब कि दुश्मन की शक्ति बहुत अधिक हो अथवा उसके हथियार बहुत ऊँचे दर्जे के हों तो उसके विरोधी के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रणाली गुरिल्ला-युद्ध ही है। जंगली और पहाड़ी प्रदेशों के लिए तो इससे बढ़ कर युद्ध-प्रणाली दूसरा है ही नहीं।

इस उपन्यास में आयरलैण्ड के स्वाधीनता-प्रेमी वीरों का जो गुरिल्ला-संग्राम चित्रित किया गया है वह हाल ही में हुआ था और उन लोगों ने आधुनिक हथियारों से सजी विदेशी सरकार की सेनाओं को नाकों चने चबवा कर सफलता प्राप्त की थी। इस संग्राम की कथा जैसी रोचक है वैसी ही रोमांचकारी भी है। इस उपन्यास में जो घटनाएँ दी गई हैं वे कल्पित नहीं हैं वरन् वैसी और उससे भी बढ़ कर वीर हृदयों को उल्लसित करने वाली घटनाएँ उस काल में समस्त आयरलैण्ड में घटी थीं। इस उपन्यास में उन्हीं में से भिन्न-भिन्न स्थानों की कई घटनाओं को एक सूत्र में पिरो कर पाठकों को भेंट किया गया है। आशा है कि मनोरंजन के साथ ही यह उपन्यास पाठकों के हृदयों में देशभक्ति तथा वीरता के भावों का उदय करेगा। इसी उद्देश्य से हमने इसे पुनर्बार नवीन और संशोधित रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

१०-२-४६] —सत्यभक्त

सूची

१—पहली गोली ...	...	...	५
२—गोरिल्ला-दल का संगठन	...	...	१४
३—सरकारी सेना पर छापा	...	...	२१
४—गोरिल्ला-दल का घेरा	...	...	२८
५—एक पैदायशी गोरिल्ला	...	...	३७
६—एक खतरनाक यात्रा	...	...	४८
७—युद्ध और प्रेम ...	..	...	५८
८—काल के मुँह से निकल आये	...	..	७०
९—एक निरपेक्ष डाक्टर	...	...	८०
१०—युद्ध के दाव पेंच ..	...	...	९०
११—देशभक्ति का प्रमाण	...	...	९८
१२—क़ैदी की रिहाई ...	...	...	१०७
१३—सरकारी सेनापति पर आक्रमण	...	...	११३
१४ लड़ाई का अन्त ...	...	...	१२०

गोरिल्ला

पहिली गोली

जिस समय योरोप में प्रथम महासमर की आग भड़की थी उस समय उसके प्रभाव से अनेक देशों में विद्रोह की ज्वालाएँ उठने लगी थीं। आयरलैंड के देशभक्तों ने भी उस समय अपनी मातृभूमि को पराधीनता से छुड़ाने के लिये विदेशी सरकार के विरुद्ध बग़ावत का झंडा खड़ा किया था।

हर रोज़ कहीं न कहीं आयरिश प्रजातंत्र सेना के गोरिल्ला सैनिक सरकारी फ़ौज के किसी छोटे दल पर हल्ला बोल देते, और जब तक कोई बड़ी सेना उनका मुक़ाबला करने आवे, तब तक मारकाट करके और सिपाहियों के हथियार छीन कर, पहाड़ों और जङ्गलों में भाग जाते। रास्ते में रेलगाड़ी को खड़ा करके डाक को लूट लेना, रेल की पटरी और तारों को तोड़ देना, सरकारी अदालतों को जला देना, पुलिस की चौकियों को उड़ा देना आदि उनके लिये साधारण बातें थीं।

× × × ×

ऐसे ही समय में एक दिन दोपहर के समय मेलार्न नामक गाँव के स्कूल का मास्टर जेम्स केसी अपने मकान में बैठा हुआ भोजन कर रहा था। भोजन करके ज्योंही उसने अपना सिगरेट का बक्स खोला कि एकाएक थोड़ी दूर पर एक बन्दूक़ चलने की आवाज़ आई। कुछ ही क्षण के बाद बीसियों बन्दूकों की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी।

केसी ने घबड़ा कर कहा—"हे भगवान्, यह कौन सी नई बला आई!"

वह बन्दूकों के चलने का कारण सोच ही रहा था और चाहता था कि बाहर निकल कर पता लगावे, कि इतने में किसी ने बड़े ज़ोर से धक्का मार कर उसके कमरे का दरवाजा खोला। उसका एक पुराना शागिर्द टामी मुलन हाँफता हुआ भीतर घुस आया। उसके हाथ में एक छर्रेदार बन्दूक थी।

टामी ने घबड़ाई हुई आवाज़ से कहा—"इस बन्दूक को कहीं छुपा दो।"

"क्या! क्या!" केसी ने भयभीत होकर लड़खड़ाती हुई जबान से पूछा। पर टामी ने उसकी बात का कुछ जवाब न दिया और वह बन्दूक को उसी कमरे में फेंक, बड़े ज़ोर से बाहर की तरफ़ भाग गया।

केसी गुस्सा होकर बड़बड़ाने लगा :—"बड़ा बदमाश लड़का है। मुझे फँसाने के लिये जबर्दस्ती मेरे घर में बन्दूक फेंक गया।"

वह भौंचक्का होकर बन्दूक की तरफ देखने लगा। इतने में उस घर की मालिकिन मिसेस ब्रैनिन उसके पास आकर चिल्ला कर कहने लगी—"तुम पागल की तरह खड़े क्यों हो? सिपाही लोग आ रहे हैं। अगर वे बन्दूक को इस घर में देख लेंगे तो हम सबको जान से मार डालेंगे।"

केसी के चेहरे से निराशा का भाव प्रकट होने लगा। उसने घबड़ा कर चारों तरफ़ देखा कि बन्दूक कहाँ छिपाई जाय! वह खिड़की की तरफ़ गया और देखा कि सिपाही उसके दरवाजे पर आ गये हैं। रक्षा का कोई उपाय न देखकर उसने बन्दूक को मकान के पीछे वाले बगीचे में फेंक दिया। सौभाग्य से वह पेड़ों के झुरमुट में गिरी और देखने वालों की निगाहों से बिलकुल छुप गई।

बन्दूक को अच्छी तरह छुपा हुआ देखकर केसी का डर कुछ कम हुआ। उसने जल्दी डिब्बे में से एक सिगरेट निकाल कर जलाई और आरामकुर्सी पर लेट कर पीने लगा। इतने में सिपाही उसके कमरे के भीतर पहुँच गये और चिल्ला कर बोले—"हाथ ऊपर करो।" आश्चर्य और डर का भाव

दिखलाते हुये केसी ने हाथ ऊपर उठा दिये। अब उससे सवाल पर सवाल किये जाने लगे। कुछ सिपाही उसे धमकाने और गालियाँ देने लगे। पर वह शांति के साथ उनके तमाम सवालों के जवाब में 'नहीं' कहता गया। 'मैंने किसी को नहीं मारा है, न किसी मारने वाले को छुपाया है।' 'मैंने किसी को बन्दूक़ लेकर अपने घर में घुसते नहीं देखा।' 'मुझे खेद है कि आप मेरी बात पर विश्वास नहीं करते, पर मैं सत्य कहता हूँ कि मैंने किसी को बन्दूक़ लिये नहीं देखा।' 'मेरे घर में कोई बन्दूक़ नहीं है। आप बड़ी खुशी से मेरे मकान की तलाशी ले सकते हैं, मुझे इसमें कोई एतराज नहीं।' इस तरह के जवाब देने के सिवा वह किसी तरह सिपाहियों की पकड़ में न आया।

इस बीच में दूसरे सिपाही घर की तमाम चीज़ों को इधर-उधर फेंक कर खूनी को तलाश कर रहे थे। साथ में वे केसी को बुरी-बुरी गालियाँ देते जाते थे। इतने में उनका कप्तान भीतर आया। उसे देखकर सिपाहियों का बकना कुछ कम हुआ। कप्तान के मुँह से खून निकल रहा था और एक रूमाल घाव के ऊपर बँधा था। उसने भीतर आते ही पूछा—"क्यों, कुछ मिला?"

एक हवलदार ने जवाब दिया—"नहीं कप्तान साहब, अभी कुछ नहीं मिला।" यह कहकर वह ग़ुस्से से केसी की तरफ़ देखने लगा।

कप्तान ने कहा—"सब जगह अच्छी तरह तलाश करो। खास कर पिछवाड़े की तरफ ग़ौर के साथ देखना।"

अब कप्तान केसी पर सवालों की बौछार करने लगा। यद्यपि उसे केसी की बातों पर विश्वास नहीं हुआ तो भी वह ऊपर से भले आदमी की तरह शांति-पूर्वक उसकी बातें सुनता रहा। कुछ देर बाद उसने खुद ही असली बात बतला दी।

कप्तान ने अपने मुँह को दिखला कर कहा—"देखो, उस बदमाश, खूनी लड़के ने किस जगह मुझे घायल किया है। मैं सबसे आगे की मोटरगाड़ी में

ड्राइवर के पास बैठा था। हम लोग एक जगह जरा रुके थे कि एक गली में से एक लड़का भागता हुआ आया और एकदम मेरे ऊपर बन्दूक चलाई। भगवान् ने मेरी रक्षा की और एक ही छुर्रा मेरे मुँह में लगा। पर बेचारे ड्राइवर के शरीर में जगह-जगह छुर्रे घुस गये और वह फ़ौरन मर गया। हमारे सिपाहियों में इस अचानक हमले के कारण जरा हलचल मच गई और इस बीच में वह लड़का इस तरफ़ भाग आया। पर चाहे जो हो हम ज़रूर उसका पता लगा लेंगे और जब एक बार वह पकड़ लिया गया तो मैं उसकी बोटी-बोटी काट डालूंगा। यह मामला गाँव की भलाई की निगाह से बड़ा संगीन है। अब तक इस गाँव की किसी तरह की बदनामी नहीं हुई है, पर अगर इस मौक़े पर यहाँ के रहने वाले उस ख़ूनी लड़के के पकड़ने में मदद न करेंगे तो तमाम गाँव की कमबख्ती आई समझो।"

केसी ने कप्तान की बातें बड़ी सहानुभूति का भाव प्रकट करते हुए सुनीं। कप्तान ने उसे लड़के की हुलिया खूब अच्छी तरह समझाया, पर वह उसे किसी तरह न पहिचान सका! उसने कहा—"इस हुलिये का कोई लड़का इस गाँव में नहीं रहता। कम से कम मैंने तो उसे कभी नहीं देखा। वह किसी दूसरी जगह का रहने वाला होगा। चाहे जो हो, उसका यह काम बड़ा खराब है।"

स्कूल मास्टर की बातें कप्तान को बड़ी बुरी लगीं। पर जब घंटा भर तलाश करने पर भी कुछ न मिला तब वह अपने सिपाहियों के साथ चला गया। चलते समय उसने केसी को खूब धमकाया। इसके बाद उन्होंने गाँव के दूसरे कई घरों की तलाशी ली और पाँच-छै नौजवान लड़कों को पकड़ कर ले गये। पर असली मारने वाला टामी मुलन उनके हाथ न आया। वह उस समय पास की पहाड़ी में छुपा बैठा था।

× × × ×

जब सरकारी सिपाही गाँव से चले गये, तब जेम्स केसी अपने घर में बैठा हुआ टामी मुलन के विषय में विचार करने लगा। अब उसको उस लड़के

पर ज़रा भी ग़ुस्सा न था और उसकी बहादुरी देखकर उसके दिल में आदर का भाव पैदा हो रहा था। इसलिये जब उस मकान की मालिकिन मिसेस बैनिन इस तरह की आफ़त बुलाने के लिये टामी मुलन को कोसने काटने लगी तो केसी ने चिल्ला कर कहा—"उस लड़के के लिये कोई शब्द मुंह से मत निकालो। यह काम उसने अपने देश की भलाई के लिये किया है।"

अब धीरे-धीरे केसी को पुरानी बातें याद आने लगीं, उसका बाबा विदेशी सरकार का कट्टर दुश्मन था, और आयरलैंड के स्वाधीनता के लिये लड़कर उसने अपने प्राण दिये थे। केसी को भी आयरलैंड की स्वाधीनता बहुत प्यारी लगती थी और विदेशियों के अत्याचार देख कर उस का खून उबलता था। सन् १९१६ में जब आयरलैंड के देशभक्तों ने ग़दर का झंडा उठाया तब केसी ने भी अपना नाम राष्ट्रीय वालंटियरों में लिखाया था। उस समय उसे क़वायद-परेड सिखाई गई थी और मोटर गाड़ी चलाना, बम फेंकना, बन्दूक़ चलाना आदि बातों का भी कुछ अभ्यास कराया गया था। पर जब विदेशी सरकार ने आयरलैण्ड को होमरूल देने का वायदा किया और ग़दर दब गया तो वह वालंटियर-सेना धीरे-धीरे बिखर गई। अब जब कि आयरलैंड वालों ने दूसरी बार शासन के विरुद्ध ग़दर आरम्भ किया तो केसी का ख़याल भी उस तरफ़ गया। पर अभी तक विद्रोहियों का ज़ोर राजधानी और दक्षिणी आयरलैंड के ज़िलों में ही था। मेलार्न गाँव के निवासी ग़दर में शामिल नहीं थे और उन की राय में यह कार्य व्यर्थ की ख़ून ख़राबी थी। पर आज टामी मुलन की एक गोली ने गाँव की इस उदासीनता को भंग कर दिया और मेलार्न का नाम बाग़ियों के दल में लिखा दिया। केसी ने देखा कि गाँव के सब लोग टामी मुलन के बंदूक़ चलाने की बात जानते हैं, पर किसी ने सिपाहियों के सामने उस का नाम नहीं लिया। इन सब बातों से उसका ध्यान ग़दर की तरफ़

बहुत आकर्षित हुआ और वह अपने पुराने शार्गिद मुलन के इस काम को श्रद्धा की निगाह से देखने लगा।

जब शाम हो गई और गाँव के सब लोग अपने घरों को चले गये तब केसी अकेले में बैठकर सोचने लगा कि उस बन्दूक का क्या इन्तजाम करना चाहिये। उसे यह बात किसी तरह पसंद नहीं आई कि बन्दूक नष्ट कर दी जाय या तालाब में फेंक दी जाय। यदि वह रात के समय उसे जमीन में गाड़ने की कोशिश करता तो इस बात का डर था कि कोई पड़ोसी देख न ले। अन्त में उसने निश्चय किया कि सवेरे तक बन्दूक उन्हीं पेड़ों के बीच में पड़ी रहने दी जाय और तब जैसा ठीक मालूम हो वैसा किया जाय।

आधी रात के समय केसी की नींद भयंकर कोलाहल के कारण भंग हो गई। वह जल्दी से अपनी पतलून पहिन कर खिड़की के पास आया। वहाँ उसने जो कुछ देखा उससे उसके होश-हवास ग़ायब हो गये। उसने देखा कि उसके घर को सरकारी सिपाहियों ने घेर लिया है और वे हाथों में बिजली के लेम्प लेकर चारों तरफ ढूँढ़ रहे हैं। कुछ लोग इधर-उधर गोलियाँ चला रहे थे और कुछ मकान के दरवाज़े को तोड़ रहे थे। केसी समझ गया कि वे सरकार की खूनी सेना 'ब्लैक एण्ड टैंस' (कृष्ण घातक दल) के आदमी हैं, जिनका काम सर्व-साधारण पर बिना कारण अत्याचार करके विद्रोहियों को डराना है। उसे विश्वास हो गया कि इस समय ये लोग आज की दुर्घटना का बदला लेने आये हैं और मुझे जरूर मार डालेंगे। भय के कारण उसकी सोचने-विचारने की ताक़त चली गई और अपने बचने का कोई उपाय न कर वह पत्थर की मूर्ति की तरह खिड़की के पास ही खड़ा रहा। जब उसने देखा कि सिपाहियों ने पेड़ के झुरमुट में से बन्दूक को निकाल लिया और उसे लेकर चिल्लाते हुये ऊपर चढ़े आ रहे हैं, तब भी वह उस जगह से नहीं हिला। सिपाहियों ने उसे सैकड़ों गालियाँ दीं और लड़के का पता पूछा। पर उसकी समझ में एक भी बात अच्छी तरह न आई। सिपाहियों ने उसे लातों और घूंसों से मारते-मारते

अधमरा कर दिया, पर उसके मुंह से एक आवाज़ भी न निकली। अन्त में एक राक्षस की सी शकल वाले शख्स ने उसकी तरफ़ पिस्तौल तान कर कहा, 'जवाब दे।' पर तब भी वह गूंगे की तरह देखता रहा। सिपाही ने पिस्तौल चलाई और केसी बेहोश हो कर गिर गया।

× × × ×

केसी को नहीं मालूम कि वह कितनी देर बेहोश रहा और उसकी बेहोशी के बाद क्या हुआ। पर जब वह होश में आया तो उसने देखा कि वह मोटर-लारी के एक कोने में पड़ा है। उसके तमाम शरीर में बड़ा दर्द हो रहा था और सिर से खून निकल रहा था। पर उसका दिमाग़ इस समय बड़ा साफ़ था। उसने देखा कि उसके घर में आग लगा दी गई है और सब चीज़ें जल रही हैं। सिपाही अब भी बंदूकें चलाते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। एक सिपाही ने दूर से चिल्ला कर कहा—"वह मरा नहीं है। मेरी गोली उसके सर को छू कर निकली है। रास्ते में हम उससे लड़के का पता पूछने की कोशिश करेंगे और अगर तब भी न बतलायेगा तो फिर उसे ठिकाने लगा देंगे।"

केसी समझ गया कि ये बातें उसी के लिये कही जा रही हैं। पर अब उसे किसी बात का डर नहीं रहा था, और उसके दिल में सिर्फ एक खयाल ज़ोर मार रहा था, कि मरने से पहले इन बदमाश सिपाहियों को एक अच्छा सबक़ सिखाया जाय। वह अपना उद्देश्य पूरा करने की कोई तरकीब सोचने लगा। ढूंढ़ते ढूंढ़ते उसका हाथ गाड़ी के दूसरे कोने में पड़े हुए बमों के ढेर पर पड़ा। अब उसने एक तरकीब सोची जिससे न केवल सिपाहियों को दण्ड ही दिया जाय, बल्कि अगर मुमकिन हो तो भाग कर अपनी जान भी बचा ली जाय।

इस समय सिपाही चलने की तैयारी कर रहे थे। मोटर-लारी का इंजिन ज़ोर से फटफटा रहा था। ड्राइवर आलस्य में बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। दो सिपाही गाड़ी के नज़दीक बाहर बैठे हुए बातचीत कर रहे थे। केसी ने

चुपके से एक बम उठाया और उसकी मूँठ को मजबूती के साथ पकड़ लिया। इसके बाद उसने अचानक बड़े ज़ोर से बम की मूंठ का एक ठोसा ड्राइवर के मुँह पर मारा और बिजली की तरह कूद कर मोटर चलाने की जगह पर बैठ गया। पास में बैठे हुए दोनों सिपाही चौंक कर उठे, पर केसी ने फौरन वह बम उनकी तरफ फेंक दिया और जब तक उसका धड़ाका हुआ तब तक उसने मोटर को पूरी तेज़ी से दौड़ा दिया।

अपने शिकार को इस तरह भागते देखकर दूसरे सिपाही उसकी तरफ़ गोलियों की वर्षा करने लगे। पर मोटर की तेज़ चाल के कारण कोई भी गोली निशाने पर नहीं लगी। करीब दो मील चले जाने के बाद केसी को कराहने की आवाज़ सुनाई दी। उसने देखा कि मोटर का ड्राइवर होश में आ रहा है। वह उसे मारने के लिये कोई चीज़ तलाश करने लगा। पास ही एक बड़ी पिस्तौल रखी हुई थी। केसी पहिले तो ड्राइवर को मार देना चाहा, पर जब उसने उसके टूटे हुये जबड़े को देखा तो उसे दया आ गई और पिस्तौल अपने जेब में रख ली।

पर अभी तक केसी विपत्ति से मुक्त नहीं हुआ था। दूसरी मोटर गाड़ियों में बैठकर अँगरेजी सिपाही उसका पीछा कर रहे थे। उनकी मोटरों की रोशनी दूर से दिखलाई देने लगी। अन्त में उसने एक ढालू जगह की चोटी पर पहुँच कर मोटर को ठहरा दिया। उसकी इच्छा थी कि भागने से पहिले थोड़े बम ले लिये जायँ, पर उनको रखने के लिये वहाँ कोई चीज़ न थी। तब उसने खतरे की परवा न करके दो बम अपनी पतलून की जेबों मैं रख लिये। इसके बाद उसने मोटर-लारी को नीचे की तरफ ढकेल दिया और वह लड़खड़ाती हुई नीचे गिर कर चूर-चूर हो गई।

अब केसी ज़ोर से खेतों में होकर भागने लगा। बीच-बीच में वह किसी जगह छुप जाता था। इस प्रकार भागते-भागते उसने सड़क को कई मील पीछे छोड़ दिया और वह मेलार्न की दक्खिन दिशा वाली पहाड़ियों में पहुँच गया

अब सिपाहियों का डर जाता रहा। वह सिपाहियों की मार-पीट और भागने के कारण बेहद थक गया था, और ज़मीन पर पड़ते ही उसे गहरी नींद आ गई। जब उसकी आँखें खुलीं तो तीन-चार घंटे दिन चढ़ चुका था और चारों तरफ़ तेज़ धूप फैली हुई थी। सबसे पहिले उसकी निगाह टामी मुलन पर पड़ी जो पास ही खड़ा हुआ डरी निगाह से उसे देख रहा था। केसी को जगा हुआ देखकर टामी ने रोती हुई आवाज़ से पूछा—"केसी साहब, आपकी यह कैसी हालत है?"

पर अब केसी साहब बिल्कुल बदल गये थे। उसने हँसते हुए मुलन से कहा—"नहीं, मैं बिलकुल अच्छी तरह हूँ। तुम कहाँ से आ गये!"

मुलन ने जवाब दिया—"आज सुबह जब मैं अपने छुपने की जगह से बाहर निकला तो दूर ही से मैंने आपको पड़े देखा, पर बहुत देर तक डर के मारे आपके पास नहीं आया। आह, केसी साहब, आप तो सर से पैर तक खून में सने हुये हैं।"

केसी ने जवाब दिया—"हाँ, सर में कुछ चोट लग गई थी।" इसके बाद उसने हँसते हुए कहा—"मुलन, अब मैं तुम्हारा गुरु नहीं रहा। अब तुम मुझे साहब न कह कर केवल जेन्स या केसी के नाम से बात किया करो। मैं आयरलैंड की गोरिल्ला सेना में शामिल होना चाहता हूँ। इस समय यहाँ पर तुम्हारे सिवा उसका ऐसा कोई पदाधिकारी नहीं है जो शत्रु का मुक़ाबिला कर रहा हो। इसलिये मेहरबानी करके मेरा नाम अपने सिपाहियों में लिख लो।"

गोरिल्ला-दल का संगठन

मेलार्न गाँव में इन दिनों बड़ी हलचल मची रहती थी। यद्यपि आयरलैण्ड का स्वाधीनता-संग्राम कई महीनों से जारी था, पर मेलार्न वालों ने उसमें कोई हिस्सा नहीं लिया था। वे केवल एक तमाशाई की तरह इस संग्राम की आश्चर्यजनक घटनाओं को सुनते और पढ़ते रहते थे। गाँव के छोटे-से पुस्तकालय में जो दो-चार अखबार आते थे, उनसे पता चलता था कि इस समय आयरलैंड में सचमुच एक युद्ध हो रहा है, जिसमें एक तरफ आयरलैंड का राष्ट्रीय दल है और दूसरी तरफ विदेशी सरकार। समय-समय पर सरकारी सेना-विभाग की तरफ़ से जो सूचनायें निकलती थीं उनसे भी इस बात की सचाई साबित होती थी। लोग सुना करते थे कि डबलिन, कार्क और दूसरे स्थानों में अक्सर छोटी-मोटी लड़ाइयाँ होती रहती हैं जिनमें आयरलैंड वाले ही नहीं मरते वरन् सरकारी सिपाही भी मारे जाते हैं।

लड़ाई की इन खबरों पर गाँव में बड़ी बहस हुआ करती थी। कुछ लोग राष्ट्रीय सेना वालों के काम की इसलिये निन्दा करते थे कि इससे सरकारी सिपाहियों को सर्वसाधारण पर अत्याचार करने का बहाना मिल जाता है और व्यर्थ में बेक़सूर लोगों की जानें जाती हैं। पर दूसरे लोग फ़ौरन जवाब देते कि इस समय देश की इज्जत मरने और मारने की नीति से ही क़ायम रह सकती है और इसलिये राष्ट्रीय सेना वाले ही सच्चे देशभक्त हैं। इस बात को प्रायः सभी मानते थे कि राष्ट्रीय सेना वाले बड़े बहादुर हैं। कभी-कभी मेलार्न के निवासी इस बात पर रंज जाहिर करते थे कि उनका गाँव देश की स्वाधीनता

के युद्ध में कुछ भाग नहीं ले सकता। पर अगर वे कुछ करना भी चाहें तो उनके पास बंदूक और गोली बारूद कहाँ है? इस तरह मेलार्न वालों का युद्ध में भाग ले सकना एक नामुमकिन बात जान पड़ती थी और सरकारी सिपाही बिना किसी डर के उस गाँव में होकर आते-जाते रहते थे।

पर एक ऐसे लड़के ने, जिसको गाँव के बहस करने वाले 'राजनीतिज्ञ' जानते भी न थे, अचानक मेलार्न का नाम युद्ध करने वालों की फेहरिस्त में लिखा दिया। दस घंटे के भीतर ही ऐसी भयंकर घटनायें हो गईं जिनका किसी को ख़याल भी न था। ख़ासकर जब रात के समय सरकारी सेना ने गाँव में घुस कर टामी मुलन की विधवा माता और स्कूल मास्टर के मकान जला दिये और उनके पूजनीय गुरु केसी साहब को मार-पीट कर घायल कर दिया, तो मेलार्न वालों के दिल में बड़ा धक्का लगा।

इस घटना के बाद कई दिन तक फ़ौज के सिपाही गाँव वालों पर ज़ुल्म करते रहे। वे हर एक घर की तलाशी लेते थे। आस-पास के गाँव वालों को पकड़-पकड़ कर बुलाते थे; लोगों से तरह-तरह के सवाल करते, धमकाते और मार-पीट करते थे। फ़ौज वाले मेलार्न के तमाम संदेहजनक लोगों को पकड़ कर ले गये, जिनमें ज्यादातर बानूनी राजनीतिज्ञ थे। सरकारी सेना ने मेलार्न को बुरी तरह से कुचल डाला।

इस अत्याचार ने मेलार्न की रंगत ही बदल दी। शुरू में तो वहाँ के लोग मौत के डर से भेड़ की तरह ग़रीब बन गये। पर जब मौत बिल्कुल सर के ऊपर आ पहुँची तो निराशा ने उनको जंगली जानवर की तरह खूंखार बना दिया। कितने ही नौजवान पहाड़ियों में भाग गये और गोरिल्ला-दल में शामिल हो गये।

जब मुख्य सरकारी सेना गाँव छोड़ कर चली गई और सिर्फ पुलिस-चौकी में थोड़े से सिपाही बाक़ी रह गये, तब गाँव वालों का डर कुछ दूर हुआ और वे आज़ादी के साथ घरों से निकलने लगे। पर अब कोई खुलकर राज-

नीतिक बातों की चरचा नहीं करता था और आपस में बात करते समय भी लोग चौकन्ने रहते थे। पर उनके दिलों में विदेशियों के प्रति घृणा का भाव बड़ा मज़बूत हो गया था, और वे राष्ट्रीय सेना वालों से हार्दिक सहानुभूति रखने लगे थे। अगले इतवार के दिन गिरजे में जब उस ज़िले के बड़े पादरी ने फ़ौज पर हमला करने वालों की निन्दा की और गालियाँ दीं, तो सबके चेहरों पर नाराज़ी का भाव जाहिर हो रहा था। उसके बाद जब गाँव का छोटा पादरी फ़ादर एमन अंतिम प्रार्थना सुनाने को हुआ तो सब उसकी बात बड़े ग़ौर से सुनने लगे। गाँव वालों को मालूम था कि फ़ादर एमन भीतर ही भीतर राष्ट्रीय सेना वालों से मिला हुआ है।

× × ×

पहाड़ियों में भागने वाले नौजवानों की संख्या अब बीस तक पहुँच चुकी थी। सरकारी सेना के सिपाही वहाँ भी उनको ढूँढ़ते फिरते थे। पर वहाँ के रास्तों और छुपने के मुक़ामों का पता न होने के कारण वे पाँच-सात दिन में नाउम्मेद होकर बैठ रहे। इस बीच में इन नौजवानों ने अपना बाक़ायदा संगठन कर एक गोरिल्ला दल बना लिया और नेड फोयले नाम के एक किसान पहलवान को अपना नेता बनाया। फोयले की उम्र करीब ३० साल थी और वह शांत, समझदार तथा लड़ने में ख़ूब बहादुर था। अपनी रक्षा का इन लोगों ने बड़ा पक्का इन्तज़ाम कर रखा था और हर समय दो-तीन आदमी बारी-बारी से पहरा देते रहते थे। खाने की चीज़ों और कपड़ों के लिये एक छुपा हुआ भंडार बनाया गया और दूर से बातचीत करने के लिये कुछ इशारे भी बना लिये गये।

पहाड़ियों में रहने वाले किसान इन नौजवानों की सब तरह से सहायता करते थे। शुरू में वे ही लोग ज़्यादा सहायता करते थे जो सबसे ग़रीब थे। उसके बाद धीरे-धीरे मालदार किसान भी मदद देने लगे। स्त्रियाँ इस काम

में विशेष उत्साह दिखलाती थीं और उन्हीं के ज़ोर देने से मर्द भी मदद करते थे।

इन नौजवानों का सबसे पहिला काम राष्ट्रीय सेना के हेडक्वार्टर से अपना सम्बन्ध जोड़ना था। उन्होंने अपना एक प्रतिनिधि उस जिले के सेनापति के पास भेजा। सेनापति ने मेलार्न के दल को अपनी सेना में शामिल करना मंजूर कर लिया और उनको शिक्षा देने के लिये एक नौजवान अफ़सर भेजा। यह अफ़सर राष्ट्रीय सेना के प्रधान हेडक्वार्टर डबलिन से इस ज़िले की सेना का संगठन करने के लिये भेजा गया था। उसका नाम कप्तान मुनरो था।

कप्तान मुनरो ने बड़ी ख़ुशी से इन अनजान लोगों को सिखलाने का काम अपने हाथ में लिया। मुनरो का पहला हाल किसी को मालूम न था, पर यह सबको दिखलाई पड़ता था कि उसकी नस-नस में जोश और वीरता भरी हुई है। उसके साथ में रहकर थोड़े ही दिनों में मेलार्न वालों को विश्वास हो गया कि उसका जन्म देश-सेवा के लिये ही हुआ है, और सिवा मौत के और कोई ताक़त उसको इस काम से नहीं हटा सकती।

कप्तान मुनरो ने इन नौजवानों को समझाया कि "डबलिन में रहने वाले 'बड़े नेता' इस ज़िले के संगठन से संतुष्ट नहीं हैं। वे चाहते हैं कि दूसरे जिलों की तरह यहाँ वाले भी कोई 'बड़ा काम' करके दिखलायें। आप लोगों ने काम को अच्छे ढङ्ग से उठाया है, पर जब तक आप का सङ्गठन मज़बूत न होगा और आपके पास काफी बन्दूकें न होंगी तब तक आप ज्यादा आगे नहीं बढ़ सकते। इस उम्मेद को छोड़ दो कि हेडक्वार्टर से तुमको अभी बन्दूकें मिल जायँगी। वहाँ से अभी उन्हीं ज़िलों की माँग पूरी नहीं हो सकती जहाँ युद्ध ख़ूब ज़ोरों से चल रहा है। इसलिये तुमको ख़ुद ही बन्दूकें इकट्ठी करने की कोशिश करनी चाहिये। आस-पास के गाँवों में तलाश करो और जिस किसी के घर में बन्दूक हो, जाकर उठा लाओ। यह भी याद रखो कि हमारे दुश्मन के

पास ढेरों बन्दूकें हैं, तुमको चाहिये कि जिस तरह हो सके उससे बन्दूकें छीन लो।"

अब सङ्गठन का काम शुरू हुआ। इसमें सामाजिक श्रेष्ठता और विद्या का ख्याल बिल्कुल छोड़ दिया गया और जो आदमी जिस काम के लायक़ ठीक जान पड़ा उसे वही काम दिया गया। गाँवों में भी कुछ ऐसे विश्वासपात्र मनुष्य नियत किये गये जो तमाम बातों की ख़बर पहाड़ियों में पहुँचाते रहें और वालंटियरों की हर तरह से सहायता करें।

पर एक सवाल बार-बार सामने आता था कि बन्दूकें कहाँ से आवें। एक दिन कतान मुनरो ने बातें करते हुये कहा—"बन्दूकों की मुश्किल हर जगह है। जब मैं 'लाफ' नाम के गाँव में सङ्गठन करने गया तो देखा कि उन लोगों के पास एक भी बन्दूक नहीं है। वे लोग पहाड़ी थे और ऐसे लम्बे-चौड़े और ज़बर्दस्त थे कि उनका एक मामूली आदमी मुझे अपने हाथों से पीस सकता था। उनका नेता उस जिले का एक मशहूर और प्रभावशाली शख्स था, जो सच्चा देशभक्त था। पर मैंने देखा कि उसमें उत्साह की कमी है और वह इस काम को आगे नहीं बढ़ा सकता। उस ज़िले के सेनापति की निगाह में एक-दूसरा आदमी था जो इस काम को अच्छी तरह से कर सकता था। पर उसे डर था कि वर्तमान नेता के हटा देने से शायद लोग नाराज़ हो जायँ। इसलिये इस काम का ज़िम्मा मैंने अपने ऊपर लिया और उन लोगों से कहा कि मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जो तुमको बन्दूकें दिला सकता है। इस पर वे राजी हो गये और पुराना नेता ख़ुशी से, कम से कम ऊपर से दिखाने के लिये, अपनी जगह से हट गया। नया आदमी हर तरह से योग्य साबित हुआ और इस समय 'लाफ' का गोरिल्ला दल देश भर में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध और हथियारबन्द है।"

इस तरह के क़िस्सों से ऐसा उत्साह पैदा होता था कि जैसा बड़े-बड़े जोशीले व्याख्यानों से भी नहीं हो सकता। मेलार्न वाले सोचते थे कि हमारी

हालत भी उन पहाड़ी लोगों से मिलती हुई है। अब वे अपनी लापरवाही पर बहुत पछताते थे कि हमको पहिले से खयाल न आया और गैने अपने महाँ की बन्दूकों के लेने की कोशिश न की, जिनको बाद में सरकारी सेना वाले ले गये। तो भी ये लोग बिलकुल नाउम्मेद नहीं हुये थे और हर एक गोरिल्ला का विश्वास था कि अगर मौका लगे तो जो काम उन पहाड़ी आदमियों ने किया वह हम भी करके दिखला सकते हैं।

जब कप्तान मुनरो मेलार्न के गोरिल्ला दल का सङ्गठन करके दूसरी जगह को रवाना हुआ तो उसके दिल में इस बात का विश्वास था कि यहाँ वाले अपनी पूरी ताक़त से काम करेंगे और कुछ न कुछ कर दिखलावेंगे। खासकर कप्तान फोयले के ऊपर उसे बड़ा भरोसा था और वह जानता था कि जब इन जवानों का नया जोश ठंडा पड़ जायगा और भयकर कठिनाइयों तथा भय का सामना करना पड़ेगा तो फ़ोयले ही उनके साहस को क़ायम रख सकेगा।

× × × ×

मेलार्न में एक नया जमाना शुरू हुआ। अब लोग बहस-मुबाहिसे में वक्त खराब नहीं करते थे। जो लोग लड़ने भिड़ने के नाकाबिल थे वे घरों में रह कर ही हर तरह से गोरिल्ला-दल की सहायता करते थे। उधर गोरिल्लाओं ने भी अपना काम शुरू कर किया। रास्ते के बीच में खाई खोद कर सरकारी फ़ौजों को रोक देना, सड़कों पर पेड़ काट कर गिरा देना, तारों को काट डालना और तार के खम्भों को तोड़ देना वगैरह उनके रोज़ के काम थे। इन कामों के सिवा थोड़े से मामूली औजारों के और किसी चीज़ की ज़रूरत न थी।

वे लोग डाक को लूट लेते थे और हथियारों के लिए राजभक्त लोगों के मकानों पर हमला करते थे। एक दिन उन्होंने मेलार्न की पुलिस-चौकी पर अचानक हमला किया और एक बम भीतर फेंक कर चले आये। यद्यपि इस बम से ज्यादा नुकसान नहीं हुआ, पर लोगों में इससे बड़ा जोश फैल गया।

और इस जिले के अखबार में यह खबर बड़े-बड़े हैडिंग दे कर प्रकाशित की गई।

फ़ोयले का इरादा था कि गश्त लगाने वाले सरकारी सिपाहियों पर छापा मार कर उनकी बंदूकें छीनी जायँ। क्योंकि बिना फ़ौजी बन्दूकों के वे दुश्मन का मुकाबला नहीं कर सकते थे। इस काम के लिये चुने हुये गोरिल्लाओं का एक दल तैयार किया गया। केसी का नाम भी इन लोगों में था और उसने इस काम को बड़ी ख़ुशी से मंजूर किया। उसको डर था कि शायद ज्यादा उम्र होने के कारण या पढ़ा-लिखा आदमी समझ कर उसको इस दल में न रखा जायगा। अगर ऐसा होता तो केसी को बड़ा रंज होता। क्योंकि उस दल में कितने ही लोग ऐसे थे जिनको उसने पढ़ाया था और उनके सामने वह हरगिज़ पीछे नहीं रहना चाहता था।

गश्त लगाने वाले सिपाहियों की तलाश में इन लोगों को घंटों तक छुपे बैठे रहना पड़ता था। एक दल के बाद दूसरा दल उसकी जगह पर बैठता। इस तरह खाली बैठे-बैठे लोग बहुत थक जाते थे, तो भी कोई और उपाय न था। कभी-कभी वे लोग पीछे से सरकारी सेना वालों पर गोलियाँ चला देते थे, पर उसके बाद फ़ौरन ही पहाड़ियों में भाग जाते थे। उसके पास न तो इतना सामान था और न वे इतने होशियार थे कि सरकारी फ़ौज वालों के सामने ठहर कर लड़ सकें। तो भी जब सरकारी सिपाहियों की तादाद कम होती थी तो वे उनको दबा लेते थे। एक दिन उन्होंने पुलिस वालों से दो बंदूकें छीन लीं। पर लौटते समय उनको बड़ी कठिनाई पड़ी और उनके दो आदमी सख्त घायल हो गये। इनमें से एक गोरिल्ला जिसका नाम टाम गैनन था, दो-तीन घंटे बाद मर गया! तमाम लोगों को अपने एक साथी के मरने से बड़ा रंज हुआ क्योंकि इस तरह का यह पहिला ही मौक़ा था। रात के समय उन्होंने टाम गैनन के शव को क़ब्र खोद कर गाड़ दिया। सब लोग शांत तथा गम्भीर भाव से क़ब्र के चारों तरफ खड़े थे। ऊपर से

थोड़ी-थोड़ी बूंदें भी गिर रही थीं। उस समय फादर ऐमन ने अंतिम प्रार्थना पढ़ी। उसकी आवाज़ से स्वाभिमान और दुःख दोनों तरह के भाव प्रकट हो रहे थे।

नेड गैगन, मरने वाले गोरिल्ला का भाई था। उसने क़ब्र के ऊपर एक शब्द भी मुंह से नहीं निकाला। पर जब वे लौट कर अपने पड़ाव में पहुँचे और नेड गैगन ने देखा कि सब लोग सहानुभूति के साथ उसकी तरफ़ देख रहे हैं तो उसने कहा—भाइयो, हमें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि अभी हम इतने आदमी दुश्मन का मुकाबला करने को मौजूद हैं। टाम देश के लिये मरा है और उसके कारण हमको बंदूकें भी मिली हैं इसलिये रंज करने की कोई ज़रूरत नहीं।"

कप्तान फोयले ने गम्भीरता से सिर हिला कर कहा—"हाँ, बंदूकें तो मिलने लगी हैं।"

सरकारी सेना पर छापा

अब धीरे-धीरे मेलार्न गाँव का महत्व बढ़ने लगा। डबलिन के दैनिक पत्रों में भी कभी-कभी मेलार्न का नाम छप जाता था। इस बीच में वहाँ पर सरकारी चार सिपाही मारे जा चुके थे; बहुत से घायल हुये थे; फ़ौज और पुलिस वालों के हथियार छीने गये थे; सड़कें तथा तार बार-बार काट डाले जाते थे। यद्यपि समस्त देश की निगाह से ये बातें साधारण थीं; पर ज़िले के लोगों और वहाँ के सेनापति को इन पर काफ़ी गर्व था। उस ज़िले के सरकारी सेनापति को अपनी रिपोर्ट में मेलार्न का ज़िक्र हमेशा करना

पड़ता था और छोटे अफ़सर भी इस मामले को बेचैनी और ज़िम्मेदारी की निगाह से देखते थे।

अब पहाड़ियों में फ़ोयले के गोरिल्लाओं की तादाद ४२ तक पहुँच गई थी। इस लिये उनका संगठन फिर से किया जाना जरूरी था। कई नये अफ़सर नियत किये गये और चौकीदारी का इन्तज़ाम पहिले से ज्यादा मज़बूत किया गया। पाँच आदमी घायल और बीमार हो गये थे, उनका इन्तज़ाम करने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। यह देख कर फादर एमन और दूसरे गाँव वालों ने उनका प्रबन्ध अपने ऊपर लेकर लड़ने वालों का बोझ हलका कर दिया।

टाम गैनन की मृत्यु से वालंटियरों का ग़ुस्सा बहुत बढ़ गया था और सब की राय थी कि मेलार्न की पुलिस-चौकी को बर्बाद करके इसका बदला लेना चाहिये। इस समय उनके पास छः फौजी बन्दूकें और पाँच पिस्तौलें थीं। उनका ख़याल था कि इतने हथियारों से हम दुश्मन को अच्छी तरह नीचा दिखा सकते हैं। कप्तान फोयले भी हमला करने के विरुद्ध नहीं था, पर उसकी राय में अभी हथियारों की कमी थी। उसका कहना था कि जब तक हमारे पास काफ़ी सामान न हो तब तक फ़िजूल में अपनी गोली बारूद को ख़र्च करना मुनासिब नहीं पर उसके बहुत से साथियों का आग्रह इतना बढ़ा हुआ था कि बजाय उनको दबा कर रखने के, उसने यही अच्छा समझा कि उनकी बात को थोड़ा बहुत मान लिया जाय। इसलिये उसने लोगों को इस बात पर राज़ी किया कि चौकी पर पास जाकर हमला न किया जाय, बल्कि दूर से गोलियाँ चला कर सरकारी सेना वालों को धोखे में डाला जाय।

× × × ×

वह रात मेलार्न के रहने वालों के लिये बड़े भय की थी। रात भर कोई आदमी न सो सका। ज्योंही राष्ट्रीय सेना वालों की तीन-चार टोलियों ने छुपे

मुकामों से कुछ गोलियाँ चलाईं कि तमाम सरकारी सेना में खलबली मच गई। घंटे भर के भीतर ही पुलनमोर और बैलून की छावनियों से सरकारी फ़ौज के सिपाही आ पहुँचे। सिपाहियों के दल के दल तमाम रात सड़कों पर घूमते रहे और जहाँ ज़रा भी शक होता था वे बन्दूकों और मशीनगनों से गोलियों की वर्षा करने लगते थे। एक जगह सिपाहियों की गड़बड़ के सबब से एक सोता हुआ बकरा भड़क गया। बकरा बड़ा भारी था, उसने ग़ुस्से में मरकर एक मोटे सारजंट की तोंद में ऐसे ज़ोर से टक्कर मारी कि सारजंट साहब वहीं अंटाचित होगये। सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को रोका और बकरे को संगीनों से मार डाला। उस रात को सिवा उस 'देशभक्त बकरे' के और कोई मरा-गिरा नहीं, पर सुबह के वक्त पुलिस की चौकी और उसके आस-पास के मकानों पर गोलियों के निशानों और टूटी हुई खिड़कियों को देखने से ऐसा मालूम होता था कि यहाँ पर कोई बड़ी भारी लड़ाई हुई है।

राष्ट्रीय सेना वाले अपने उद्देश्य को सफल होता देखकर बहुत खुश हुये। उन्होंने दुश्मन की एक बड़ी सेना को रात भर परेशान रखा और उसका सैकड़ों मन गोली बारूद खर्च करा दिया। सरकारी सेना विभाग ने इस घटना का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ा कर अखबारों में प्रकाशित कराया। उसके ऊपर मोटे मोटे अक्षरों में लिखा था 'मेलार्न की पुलिस चौकी पर भयंकर आक्रमण।' उस सूचना में यह भी लिखा था कि–"हमारी (सरकारी सिपाहियों की) गोलियों से कितने ही बाग़ी गिरते दिखलाई दिये। हमारा कुछ नुक़सान नहीं हुआ।" इन बातों को पढ़ कर सब वालंटियर खूब हँसते रहे।

× × × ×

उधर फोयले गोली बारूद की कमी के कारण बड़े सोच में पड़ा हुआ था। बहुत कुछ विचार करने के बाद उसने तय किया कि सरकारी सेना पर एक बार

ऐसा हमला करना चाहिये कि जिससे दुश्मन को गहरी चोट लगे और साथ ही हमको कुछ मसाला भी मिले। उसने अच्छी तरह देख लिया था कि गोरिल्लाओं का रहन-सहन सब तरह से ठीक है और वे क़वायद परेड बड़े शौक़ से करते हैं। जैसे जैसे मुसीबतें झेलनी पड़ती थीं, उनकी मजबूती बढ़ रही थी। यह बात ठीक थी कि उन लोगों को लड़ाई का अभ्यास न था, पर उनमें जोश इतना ज्यादा था और वे लड़ने के लिये ऐसे उतावले हो रहे थे कि अभ्यास की कमी कोई बड़ी बात न थी।

धीरे-धीरे हमले की तैयारी की जाने लगी। कुछ ऐसे मुक़ाम तलाश किये गये जहाँ से दुश्मन पर छापा मारकर फ़ौरन पहाड़ियों के भीतर छुपा जा सके। तैयारी का काम बड़ी छुपी तौर पर किया जाता था और किसी बाहरी आदमी को उसकी जरा भी खबर न थी। जो लोग घरों में रहकर गोरिल्लाओं की मदद करते थे और जिनसे समय पड़ने पर लड़ने के काम में मदद ली जाती थी उनको भी बहुत थोड़ा हाल बतलाया गया। क्योंकि इस बात का डर था कि अगर तैयारी की बात बहुत लोगों को मालूम हो जायगी तो कोई न कोई बातूनी आदमी उसे चारों तरफ़ फैला देगा।

यह समझना ग़लत है कि इस गोरिल्ला दल के संगठन में कोई दोष न था। यह बात भी न थी कि तमाम आदमियों में लड़ने का एक सा जोश था। एक आदमी से दूसरे आदमी के स्वभाव में बड़ा अन्तर था और आज्ञा-पालन का भाव भी अभी बहुत मज़बूत नहीं हुआ था। कभी-कभी आपस में चढ़ा ऊपरी का भाव भी देखने आता था। सब लोग बहस मुबाहिसे में खुल कर भाग लेते थे और आपस में कोई बात छुपाई नहीं जाती थी। हर एक आदमी के गुण और दोषों की खरी आलोचना की जाती थी। कप्तान फ़ोयले सब लोगों की सलाह सुनता था पर आखिरी फैसला करने का अख्तियार उसने अपने ही हाथ में रखा था। उसे भरोसा था कि समय पड़ने पर सब लोग उसके हुक्म को बिना उज्र के मान लेंगे।

हमला करने के लिये राष्ट्रीय सेनावालों की तरकीब यह थी कि बारह या चौदह आदमियों का एक दल एक छुपे हुये मुकाम पर हमेशा बैठा रहता था। बाकी लोग थोड़ी दूर पर पहाड़ियों के बीच में छुपे रहते थे। कुछ घंटे के बाद एक नया दल भेजा जाता था, जो पहले दल को आराम के लिये भेज कर उसी मुकाम पर छुप कर बैठ जाता था। हर एक आदमी के जिम्मे अलग-अलग काम बटा हुआ था। एक ऊँची और छुपी हुई जगह पर एक आदमी बैठा हुआ दूरबीन से चारों तरफ़ शत्रुओं की सेना के आने-जाने को देखता रहता था। यह दूरबीन भी सरकारी सिपाहियों से छीनी गई थी।

पर अब सरकारी सेना पहाड़ियों की तरफ़ आने की हिम्मत बहुत कम करती थी। उसका ज़ोर मैदान में बसे हुये गाँवों में ही था और वहीं पर सरकारी सिपाही लोगों को पकड़ते-धकड़ते रहते थे इसके सिवा वे गाँव वालों को बेगार में पकड़ कर टूटी हुई सड़कों और तारों की मरम्मत भी कराते थे। आज कल वे लोग अक्सर बड़ी तादाद में ही बाहर निकलते थे, कभी-कभी कुछ लोग मोटर गाड़ी में बैठकर भी चले जाते थे।

फ़ोयले का इरादा था कि इस तरह की किसी अकेली मोटर पर हमला किया जाय। पर ऐसा मौका कितने ही दिनों तक हाथ न लगा। गोरिल्ला लोग घंटों तक छुपे पड़े रहते थे और उनके कपड़े ओस से तर हो जाते थे। उनके सामने से दुश्मन की उना के दल निकल जाते थे, पर उनमें से ऐसा कोई न होता था जिसे वे लोग हमला करके जीत सकते। फोयले चाहता था कि हमारा पहला हमला ब्यर्थ न जाय। अगर इस हमले में कामयाबी होती और कुछ सामान हाथ लगता तो इससे वालटियरों की हिम्मत बढ़ जाती और वे दूसरी बार उससे बड़ा हमला कर सकते।

जैसे-जैसे दिन गुजर रहे थे नाउम्मेदी बढ़ती जाती थी। गोरिल्ला भी कुछ नाराज होने लगे थे। नेड गेनन जो एक पारटी का मुखिया था, बार-बार गुस्से के साथ कहा करता कि "कप्तान, इस तरह पड़े रहना तो अच्छा नहीं

लगता। कभी-कभी इन बदमाश सिपाहियों पर दोचार गोली चलादी जाया करे तो जरा खून तो गर्म रहे।"

पर कप्तान अपने इरादे पर जमा हुआ था। अन्त में एक दिन उसके मन के माफिक मौका आया। मेलार्न से आने वाली सड़क पहाड़ी के पास आकर दो हिस्सों में बँट जाती थी। एक रास्ता पुलनमोर के कस्बे को जाता था और दूसरा बैलून के कस्बे को। जहाँ पर ये दोनों सड़कें फटती थीं वहीं पर पहाड़ी के ऊपर एक पुराने किले का खण्डहर था। इस जगह से पास ही एक घना जगल था जिसमें छुपने का बड़ा सुभीता था।

उस दिन क़रीब चार बजे शाम को राष्ट्रीय सेना के पहरेवाले ने दूरबीन से देखा कि एक मोटर लारी मेलार्न की तरफ चली आ रही है। उस समय वहाँ पर सिर्फ दस वालंटियर मौजूद थे। फ़ौरन सब लोगों को अलग-अलग हिस्सों में बांट दिया गया। एक आदमी लौटने के रास्ते की रखवाली करने को नियत किया गया, तीन आदमी किले के ऊपर चढ़ गये और बाकी आदमी एक लम्बी कतार बनाकर पेड़ों के पीछे छुप गये। कप्तान फोयले के हाथ में एक बम का गोला था और वह उसे चला कर लड़ाई का इशारा देने वाला था।

इतने में मोटर लारी पास आ पहुँची। वह फौजी ढंग की गाड़ी थी और उसमें एक मशीनगन लगी हुई थी। जब गाड़ी बिलकुल सामने आगई तो फोयले ने उसमें बम फेंक कर मारा, और उसी समय तमाम वालंटियर गोलियों की वर्षा करने लगे। सरकारी सिपाही फौरन मोटर की दीवार की आड़ में छुप कर मशीनगन चलाने लगे और मोटर की चाल खूब तेज़ होगई। फोयले ने समझा कि यह मौका हाथ से गया और उसे इतना दुःख हुआ कि वह जहां का तहां पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा रह गया। इतने में उसने देखा कि मोटर सड़क को छोड़ कर एक किनारे की तरफ जा रही है। दूसरे ही क्षण वह बड़े जोर से एक पेड़ के साथ टकराई और एक तरफ गिर पड़ी। गोरिल्ला कुछ

देर तक ठहरे रहे, पर जब उन्होंने देखा कि मोटर लारी में से कोई बाहर नहीं आता तो वे उसके पास पहुँचे।

वहां जाकर उन्होने बड़ा भयंकर दृश्य देखा। मोटर हाँकने वाला बिलकुल मुर्दा था और उसके सिर में गोली लगने से खून बह रहा था। चार आदमी मरे हुये जान पड़ते थे और तीन कराह रहे थे। यद्यपि कई महीने से लड़ते-भिड़ते रहने के कारण गोरिल्लाओं के दिल कुछ सख्त होगये थे, पर इन घायलों को देखकर उनको बड़ी दया आई। इतने में फोयले ने चिल्लाकर हुकम दिया:—

"जल्दी से बन्दूकों और दूसरी चीज़ों को ले जाओ। गैनन, तुम्हारे जिम्मे मशीनगन को लेजाने का काम है। जरा भी देर मत लगाओ, आध घन्टे के भीतर सरकारी सेना आ पहुँचेगी।"

दस मिनट के भीतर वे लोग तमाम चीजों को उठा कर जंगल के भीतर ले गये। बीस मिनट के बाद सरकारी सेना की दूसरी मोटरें घटनास्थल पर आगईं। सिपाहियों ने उस मुकाम को चारों तरफ से घेर लिया और वे जंगल के भीतर घुसकर गोरिल्लाओं को पकड़ने की कोशिश करने लगे। थोड़ी देर में अँधेरा हो गया और राष्ट्रीय सेना वाले अपने दूसरे साथियों से जा मिले। फोयले और उसके साथियों को उस मुकाम की एक-एक इंच जमीन का पता था और वे ऐसी जगह छुपकर बैठ गये जहाँ उनको कोई नहीं देख सकता था। उन्होंने लूटी हुई बन्दूकों और मशीनगन को वहीं पर छुपा दिया। सरकारी सेना बन्दूकें और मशीनगन चलाती हुई आ रही थी पर वे चुपचाप बैठे रहे। थोड़ी देर बाद जब सिपाही बिलकुल पास आ गये तो गोरिल्ला कई हिस्सों में बँट कर दूर दूर चले गये और बारी-बारी से गोलियाँ चला कर और सिपाहियों को धोखा देकर इधर उधर दौड़ाने लगे। अंत में उन्होंने पीछे की तरफ़ से सरकारी सेना पर हमला किया और साफ बच कर निकल गये।

रात के दो बजे के बाद जब सरकारी सेना वालों ने देखा कि तमाम पक्षी जाल में से उड़ गये तो सब लोग रंजीदा होकर लौट गये। उनके बहुत से आदमी घायल हुये थे और कुछ मरे भी थे। राष्ट्रीय सेना का केवल एक आदमी गिरने से पैर में चोट लग कर घायल हुआ था।

मशीनगन को पाकर राष्ट्रीय सेना वालों को बड़ी खुशी हुई। उस जिले के सेनापति ने दो-तीन दिन में ही एक खास अफ़सर उसकी जाँच करने और उसे काम के लायक बनाने को भेजा वह अफ़सर भी इस काम को पाकर बड़ा खुश हुआ। क्योंकि अब तक उस जिले की राष्ट्रीय सेना के पास एक भी मशीनगन नहीं थी और उस अफ़सर को इस बात की खुशी थी कि अंत में उसको भी एक काम मिला।

गोरिल्ला-दल का घेरा

सरकारी सेना पर छापा मारने की घटना सरकारी सेंसर के फंदे से निकल कर आयरलैंड के तमाम अखबारों में प्रकाशित हो गई। फ़ौजी अफ़सरों ने अपनी रिपोर्ट में दो सिपाहियों का मरना और दो का घायल होना मंजूर किया था। पर मेलार्न के आस-पास रहने वाले इस रिपोर्ट को बिलकुल ग़लत बतलाते थे और कहते थे कि उन्होंने अपनी आँखो से तीन मोटर लारियां मुर्दों से भरी देखी थीं। पर असल में सरकारी रिपोर्ट और लोगों में फैली हुई खबर दोनों असली बात से बहुत घटी-बढ़ी हुई थीं।

सब लोगों में इस बात का डर फैला हुआ था कि इस घटना के बदले में सरकारी सेना वाले मेलार्न निवासियों को बहुत तंग करेंगे। मज़ा यह था

कि यह डर घर में ठहरे हुये लोगों को उतना ज्यादा न था जितना कि पहाड़ियों में छुपे हुये लोगों को था। जब किसी किसान का घर आग लगा कर जला दिया जाता तो वह चुपचाप खड़ा हुआ तमाशा देखता रहता था, और विदेशियों के लिये उसका गुस्सा और घृणा दुगुनी हो जाती थी। सरकारी सिपाहियों ने हमले के मुक़ाम के पास रहने वाली कैफरी नामक बुढ़िया का झोंपड़ा जला दिया। उस बहादुर स्त्री ने इसकी कुछ परवा न की और फ़ौजी अफसरों को उनके मुंह पर ही ऐसी खरी-खोटी सुनाई जो उनको सदा याद रहा होगा। फ़ौज वाले मेलार्न के डिनी मोरेन नामक दर्जी को पकड़ ले गये और फ़ौजी अदालत में मुकदमे का तमाशा करके उसे गोली से मारने की सज़ा दे दी। यद्यपि मोरेन का राष्ट्रीय सेना वालों से कुछ ताल्लुक़ न था, तो भी सरकारी कर्मचारियों की निन्दा करने में उसकी जबान सदा कैंची की तरह चलती रहती थी। मौत की सज़ा सुन कर वह घृणा और बेपरवाही के साथ हँसने लगा। गोली मारने वाले जब उसकी आँखों पर पट्टी बांधने लगे तो उसने इससे इनकार कर दिया और वह इस तरह हंसते हुये मरा जैसे कोई बड़ा मज़ाक हो रहा हो। पहाड़ियों में रहने वाले गोरिल्लाओं की जीत की ख़ुशी इन जुल्मों की खबरों से कुछ कम पड़ गई। उनको सरकारी सिपाहियों के ऊपर बड़ा ग़ुस्सा आता था और जब कभी मौक़ा लगता था वे उन पर गोलियाँ चला कर बदला लेते थे।

जो मशीनगन उन लोगों के हाथ लगी थी उसको कुछ गोरिल्ला के साथ जिले के हैडक्वार्टर में भेजा गया। थोड़े ही दिन में वे लोग उसको काम में लाना सीख आये और उन्हीं दिनों में एक सरकारी सेना से भरी हुई रेलगाड़ी पर उससे ख़ूब गोला बारी की गई।

× × × ×

इस समय कसान फोयले को मालूम हुआ कि सरकारी अफसर किसी बड़े हमले की तैयारी कर रहे हैं। यह खबर उसको अपने ही आदमियों से नहीं मिली

थी, वरन् उस जिले के राष्ट्रीय सेनापति ने भी समाचार भेजा कि आस-पास के मुक़ामों में सरकारी सेना बहुत बड़ी तादाद में इकट्ठी हो रही है। शुरू में तो यह एक मामूली बात जान पड़ी, पर धीरे-धीरे खतरा बढ़ता गया। मालूम हुआ कि सरकारी सेना पहाड़ियों के उस तमाम सिलसिले को चारों तरफ से घेरती चली आती है। वह घेरा तीस मील से भी ज्यादा फैला हुआ था, और इसके भीतर मेलार्न वालों के सिवा गोरिल्ला सेना के कई दल थे। इस तीस मील के बीच में जितने कस्बे और गाँव थे उन सब में सरकारी सेना के ज़बर्दस्त अड्डे क़ायम किये गये। कुछ भीतर की तरफ़ चलकर फ़ौजी चौकियों का एक घेरा बनाया गया, जिससे पहाड़ियों में से बाहर निकलने के तमाम रास्ते बन्द हो गये। इन चौकियों से आगे बढ़कर दूसरी नई चौकियाँ क़ायम की जाती थीं। इस तरह धीरे-धीरे सेना का एक ऐसा जाल बनाया गया जिसके बीच से कोई बचकर न निकल सके।

शुरू में ही गाँव और क़स्बों के रहने वाले तमाम मर्द पकड़ लिये गये। उनमें से कुछ तो तलाशी और जाँच करने के बाद छोड़ दिये गये और बहुत से सरकारी सेना की छावनी में भेज दिये गये, जहाँ उनका फ़ैसला बाद में किया जाने वाला था।

घेरे की ख़बर मिलते ही गोरिल्ला सेना वालों ने अपने उन तमाम साथियों को, जो बीमारी या कमज़ोरी के कारण ज्यादा तकलीफ़ नहीं उठा सकते थे, रात के समय गांवों में भेज दिया। घायल आदमियों को ऐसे मुक़ामों में भेजा गया जहाँ वे हर तरह से सुरक्षित रह सकें। अब पहाड़ियों में सिर्फ चुने हुए और पक्के आदमी रह गये, जो दुश्मन का मुक़ाबला करने को हर तरह से तैयार थे।

इसके बाद जब घेरा आगे बढ़ने लगा, पर अधूरी हालत में और छितरा हुआ था, उस समय गोरिल्ला सेना के कई दल उसको तोड़कर बाहर निकल गये। सरकारी सेना ने उनका पीछा किया, पर उसका मुक़ाबला करने को

गोरिल्लाओं का एक दल रास्ते में छुपा बैठा था और उसने ऐसे ज़ोर से हमला किया कि सरकारी सिपाहियों को भागना ही पड़ा।

पर मेलार्न वालों की हालत कुछ दूसरी तरह की थी। उनके दक्खिन और उत्तर दोनों तरफ़ के रास्ते इस तरह रोक दिये गये थे कि बाहर निकल सकना बिलकुल नामुमकिन था। चारों तरफ़ सरकारी फ़ौज की चौकियाँ क़ायम थीं और हर रोज़ नई-नई चौकियाँ बनाई जाती थीं। हर जगह मशीनगनें लगी हुई थीं और ज़रा भी शक होने पर गोलियाँ चलने लगती थीं। रात के समय चारों तरफ सर्चलाइट की रोशनी फिरती रहती थी जिसे देखकर मज़बूत से मज़बूत आदमी का कलेजा भी दहल जाता था।

दिन पर दिन सरकारी सेना का घेरा छोटा होता जाता था और पास आ रहा था। गोरिल्ला दल वालों ने अपने आदमियों को कई जगहों में बाँट दिया और उनको बार-बार अपना मुक़ाम बदलना पड़ता था। जगह-जगह पर दुश्मन के घेरे की जाँच की जाती थी कि कहाँ पर उसे तोड़ा जा सकता है। हर रोज गोरिल्ला दल की कमेटी होती थी, जिसमें घेरे से बाहर जाने की तरकीब सोची जाती थी। इसी बीच में ज़िले के सेनापति का भेजा हुआ एक साहसी गोरिल्ला सरकारी सेना के घेरे में होकर भीतर घुस आया। सेनापति ने मेलार्न वालों को घेरा तोड़ने की एक तरकीब बतलाई थी और आग्रहपूर्वक कहलाया था कि जहाँ तक हो सके जल्दी सब लोग आकर उसकी सेना में शामिल हों।

सेनापति का संदेशा पाने से मेलार्न वालों को बहुत संतोष हुआ। वे खुद भी इस बात का इरादा कर चुके थे कि अब इस हालत में पड़े रहना ठीक नहीं। एक बार घेरे को तोड़ कर बाहर निकलने की कोशिश की जाय, फिर चाहे उसका नतीजा अच्छा हो या बुरा। उन्होंने देखा कि जैसे-जैसे दुश्मन का भीतरी घेरा मजबूत हो रहा है और नजदीक आता जाता है; बाहरी घेरा कमजोर पड़ता जाता है और उसकी चौकियाँ एक दूसरे से दूर होती जाती हैं। वालंटियरों का विश्वास था कि अगर एक बार हम भीतरी घेरे को तोड़ कर

निकल गये तो बाहरी घेरे से बचाना ज्यादा मुशकिल नहीं है। इस समय सरकारी सिपाही पहाड़ियों पर चलते-चलते थक भी गये थे और उनमें वह लापरवाही का भाव भी पैदा हो गया था जो एक बड़ी सेना को किसी छोटे दल-के लिये हुआ करता है। इन सब बातों पर विचार करके उन्होंने अगली रात को बाहर निकलने का पक्का इरादा किया और अपना तमाम ढंग और इंतजाम सेनापति के गोरिल्ला को समझा कर उसे वापस भेज दिया।

राष्ट्रीय सेना वालों ने बाहर निकलने का जो रास्ता सोचा था वह एक जंगली दलदल के बीच में होकर जाता था। शुरू में सरकारी सेना ने इस दल दल की तरफ काफ़ी इंतजाम किया था। पर जब सिपाही लोग घुटने-घुटने तक कीचड़ में फँस गये और कई मुक़ामों पर पानी से भरे गड्ढों में गिर गये, तो उन्होंने समझ लिया कि कुछ मुक़ामों को छोड़ कर इस दलदल में होकर बाहर जा सकना नामुमकिन है। इन मुकामों पर मज़बूत चौकियाँ कायम कर दी गई थीं। पर असल में वह दलदल वैसा भयंकर नहीं था जैसा सरकारी सिपाहियों ने उसे समझ लिया था। खास कर एक ऐसे आदमी के वास्ते जो अपनी जान बचाने के लिये सब कुछ करने को तैयार हो और जिसकी तमाम उम्र उसी जङ्गल में फिरते-फिरते बीती हो, उसका पार कर सकना कुछ भी मुशकिल न था। कप्तान फोयले और उसके साथी उस जङ्गली दलदल की इंच-इंच भर ज़मीन को अच्छी तरह से जानते थे।

दूसरे दिन रात के समय जब काफी अँधेरा हो गया मेलार्न के चालीस वीर धीरे-धीरे सरकारी सेना के घेरे की तरफ़ चले। जब वे सरकारी सिपाहियों से दो-तीन सौ गज दूर रह गये तो उन्होंने अपने जूते और मोजे उतार डाले और वे दो हिस्सों में बँट गये। पच्चीस आदमियों का एक हिस्सा कप्तान फोयले के अधीन था और बाकी पंद्रह आदमी जेम्स केसी के साथ थे। टामी मुलन इन दोनों हिस्सों के बीच में दौड़ता हुआ एक की खबर दूसरे को पहुँचा रहा था। घंटों तक ये लोग बहुत धीरे-धीरे एक कतार में खिसकते रहे। जैसे ही सर्च-

लाइट की रोशनी उनकी तरफ़ आती तमाम लोग साँस रोक कर मुर्दे की तरह जमीन पर पड़ जाते। उनका दम घुटने लगता था और कलेजा मुँह को आता था, तो भी चुपचाप पड़े रहने के सिवा और कोई उपाय न था। कुछ देर बाद जब रोशनी हट जाती तो फिर उनको आगे बढ़ने का इशारा किया जाता।

उस रात को गोरिल्लाओं ने जो तकलीफ़ उठाई उसका वर्णन लिख कर नहीं किया जा सकता। सबके कपड़े पानी से तर हो गये थे और ठंड के मारे शरीर पत्थर हुआ जाता था। चारों तरफ भयंकर सन्नाटा छाया हुआ था और बीच-बीच में मशीनगन की तड़तड़ाहट सुनाई देती थी। कितनी ही बार गोलियाँ उनके सरों के ऊपर होकर गुजर गईं, और उन्होंने समझ लिया कि अब हमारी मौत आ पहुँची।

तो भी उनकी तक़दीर अच्छी थी। कई घंटे चलते-चलते बीत गये और वे बिना किसी की निगाह में पड़े भीतरी घेरे में से बच कर निकल गये। अब बाहरी घेरे की केवल थोड़ी सी चौकियाँ बाक़ी थीं। धीरे-धीरे गोरिल्लाओं का पहिला दल उस घेरे के भी बाहर निकल आया और एक पहाड़ी टीले की ओट में जा पहुँचा। इस समय कहीं दुश्मन का पता न था। इतने में टामी मुलन पीछे से दौड़ता हुआ आया और उसके पीछे दूसरा दल था। दुश्मन के घेरे से बाहर आ जाने की खुशी में मुलन होशियारी से चलना भूल गया और सरकारी सिपाहियों ने सर्चलाइट की रोशनी से उसे देख लिया। उसी समय मशीनगन की भयंकर तड़तड़ाहट सुनाई दी और टामी मुलन बिना मुँह से आवाज निकाले गिर कर मर गया।

अब दूसरे दल को रास्ते में ही रुकना पड़ा। वे पहिले तो कुछ घबड़ाये, पर दूसरे ही क्षण छिपने के लिये आसपास की चट्टानों की तरफ दौड़े। अगर उनको छिपने में ज़रा भी देर हो जाती तो शायद एक भी आदमी जिन्दा न बचता। क्योंकि उसी समय दुश्मन की सेना उस मुक़ाम पर बंदूकों और

मशीनगनों से गोलियों की वर्षा करने लगी। इन लोगों ने दुश्मन को जवाब देना चाहा, पर उनके छुपने की जगह ऐसी खराब थी कि वहाँ से उनकी गोलियों का सिपाहियों तक पहुंच सकना मुश्किल था। अब खतरा बहुत बढ़ गया और बचने की एक उम्मेद सिर्फ़ यही थी कि कप्तान फोयले लौट कर उनकी मदद करेगा। इसी उम्मेद पर उन्होंने आखीर तक जम कर लड़ने का पक्का इरादा कर लिया।

सरकारी सेना की गोलियाँ बहुत देर तक चलती रहीं। एकाएक एक चट्टान के पीछे से किसी अजनबी शख्स की आवाज आई:—

"भाइयो, मैं तुम्हारा एक दोस्त हूँ—कैरट। इन दो मिनटों के भीतर मैं तुम पर दस बार निशाना लगा सकता था। अब तुम अपनी मशीनगन का निशाना उस सफेद टीले पर लगाओ और ज़ोरों से गोलियों की वर्षा करो। मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूँ, पर उस सफेद टीले के पास खड़े सिपाही मुझ पर निशाना लगा रहे हैं, इसलिये तुम फौरन उन पर मशीनगन चलाओ।"

ज़रा देर के लिये केसी जेम्स भौंचक्का सा रह गया। पर उसकी यह हालत ज्यादा वक्त तक न रही और उसने समझ लिया कि इन शब्दों का कहने वाला शख्स कोई भी हो, वह हमारा दोस्त है। क्योंकि सचमुच वह उस तरफ़ से, जिधर से आवाज़ आई थी, कुछ दिखलाई पड़ता था। उसी समय सरकारी सेना की वर्दी पहिने हुये एक शख्स उसकी तरफ आता दिखलाई दिया। उसके एक कन्धे पर मशीनगन रखी थी और दूसरे कन्धे में बन्दूक लटक रही थी। वह जल्दी-जल्दी एक जगह से दूसरी जगह कूदता और छिपता हुआ उनके पास आ रहा था। केसी सोचने लगा कि आखिर यह शख्स कौन है और इसका मतलब क्या है? तो भी उसने अपने सन्देह को दबा कर सफेद टीले की तरफ़ मशीनगन चलाई। पर उसका दिल धड़क रहा था कि कहीं यह धोखा न देता हो।

उस अजनबी ने फिर कहा—"अब तुम लोग दौड़ कर उस बड़े टीले की तरफ़ जाओ। मैं सिपाहियों पर गोली चला कर तुम्हारा बचाव करूँगा। जब तुम किसी हिफाजत की जगह में पहुँच जाओ तो सरकारी सेना पर गोली चला कर मेरा बचाव करना। याद रखना कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।"

इसी समय सफेद टीले की तरफ से सरकारी सेना की मशीनगन चलने की आवाज़ आई। अब केसी को उस अजनबी की बात पर कुछ शक बाक़ी न रहा और उसने अपने आदमियों को बड़े पहाड़ी टीले की तरफ दौड़ कर जाने का हुक्म दिया। कुछ ही मिनट में वे लोग सकुशल उस टीले के पीछे जा पहुँचे। वहाँ पर कसान फोयले उनकी राह देख रहा था। केसी ने जल्दी से उसको दो एक बातें समझाईं और वे सब मिल कर सरकारी सेना की तरफ गोली चलाने लगे। दो-तीन मिनट के बाद ही वह अजनबी दौड़ता हुआ उनके पास चला आया।

इस वक्त किसी को इतनी फ़ुरसत न थी कि उस अजनबी से कुछ पूछताछ की जाती। क्योंकि सरकारी सेना गोलियाँ चलाती हुई बराबर पीछा कर रही थी। इसलिये सभी गोरिल्ला तेज़ी के साथ आगे बढ़े। इस रास्ते का पता अपने गोरिल्ला के ज़रिये बड़े सेनापति को लग चुका था और उसने जगह-जगह मेलार्न वालों की मदद के लिये अपने आदमी छुपा रखे थे। जैसे ही सरकारी सेना पीछा करती कुछ दूर निकल आई इन छुपे हुये लोगों ने हर तरफ के उस पर गोली चलाना शुरू किया। करीब आध घंटे तक लड़ाई होती रही जिसमें सरकारी फ़ौज के कितने ही सिपाही मरे और घायल हुये। तब वे लोग भाग खड़े हुये।

इधर कसान फोयले और उसके साथी पहाड़ियों और जंगलों में होकर आगे बढ़ते गये। कुछ घन्टे बाद वे कारिङ्गू नामक मुक़ाम पर, जहाँ इस समय जिले के सेनापति का हैडकार्टर उठकर चला आया था, जा पहुँचे। यहाँ पर

उनका स्वागत करने को सेनापति ख़ुद मौजूद था और खाने-पीने का बहुत अच्छा इन्तजाम किया गया था। वह अजनबी भी मेलान वालों के साथ था और सब लोग उसे बड़े ताज्जुब की निगाह से देख रहे थे। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि उस दिन उसकी मदद से ही उन पंद्रह वालंटियरों के प्राण बच सके थे। इसके सिवा और भी कुछ बातें ऐसी मालूम हुईं जिनसे सबको एतबार हो गया कि वह एक विचित्र आदमी है। दूसरे दिन जब सेनापति वहाँ आया तो वह उसके सामने फ़ौजी क़ायदे से खड़ा हो गया और सलाम करके बोला:—

"मैं समझता हूँ कि आप इस फौज के कर्नल हैं। मैं भी इस झुण्ड में शामिल होना चाहता हूँ। आप मेहरबानी करके क्वार्टरमास्टर से कह दें कि वह मेरे लिये एक वर्दी तैयार करदे। मेरी वर्दी यहाँ के लायक़ नहीं है।" कुछ ठहर कर उसने फिर कहा—"आप रजिस्टर में मेरा नाम ओहारा लिख सकते हैं, मैं कार्क जिले का रहने वाला हूँ।"

उधर सरकारी सेना पहाड़ियों का घेरा डाले पड़ी थी। दूसरे दिन जब सिपाही तलाश करने लगे तो देखा कि वहाँ एक बच्चा भी नहीं है। केवल चालीस जोड़े जूते, कुछ कपड़े और भोजन का थोड़ा सा सामान उनके हाथ लगा।

———

एक पैदायशी गोरिल्ला

ओहारा के बारे में राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों में बड़ी चर्चा होती रहती थी। किसी को उसका असली हाल मालूम न था। वे सिर्फ़ इतना जानते थे कि वह सरकारी फ़ौज से भाग कर आया है। कुछ लोग यह भी कहते थे कि फ़ौज से आते समय एक गोलंदाज़ को मार कर उससे मशीनगन छीन ली थी। पर ओहारा अपने बारे में बहुत कम बात करता था और उसने अपना पूरा हाल सिर्फ़ सेनापति को ही बतलाया था। सेनापति ने सब बातें लिख कर डबलिन के हैडक्वार्टर में भेज दीं। डबलिन के नेताओं ने उसको राष्ट्रीय गोरिल्ला दल में शामिल करने की मंजूरी दे दी और वह कप्तान फ़ोयले की अधीनता में एक गोरिल्ला बना दिया गया।

इसी बीच में ओहारा दूसरे गोरिल्लाओं में सर्वप्रिय हो गया। खास कर फ़ादर एमन के साथ धर्म के विषय में उसकी बहुत बहस हुआ करती थी। फ़ादर एमन उसकी बातों को बहुत ग़ौर के साथ सुना करता और उसके अजीब-अजीब सवालों का यथाशक्ति पूरा उत्तर देने की कोशिश करता था। उसने अनुभव किया कि अगर्चे ओहारा अनपढ़ है और उम्र भर लड़ने-भिड़ने के कारण उसके कोमलता और दया के भाव बिलकुल नष्ट हो गये हैं, तो भी उसमें सचाई कूट-कूट कर भरी है। वह एक बालक की तरह निष्पाप है और बराबर इंसाफ़ के रास्ते पर चलने की कोशिश करता रहता है।

गोरिल्ला दल के सभी व्यक्ति उसको बड़ी इज्ज़त की निगाह से देखते थे। वह सदा हर एक काम करने को तैयार रहता था, कभी लगी-लिपटी बात नहीं करता था और उसमें डर का नाम भी न था। सब कोई उसे आयरलैंड का

रहने वाला ही समझते थे, अगर्चे बातचीत करते समय वह कितने ही देशों के मुहाविरे बोलता जाता था। एक बार उसने अपनी ज़िन्दगी का कुछ हाल इस तरह बतलायाः—

"मैं क़रीब नौ बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में हिस्सा ले चुका हूँ। मेरा बाप आयरलैंड के कार्क ज़िले का रहने वाला था। वह भी बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में लड़ कर मैक्सिको में मारा गया। मेरे तीन भाई जर्मनी की लड़ाई में अंगरेजों की तरफ़ से लड़ते हुये काम आये। मैं भी जर्मनी की लड़ाई में कितने ही महीनों तक सफ़ेद और काले आदमियों से लड़ा था। मैं चीन में भी अंगरेजों की तरफ़ से लड़ा था। उसके बाद मैंने रूस वालों के साथ मिल कर जापानियों से युद्ध किया। उत्तरी अफ़रीका की लड़ाई में भी मैं शामिल था और कुछ दिनों तक अमरीका की फ़ौज में काम कर चुका हूँ। मेरी तमाम उम्र युद्ध करने में ही खत्म हुई है और बिना लड़े मुझे चैन नहीं पड़ता। पर इतना खयाल मुझे जरूर रहता है कि मैं न्याय और सचाई का पक्ष लूँ। मैं जुआ नहीं खेलता, न शराब पीता हूँ और न कभी औरतों के झगड़े में पड़ता हूँ। मैं आयरलैण्ड में सरकार की तरफ से लड़ने को क्यों आया इसमें भी एक भेद है। १९१९ में मैंने अमरीका की फ़ौज से नाम कटा लिया और आयरलैण्ड आकर यहाँ की राष्ट्रीय गोरिल्ला सेना में भरती होने की कोशिश करने लगा। पर इस काम में मुझे कामयाबी न हो सकी। राष्ट्रीय सेना वालों ने मुझे सन्देह की निगाह से देखा। मुझे उनकी यह बात बहुत बुरी लगी और मैं रंजीदा होकर इंगलैण्ड लौट गया। वहाँ मुझे कुछ पुराने साथी मिले और उनके कहने से मैं सरकारी सेना में भरती हो गया। कुछ समय बाद हमारी पलटन आयरलैण्ड को भेजी गई। हमारा हैडक्वार्टर पुलनमोर में था। शुरू में मुझे राष्ट्रीय सेना वालों पर बड़ा गुस्सा था और मैंने उनको अच्छी तरह से मारने का इरादा कर लिया था। पर जब मैंने इन लोगों के कामों और हिम्मत को देखा तो मेरा खयाल बदलने लगा। खासकर जब हमारी पलटन ने मेलार्न पर हमला किया

और वहाँ का स्कूल-मास्टर, जिसका चेहरा काग़ज की तरह सफेद था, फौजी सिपाहियों को मार कर भाग गया, तब मेरे ऊपर बड़ा असर पड़ा। उस वक्त मैं पास ही खड़ा था और चाहता तो भागते समय उसको मार सकता था। पर उस दिन अपनी तमाम उम्र में पहिली बार मैंने एक सिपाही की हैसियत से अपना फ़र्ज़ अदा नहीं किया। मैंने जान-बूझ कर आठ-दस फ़ैर ग़लत किये। इसके बाद जैसे जैसे सरकारी सेना वालों की काली करतूतें मेरे सामने आती गईं और आम लोगों पर मैंने उनको हद दरजे का जुलम करते देखा तो उनसे मुझे बड़ी नफ़रत हो गई। तब मैंने समझा कि मैं अन्याय का पक्ष लेकर लड़ रहा हूँ। अन्त में जिस दिन मैंने दर्जी मोरेन को हँसते हुए गोली से मरते देखा उस दिन मैंने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो मुझे राष्ट्रीय सेना में शामिल होना चाहिये। यद्यपि मैं आयरलैण्ड में पैदा नहीं हुआ, पर मेरा बाप यहीं पर पैदा हुआ था और मैं आयरलैण्ड को ही अपना देश मानता हूँ। अब मेरी इच्छा पूरी हो गई और मैं तुम लोगों के पास मौजूद हूँ।"

सचमुच इस समय वह बहुत सन्तुष्ट और ख़ुश था। वह रात-दिन कड़े कड़ा काम करने को तैयार रहता था और साथ ही चुटकियाँ लेकर और मज़ाक करके सब को हँसाता भी रहता था। वह हमेशा शांत रहता था और कैसा भी ख़तरा क्यों न आ जाय, कभी घबराता न था।

× × × ×

अब फोयले का दर्जा बढ़ा दिया गया और उसका दल भी पहिले से बड़ा और हथियारों से लैस हो गया। कुछ दिनों बाद वे अपने जिले में लौट आये और फिर अपना पुराना काम करने लगे। ये लोग सड़कों को बराबर काटते रहते थे या इस तरह रोक देते थे कि उन पर सफ़र कर सकना नामुमकिन हो जाता था। तार बार-बार काट डाले जाते थे, डाक लूट ली जाती थी और जरा सा मौका लगते ही सरकारी फौज के इधर-उधर जाते हुये सिपाहियों पर

गोलियाँ चलाई जाती थीं। सरकारी चौकियों पर हमला करना भी एक मामूली बात थी। राष्ट्रीय सेना वालों का ज़ोर यहाँ तक बढ़ा कि अन्त में सरकारी सेना वाले धीरे-धीरे उस ज़िले को छोड़ने लगे। इन गोरिल्लाओं का मुख्य सिद्धान्त यह था कि हर तरह से सरकारी फ़ौज को तंग करना और उसे नुक़सान पहुँचाना, पर सामने जमकर कभी न लड़ना। क्योंकि बाक़ायदा सामने लड़कर सरकारी फ़ौज से जीत सकना इन लोगों के लिये नामुमकिन था।

इस समय राष्ट्रीय सेना के गोरिल्लाओं को बहुत ज्यादा मिहनत करनी पड़ती थी और उनमें से कितने ही अधिक परिश्रम के कारण बीमार पड़ गये। घायलों और बीमारों की देख-रेख करना और मरने वालों को गाड़ना भी एक बड़ा काम था, और कभी-कभी कठिनाइयाँ इतनी बढ़ जाती थीं कि पक्के से पक्का आदमी भी घबरा जाता था।

पर दुश्मन की हालत इससे भी खराब थी। धीरे-धीरे सरकारी सिपाहियों की हिम्मत टूटती जाती थी। इधर बराबर तकलीफें सहने के कारण उस ज़िले के तमाम निवासी पक्के हो गये और अब वे सिपाहियों के हमलों और जुल्मों से ज़रा भी न डरते थे। इस समय उस ज़िले की तमाम रैयत एक दिल से छुपे तौर पर राष्ट्रीय सेना वालों की मदद करती थी।

कुछ ही दिनों में सरकारी फ़ौज का एक बड़ा हिस्सा मेलार्न और आस-पास के गाँवों को छोड़ कर दूसरे जिलों में चला गया जहाँ उनको कामयाबी की ज्यादा उम्मेद थी। अब सिर्फ पुलनमोर की छावनी में सरकारी सिपाहियों का ज़ोर था, जहाँ से जरूरत पड़ने पर वे मेलार्न भेजे जा सकते थे। मेलार्न की पुलिस चौकी में भी थोड़े से अंगरेज और आयरिश सिपाही रहा करते थे। पर अब वे राष्ट्रीय सेना वालों से ऐसा डरते थे कि दिन के वक्त भी बहुत कम बाहर निकलते थे। पुलिस की चौकी को चारों ओर से कांटेदार तारों से घेर दिया गया था और उसका लोहे का मज़बूत फाटक रात-दिन बन्द रहता था।

अब राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों को कुछ चैन मिला। वे कभी-कभी अपने घर वालों से मिलने को भी जाने लगे। उनका जाहिरा उद्देश्य तो महीनों के बिछुड़े हुए घर वालों से मुलाक़ात करना ही होता था, पर भीतर ही भीतर वे दुश्मन की हालत का पता भी लगाते थे और जिन मुक़ामों में अभी सरकारी सेना की चौकियाँ क़ायम थीं उन पर हमला करने की तरकीब सोचते थे।

× × × ×

उसी जमाने की बात है कि एक दिन जेम्स केसी कुछ वालंटियरों के साथ मेलार्न की तरफ जा रहा था। ओहारा भी उनके साथ था। वे लोग गाँव से कुछ दूर थे कि किसी के चीखने की आवाज उनको सुनाई दी। यह आवाज़ राष्ट्रीय सेना की चौकी की तरफ से आई हुई जान पड़ती थी। केसी ने अपनी दूरबीन निकाल कर देखा, पर कुछ दिखलाई न दिया। उसने कहा:—"हमको पीछे लौट कर देखना चाहिये कि मामला क्या है। यह आवाज जान होरन की चौकी की तरफ से आई हुई जान पड़ती है।"

ओहारा ने कहा—"मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि जान होरन को किसी ने मार दिया है।"

वे सब तेज़ी के साथ चौकी की तरफ जाने लगे। वे चारों तरफ निगाह डालते जाते थे कि कहीं पर दुश्मन छिपे न हों। एकाएक ओहारा ने कहा—"अरे! जल्दी से छुपो।" यह कह कर वह झटपट एक चट्टान के पीछे छिप गया। दूसरे लोग भी उसकी देखादेखी पत्थरों की आड़ में बैठ गये।

"मामला क्या है?" केसी ने पूछा।

ओहारा की आँखें पुलनमोर की सड़क की तरफ लगी हुई थीं। उसने हाथ बढ़ाकर केसी से कहा—"जरा अपनी दूरबीन मुझे दीजिये। मैं जानता हूँ कि यह लंगड़ा कर चलने वाला आदमी सिवा 'ब्लैक जैक' के और कोई नहीं है। तो भी मैं शक दूर कर लेना चाहता हूँ।"

केसी ने ताज्जुब से कहा—"ब्लैक जैक! अच्छा मैं देखता हूँ।" उसने दूरबीन से देखा कि एक आदमी काला लबादा ओढ़े हुये झाड़ियों में होकर सड़क की तरफ जा रहा है। उसने कहा—"ओहारा, तुम गलती करते हो। ध्यान देकर देखो वह कोई पादरी है।" यह कहकर उसने दूरबीन ओहारा के हाथ में दे दी।

ओहारा ने कुछ सैकिण्ड तक दूरबीन में होकर देखा और फिर उसे केसी को लौटाते हुये कहा—"पादरी है! खाक धूल।"

जब तक केसी उसकी इस बेक़ायदे बात का जवाब दे तब तक ओहारा ने अपनी बन्दूक उठाकर बड़ी सावधानी के साथ एक के बाद एक तीन फैर किये। फिर उसने कहा—"निशाना ठीक लगा है। वह यहाँ से ढाई सौ गज की दूरी पर गिरा है। पर तुम लोग अभी बाहर मत निकलना।"

केसी उठकर खड़ा होने लगा और ओहारा को झिड़क कर कहने लगा "देखो ओहारा.....।" उसकी बात पूरी भी न हुई थी कि उसके कान के पास से एक गोली सनसनाती हुई निकल गई। केसी डर के मारे तुरन्त जमीन पर लेट गया। इसी समय ओहारा ने फिर गोली चलाई। तब उसने कहा—"वह मेरी पहली गोली से नहीं मर सका था। पर मैंने आप से छुपे रहने को कह दिया था। यह शख्स आवाज़ के ऊपर निशाना मारने वाला था और घायल होने पर भी उसने ऐसा सच्चा निशाना लगाया यह कम तारीफ़ की बात नहीं है। पर मेरी अखीर की गोली ने उसका काम तमाम कर दिया और अब हम खुशी से बाहर निकल सकते हैं।"

जब तक ओहारा उठकर कुछ गज़ तक नहीं चला गया तब तक दूसरे गोरिल्लाओं को शक बना ही रहा। अगचें अब तक के तजुरबे से मालूम हो गया था कि ओहारा का निशाना अचूक होता है और वह यह भी जान जाता है कि उसकी गोली का क्या असर हुआ।

जब ये लोग जान होरन की चौकी पर पहुँचे तो उसे बिलकुल मुर्दा पाया। किसी ने उसकी खोपड़ी उसी की बन्दूक से तोड़ दी थी। देखने से साफ मालूम

पड़ता था कि उसके जेबों की अच्छी तरह तलाशी ली गई है। बहुत कोशिश करने पर भी यह मालूम न हो सका कि उस पादरी के से कपड़े पहिने हुये शख्स ने उसको किस तरह बेकाबू कर दिया। उसी रात को उन लोगों ने जान होरन को दफना दिया।

थोड़ी दूर पर 'ब्लैक जैक' भी मरा पड़ा था। उसका असली नाम कप्तान एडबिज था और सरकार ने जिन बदमाशों को आयरलैंड के ग़रीब लोगों पर जुल्म करने और सताने के लिये छोड़ रखा था उनमें यह शख्स सब से ज्यादा भयंकर था। ओहारा ने बतलाया कि वह मैक्सिको का रहने वाला था, और उसने आपस के झगड़ों में बीसियों लोगों को जान से मार दिया था सरकारी सेना में वह एक खास आदमी समझा जाता था। वह कुछ लंगड़ा कर चलता था और उसकी चाल के सबब से ही ओहारा ने उसको दूर से पहिचान लिया था। अपने ऐसे भयंकर दुश्मन के अचानक मारे जाने से राष्ट्रीय सेना वालों को बड़ी खुशी हुई और वे जान होरन के मरने का दुख बहुत कुछ भूल गये।

× × × ×

अब गोरिल्ला दल का इरादा मेलार्न की पुलिस चौकी पर कब्जा करने का था। पर यह काम सहज न था। यह चौकी गाँव से डेढ़ सौ गज दूर थी। उसका मकान काले पत्थर का बहुत मज़बूत बना हुआ था। उसमें लड़ाई और बचाव का बहुत बढ़िया इंतजाम किया गया था। उसके चारों तरफ़ काँटेदार तारों का जाल लगा हुआ था। हर एक खिड़की के सामने लोहे की चादरें लगा दी गई थीं, जिनमें बन्दूक चलाने के लिये छेद बने हुये थे। यह बात भी अच्छी तरह मालूम थी कि चौकी में कम से कम बीस आदमी हैं जिनके पास काफ़ी गोली-बारूद और दो मशीनगनें हैं।

चौकी को उड़ाने के लिये राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर ने एक सुरंग भेजने का वायदा किया था। पर किसी सबब से वह न आ सकी और उसके बजाय

बहुत से बम भेज दिये गये। यह साफ़ ज़ाहिर था कि चौकी पर हमला धोखा देकर ही किया जा सकता है। पर सवाल यह था कि धोखा किस तरह दिया जाय। आखीर में ओहरा ने एक तरकीब बतलाई और बहुत सोच-विचार कर सब ने उसको मंजूर कर लिया। क्योंकि अब सब लोगों को इस पुराने गोरिल्ला पर पूरा एतबार हो गया था।

जिस दिन हमला किया जाने वाला था उससे पहिली रात को मेलार्न आने वाली तमाम सड़कें पत्थर और कटे हुये पेड़ डाल कर रोक दी गईं और उन पर रात भर पैरगाड़ियों पर चढ़े हुये वालंटियर गश्त लगाते रहे। मेलार्न से छै मील की दूरी पर बारबरो नाम का एक फ़ौजी अड्डा था। उसके पास वालंटियरों का एक दल छुपा कर बैठा दिया गया। गाँव के एक बाग के भीतर एक मोटरगाड़ी छुपा दी गई और उसका ड्राइवर भी पास ही किसी घर में जा सोया। सुबह के पहिले ही कुछ गोरिल्ला धीरे-धीरे चल कर चौकी के पीछे छुप गये। सामने और बगल में जगह-जगह बन्दूक चलाने वाले छुपा कर बैठा दिये गये। चौकी के दरवाजे के ठीक सामने क़रीब दो सौ गज़ की दूरी पर एक गढ़े में मशीनगन रख दी गई।

सुबह होते ही ओहारा अपनी पुरानी सरकारी फौज की वर्दी पहिन कर और भरी हुई बन्दूक हाथ में लेकर पुलिस चौकी के दरवाजे पर पहुँचा। उससे थोड़ी दूर पर दो देहाती लड़कियाँ शाल ओढ़े और हाथों में दूध का बतन लिये हुये आपस में बातें करती हुई आ रही थीं।

ओहारा ने चौकी के दरवाजे को जोर से खटखटाया। भीतर से कोई बोला—"आज सुबह ही सुबह कौन कमबख्त आ मरा।" उसके बोलने से मालूम होता था कि उसने खूब शराब पी रखी है।

ओहारा ने जवाब दिया—"मैं एक दोस्त हूँ। मैं बारबरो की छावनी का सिपाही हूँ। मुझे भीतर आने दो।"

भीतर से आवाज आई—"दोस्त! झूठा कहीं का? इस तरफ़ हमारा कोई दोस्त नहीं है।"

कुछ देर तक आहारा चकराया हुआ वहीं पर चुपचाप खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद कुछ खड़खड़ाहट की आवाज आई और दरवाजे का एक छोटा सा छेद खुला। ओहारा ने देखा कि दो लाल-लाल आँखें उस छेद में होकर देख रही हैं। उस लाल आँखों वाले ने पूछा—"इतने सवेरे तू इस तरफ क्यों फिर रहा है?"

ओहारा ने जवाब दिया—"भाई, पहिले मुझे भीतर आ जाने दो जिससे राष्ट्रीय सेना वालों का डर जाता रहे। पीछे मैं तुमको सब हाल बतलाऊँगा।"

वह आदमी बोला—"जरा देर सब्र करो।" यह कह कर उसने सामने की सड़क पर इधर-उधर अच्छा तरह देखा। उसे सिवा उन दो देहाती लड़कियों के, जो धीरे-धीरे आ रही थीं और कुछ दिखलाई न दिया।

उसने आहारा से कहा—"तू बड़ा गधा आदमी जान पड़ता है, जो इस वक्त अपने मुक़ाम को छोड़ कर इधर-उधर मारा-मारा फिर रहा है। मालूम पड़ता है औरतों के चक्कर में पड़ा है।"

अब उसने किवाड़ों को खोलने के लिये पीछे की तरफ धक्का दिया और जोर से जंजार खोल दी। उसने दरवाजे को जरा सा खोला था कि उसको ओहारा का तर्ज देख कर कुछ शक हुआ और उसने चाहा कि दरवाजा फिर से बन्द कर दूँ। पर ओहारा ने शेर की तरह झपट कर उसकी गर्दन में संगीन मारी जिससे वह बिना आवाज निकाले, जमीन पर गिर गया। उसी वक्त कतान फायजे और जान हांगन जो लड़कियाँ बने हुये थे अपनी शालें फेंक कर दौड़ते हुये वहाँ आ पहुँचे। पीछे की तरफ छुपे हुये वालंटियर भी बाहर निकल आये और चौकी के भीतर घुस गये। जरा देर में चारों तरफ से चौकी के ऊपर गोलियों की वर्षा होने लगी।

बम और पिस्तौलों की आवाज सुन कर फौजी सिपाही घबड़ा कर उठे।

वे सब शराब के नशे में चूर थे। अपने को चारों तरफ से घिरा देख उन्होंने बिना लड़े-भिड़े हार मान ली और अपने हथियार राष्ट्रीय सेना वालों के सुपुर्द कर दिये। पर एक दूसरे कमरे में छै आयरिश पुलिस के सिपाही थे; उन्होंने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया और लड़ने लगे। उनके पास एक मशीनगन भी थी।

कुछ ही देर में मोटरगाड़ी चौकी के सामने आकर खड़ी हो गई। वालंटियरों ने गोली चलाना बंद कर दिया और सिर्फ कुछ आदमी एक खिड़की की तरफ से पुलिस वालों से लड़ते रहे। जिन लोगों ने हार मान ली थी उनको केसी की निगरानी में दूर ले जाकर खड़ा कर दिया गया। फोयले बंदूकों, मशीनगन और गोली-बारूद को मोटर पर लदाने लगा। गैनन को चौकी में आग लगा कर उन पुलिस वालों को उसी में जला देने का काम सुपुर्द हुआ। पंद्रह मिनट के भीतर चौकी अच्छी तरह जलने लगी और कुछ ही मिनट बाद वे छै पुलिस वाले बाहर निकल आये और हाथ ऊँचे उठा कर कहने लगे—"हम हार मानते हैं।"

इस समय आग बहुत बढ़ गई थी और चौकी के भीतर बराबर धड़ाके हो रहे थे। इसलिये फोयले ने हुक्म दिया कि कोई आदमी बचे हुये सामान को निकालने के लिये भीतर न जाय। इस तरह एक मशीनगन का नुकसान होने से गैनन और ओहारा बड़े नाराज हुये और उन्होंने चाहा कि उन छै सिपाहियों को गोलियों से उड़ा दें। पर दूसरे लोगों ने बड़ी मुशकिल से उनको रोका। फोयले ने उन पुलिस वालों की हिम्मत की बड़ी तारीफ़ की और कहा कि आगे चल कर वे लोग राष्ट्रीय सेना में मिल कर अपने देश के लिये लड़ें। कुछ देर बाद गुस्सा ठंडा हो जाने पर गैनन भी अपने बर्ताव पर शरमिंदा हुआ। पर ओहारा बहुत देर तक इसी बात पर अड़ा रहा कि उन पुलिस वालों के साथ जरा भी मेहरबानी नहीं करनी चाहिये थी।

बम और बंदूकों की आवाज़ से दूसरे मुकामों की सरकारी फौज को मेलार्न

की चौकी पर हमला होने का पता लग गया और वे फौरन मोटरलारियों में उस तरफ रवाना हुये। पर तमाम रास्ते बंद थे और जगह-जगह राष्ट्रीय गोरिल्ला उन पर हमला करने को छुपे बैठे थे। इसलिये उनको मेलार्न तक पहुँचने में कई घटे लग गये। अखीर में जब वे वहाँ पहुँचे तो उनको सिवा एक टूटे-फूटे मकान के कुछ न मिला। उसी मकान में वे बीस सिपाही परेशान हालत में आधे नंगे और डरे हुये बैठे थे। उनके पास एक लाश भी पड़ी थी।

सरकारी फौज दिन भर गोरिल्लाओं को ढूँढती हुई फिरती रही। आसपास के गाँवों के कितने ही लोग संदेह में पकड़े गये। पर इसकी परवा न करके उस रात को मेलार्न के कितने ही घरों में खुशी मनाई गई और सब लोगों ने फादर एमन के साथ प्रार्थना पढ़ कर ईश्वर को धन्यवाद दिया। लोगों के दिल आत्म-गौरव से भरे हुये थे और गोरिल्लाओं के लिये, जो उनके ही भाई, बेटे थे, सब की आँखों से प्रेम के आँसू बह रहे थे।

एक ख़तरनाक यात्रा

मेलार्न की पुलिस-चौकी के जलाये जाने और कप्तान एडब्रिज के मारे जाने की ख़बरों से सरकारी अफ़सरों में बड़ी खलबली मच गई। उस जिले का सेनापति तो गुस्से के मारे पागल हो रहा था। ख़ासकर कप्तान एडब्रिज का मारा जाना बड़ी भारी बात समझी जाती थी। कप्तान एडब्रिज सरकारी फौज के जासूसी महकमे का एक ख़ास आदमी था और उसने कई जिलों में घूम फिर कर बड़ी चालाकी से वहाँ के गोरिल्ला दलों का पूरा-पूरा भेद मालूम कर लिया था। इस सबब से डबलिन में रहने वाले बड़े हाकिम भी उसकी इज्ज़त करते थे। सब लोग समझते थे कि जब वह लौट कर आवेगा तो उसके अख़्तियार बहुत बढ़ा दिये जायँगे और सेना को उसी की राय से काम करना पड़ेगा। ज़्यादातर फौजी अफ़सर दिल से उसके ख़िलाफ थे। क्योंकि ओहदे में छोटा होने पर भी उसका ताल्लुक सीधे डबलिन के हाकिमों से रहता था। इसके सिवा वे लोग उसके स्वभाव से भी डरते थे और जब तक वह पास रहता था किसी की हिम्मत खुल कर बात करने की नहीं होती थी।

पर इन बातों के साथ ही स्थानीय अफ़सरों और डबलिन के हाकिमों को उसकी लियाकत पर पूरा भरोसा था और वे जानते थे कि वह हर एक भले और बुरे उपाय से राष्ट्रीय सेना वालों को बर्बाद करने को तैयार रहता है। इसलिये जब उन्होंने उसकी लाश को देखा जिसकी छाती और सर में गोलियों के घाव थे तो उनको बड़ा रंज हुआ और गुस्सा भी आया। फिर जब मेलार्न के थाने के जलाये जाने की ख़बर आई तब तो उनके गुस्से का पारा बहुत ऊपर चढ़ गया। सरकारी सिपाही इन घटनाओं का बदला लेने को उतावले

होने लगे। पर अफ़सरों ने उनको कड़ा हुक्म देकर जल्दबाज़ी करने से रोका। पर 'ब्लैक एण्ड टैंस' (कृष्ण घातकों) के दल को रोक सकना नामुमकिन था। दिन के वक्त तो वे जैसे-तैसे चुपचाप रहे, पर रात होते ही उन्होंने मेलार्न पर हमला किया और कितने ही खलिहानों, मकानों और दुकानों में आग लगा दी। राष्ट्रीय सेना वालों ने पहिले से ही सब लोगों को होशियार कर दिया था और सिवा एक बुढ़िया और एक अपाहिज आदमी के सब लोग पहाड़ियों में भाग गये थे। सिपाहियों ने उस बेकसूर अपाहिज को संगीनों से मार डाला।

सिपाहियों ने घरों में से लूटी हुई शराब दिल खोल कर उड़ाई। वे ऐसे बदहवास हो गये थे कि अगर उनकी तादाद बहुत ज्यादा न होती तो एक भी आदमी का राष्ट्रीय गोरिल्लाओं के हाथ से बच कर जा सकना मुशकिल था। जब वे लोग लौट कर अपनी छावनी को जाने लगे तो उन्होंने एक जगह देखा कि गोरिल्ला दल वालों ने बड़े-बड़े पत्थर डाल कर सड़क को रोक दिया है। जैसे ही वे पत्थरों को हटाने के लिये मोटरलारियों से बाहर आये कि राष्ट्रीय सेना वालों ने पहाड़ी पर से उन पर गोलियाँ चलानी शुरू कीं। नेड गैनन ने चट्टान के पीछे से एक बम ऐसा फेंका कि एक गाड़ी बिलकुल चूर-चूर हो गई और दूसरी टूट फूट गई। इस टूटी हुई गाड़ी के सिपाहियों पर फोयले और उसके साथियों ने बन्दूकों और मशीनगन से खूब गोलियाँ चलाईं। उधर ओहारा अकेला एक ऊँची जगह पर बैठा हुआ चुन-चुन कर निशाना लगा रहा था। फौजी सिपाहियों ने गोरिल्लाओं का जम कर मुकाबला करने की हिम्मत न की और ज्योंही सड़क साफ हुई वे लोग टूटी हुई मोटर लारी को छोड़ कर बड़ी तेजी के साथ भाग गये। मालूम नहीं कि जब सरकारी अफसरों को अपने घायल और मारे गये लोगों की तादाद मालूम हुई होगी तो वे उस रात की कार्रवाई पर कैसे खुश हुये होंगे? डबलिन के हाकिमों के पास यह खबर खूब घटा कर और बदल कर भेजी गई थी।

गोरिल्ला दल के भी कुछ आदमी मरे और घायल हुये थे। पर इसके लिये किसी को ज्यादा रंज न था, क्योंकि सब को मालूम था कि सरकारी फौज के हम से बहुत ज्यादा आदमी मरे हैं। बाद में उन्होंने अपने दोनों मुर्दों को दफना दिया। पर इस बार उनको चोरी से रात में नहीं दफनाया गया, बल्कि दिन में खुल कर यह काम किया गया। उस मौके पर राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों ने फौजी कायदे के मुताबिक उनकी इज्जत करने के लिये बन्दूकों की बाढ़ें दागीं।

× × × ×

कुछ दिनों बाद राष्ट्रीय सेना के हेडक्वार्टर की तरफ से उस जिले के सेनापति के पास खबर आई कि वह एक ऐसे जिम्मेवार शख्स को डबलिन भेजे जो मेलार्न के गोरिल्ला दल की कार्रवाइयों का पूरा हाल बतला सके। सेनापति ने इस काम के लिये जेम्स केसी को सब से अच्छा आदमी समझा। क्योंकि उसने तमाम लड़ाइयों में हिस्सा लिया था और वह काफी पढ़ा-लिखा और समझदार आदमी था। सेनापति ने डबलिन जाने का तमाम इन्तेजाम उसको समझा दिया। उसने केसी से कहा—"तुम एक सौदागर के एजन्ट के रूप में डबलिन जाओ। ये तुम्हारे बेचने की चीजों के नमूने और कागज-पत्र हैं। तुम इन सब को अच्छी तरह पढ़ कर समझ लेना। तुम अपना नाम राबर्ट हेयर बतलाना।

उस रात को वह चुपके से मोटरगाड़ी में बैठ कर एक दूसरे कस्बे में चला गया और वहाँ एक होटल में जाकर ठहरा। दूसरे दिन उसे डबलिन जाने की रेल मिली। अचानक उसने देखा कि उसके डिब्बे में एक बुड्ढा सौदागर बैठा है जिससे एक साल पहिले वह पुलनमोर में मिला था। उसका नाम एडवर्ड चिङ्गली था और वह एक बड़े कारखाने की तरफ से एजन्ट का काम करता था। राजनैतिक विचारों की निगाह से उसे सब लोग नर्म दल वाला समझते थे। केसी नहीं चाहता था कि चिङ्गली उसे पहिचाने या उससे

बातचीत करे। पर वह खुद उठ कर उसके पास आ बैठा और हँस कर बोला –"कहिये जनाब, क्या हाल है ? बहुत दिनों बाद आपसे मुलाकात हुई।"

दोनों में बहुत देर तक मामूली बातचीत होती रही। अखीर में देश की मौजूदा हालत का जिक्र छिड़ा। चिङ्गली ने कहा—"बड़ी खराब हालत है। न मालूम इस देश की क्या दशा होने वाली है। व्यापार रोज़गार तो चौपट हो गया। चारों तरफ़ तबाही ही तबाही नजर आती है।"

केसी ने भी चिङ्गली की बात का समर्थन किया, पर उसके दिल में बड़ी धुकड़ पुकड़ हो रही थी। जब मिस्टर चिङ्गली राष्ट्रीय सेना वालों के कामों की बुराई करने लगे तो केसी को बड़ा डर लगा। पर थोड़ी देर बाद बातचीत का रुख दूसरी तरफ फिरा और केसी का डर जाता रहा।

आगे चलकर जब एक जंकशन पर गाड़ी बदली जा रही थी तो केसी ने देखा कि फौजी सिपाही सब लोगों की तलाशी ले रहे हैं और उनसे सवाल-जवाब कर रहे हैं। उसको डर लगा कि कहीं मेरा भेद न खुल जाय। अभी सिपाही कुछ दूर ही थे कि मि० चिङ्गली ने जल्दी से पूछा—"तुम्हारा नाम मि० केसी है या और कुछ ? अगर कोई झगड़ा पैदा होगा तो मैं सब ठीक कर दूँगा। नाम क्या है ?"

केसी के ताज्जुब का ठिकाना न रहा। वह जैसे-तैसे अपने को सम्हाल कर बोला–"मेरा नाम राबर्ट हेयर है और मैं मैकफैरिस कम्पनी का एजण्ट हूँ।"

"ठीक है" चिंगली ने शांतिपूर्वक कहा। इसी समय एक फ़ौजी अफसर वहाँ आ पहुँचा। चिङ्गली ने बड़े तपाक के साथ उससे हाथ मिलाया और कहने लगा "कहिये मेजर साहब, आपकी लड़ाई का क्या हाल है ?

मुझे पूरा यकीन है कि आप कुछ ही दिनों में इन बाग़ियों को पूरी तरह से दबा देंगे।"

वह अपना हैण्डबेग हाथ में लेकर बड़े दोस्ताना तरीक़े से मेजर के साथ बातचीत करने लगा। उधर दूसरा अफ़सर केसी के काग़ज़-पत्रों और सामान की जाँच कर रहा था। उस अफसर को केसी के जवाबों पर एतबार न हुआ और उसने साफ़ तौर पर अपना शक ज़ाहिर किया। घबराहट के कारण केसी के मुँह से कोई बात न निकली। इतने में बात करते-करते मि० चिङ्गली ने पीछे की तरफ़ मुड़ कर कहा "मेजर साहब, मैं अपने दोस्त मि० राबर्ट से आपकी पहिचान कराना चाहता हूँ। राबर्ट, उठ कर मेजर टिंसडन से हाथ मिलाओ। ये बग़ावत के दबाने में बड़ा काम कर रहे हैं।"

मि० चिङ्गली के कहने में कुछ ऐसा असर था कि जाँच करने वाले अफसर ने बिना ज्यादा बातचीत किये केसी के काग़ज़-पत्र मेजर के हाथ में दे दिये। मेजर ने उन पर एक निगाह डाली और फिर उन्हें केसी को लौटा कर उससे बड़ी खुशी से हाथ मिलाया।

कुछ देर ठहर कर मि० चिङ्गली ने कहा—"अच्छा मेजर साहब, अब हम गाड़ी पर सवार हों? अच्छी तरह रहना।"

वे दोनों एक खाली डिब्बे में जाकर बैठ गये। थोड़ी देर बाद जब गाड़ी चलने लगी तब मि० चिङ्गली ने कहा—"अच्छा मि० राबर्ट, अब मेरे बारे में तुम्हारी क्या राय है?"

केसी ने एहसान का भाव दिखलाते हुये कहा—"अब मुझे कुछ नहीं कहना है।"

चिङ्गली कहने लगे—"क्या तुम समझते हो कि मैं तुमको नहीं पहिचानता? मुझे सब बातें मालूम हैं। तुम पहिले मेलार्न गाँव में स्कूल-मास्टर थे और अब राष्ट्रीय सेना में एक अफसर हो। मैं भी तुमको अपने बारे में एक छुपी

हुई बात बतलाना चाहता हूँ। मैं राष्ट्रीय सेना में शामिल हूँ। अगर्चे मैं लड़ने-भिड़ने के काम में हिस्सा नहीं लेता; पर मैं ऐसे-ऐसे गुप्त काग़ज़-पत्र एक जगह से दूसरी जगह ले जाता हूँ जिनके बदले में सरकार लाखों रुपये दे सकती है। इसके सिवा मैं और भी कई तरह के काम करता हूँ। मैं चालीस साल तक तमाम देश में सफ़र करता रहा हूँ और जहाँ कहीं जाता हूँ वहाँ सरकारी अफ़सरों से दोस्ती कर लेता हूँ। मेरी यह दोस्ती इन दो सालों में बड़े काम की चीज़ साबित हुई है। तुमको ताज्जुब होगा कि मैं ये सब बातें तुमको क्यों बतला रहा हूँ। पर मुझे तुम्हारा भेद अच्छी तरह मालूम है और मैं जानता हूँ कि तुमसे बातचीत करने में किसी बात का खटका नहीं है। फिर मेरे जैसे बूढ़े बातूनी आदमी के लिये कभी-कभी मन की बात खोल कर कह देना जरूरी है, नहीं तो बहुत भेद इकट्ठा हो जाने से पेट फट जाने का डर रहता है!"

उसकी बातों से यह भी मालूम हुआ कि उसने केसी को कई बार पुलन-मोर में राष्ट्रीय सेना के अफ़सरों के साथ देखा था। वह उसे पहिले से जानता था, इसलिये उसे इस बारे में पूछ ताछ करने की इच्छा हुई और एक दोस्त से सब बातें मालूम हो गईं।

जब गाड़ी समुद्र के किनारे पहुँची तो मि० चिंगली ने केसी के साथ होटल में खाना खाया। उसकी बातचीत से केसी को जान पड़ा कि उनका आयरलैण्ड के प्रति अपार प्रेम है। पिछले पचास सालों से वहाँ के देशभक्त अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिये जो बलिदान कर रहे हैं उसका जिक्र करते-करते चिंगली की आँखों में आँसू भर आये। वे एक दार्शनिक विचारों के पुरुष थे और हमेशा ठंडे मिजाज से बातचीत करते थे। पर जब वे ग़रीब आयरलैण्ड वासियों पर हर रोज किये जाने वाले जुल्मों की याद करते थे तो कभी-कभी उनके दिल में बड़ा गुस्सा पैदा होता था। उस वक्त वे क्रोध में भर कर कहते थे कि—"जब कभी मैं इन बदमाश 'ब्लैक एण्ड टैंस' दल

वालों की करतूतों को सुनता हूँ तो मेरे मन में ऐसा आता है कि उनको गला दबा कर मार डालूँ और उनकी बोटी बोटी काट कर फेंक दूँ। हरामजादे, बिना क़सूर ग़रीब भाइयों पर जुल्म कर रहे है।" फिर वे रज भरी हँसी के साथ कहते—"पर मैं हमेशा अपनी इस इच्छा को दबा देता हूँ।"

जब वे दूसरे जंकशन पर पहुँचे तो फिर उनकी तलाशी ली गई। पर यह तलाशी नाममात्र की थी, क्योंकि तमाम फ़ौजी अफ़सर मि० चिंगली को पहिचानते थे और उनके रोबदार तथा गम्भीर चेहरे को देख कर किसी को उन पर शक नहीं होता था। मि० चिंगली ज़ाहिर में बड़ी राजभक्ति दिखलाते थे और जब फ़ौजी बैण्ड बाजा इङ्गलैण्ड का जातीय गीत बजाता तो बड़ी खुशी ज़ाहिर करते थे। उनकी इन बातों को देख कर किसी को स्वप्न में भी यह खयाल नहीं आता था कि यह शख्स बाग़ियों से मिला होगा।

जब ये लोग डबलिन के स्टेशन पर पहुँचे और अलग होने लगे तो मि० चिंगली ने केसी को अपना प्राइवेट कार्ड दिया और हाथ मिलाते हुये कहा—"मि० राबर्ट, जब तक तुम इस शहर में हो, अगर फ़ुरसत मिले तो कभी-कभी मुझसे मिलते रहना। तब तक के लिये सलाम।"

थोड़ी देर बाद केसी एक होटल में जाकर ठहर गया। इसी होटल में ठहरने की उसको हिदायत की गई थी। अगर्चे ज़ाहिर में उसने किसी से कुछ नहीं कहा, पर वहाँ के रंग-ढग से वह समझ गया कि मैं दोस्तों के बीच में हूँ। शाम के वक्त उसे एक आफ़िस में जाने के लिये बतलाया गया था, पर जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे बन्द पाया। मालूम हुआ कि उसके खुलने में भी अभी दो घंटे की देर है। केसी सोचने लगा कि इस बीच में क्या काम किया जाय। उसे याद आया कि पास ही में एक थियेटर है, वहाँ आज एक बहुत अच्छा देशभक्ति पूर्ण नाटक होने का नोटिस उसने देखा था। जब वह थियेटर में पहुँचा तो खेल शुरू हो चुका था। नाटक दरअसल बहुत ऊँचे दर्जे का था और खेलने वाले भी बड़े होशियार थे। पर केसी को जान पड़ा कि उसके आस-

पास के लोग नाटक को न देख कर किसी दूसरी चीज़ को देख रहे हैं और बड़े जोश में मालूम पड़ते हैं। पहिले तो वह कुछ न समझ सका, पर कुछ देर बाद उसने दो नौजवानों को चुपके-चुपके बात चीत करते सुना। एक ने दूसरे से धीरे से कहा—"वह काले बालों वाला आदमी, जो खम्भे के दाहिनी तरफ़ बैठा हुआ है।" दूसरे ने हँसते हुये जवाब दिया—"वह बड़ा आदमी है।" इसी वक्त दूसरा सीन शुरू हुआ और रोशनी बुझा दी गई। इससे केसी उस आदमी को अच्छी तरह न देख सका। जब इंटरवल हुआ तब वह आदमी को अच्छी तरह देख पाया। वह एक हट्टा-कट्टा, कटी हुई मूँछों वाला हँसमुख नौजवान था। उसके बदन में फुरती कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह अगर्चे लापरवाही के साथ बैठा था, पर उसके बैठने का ढङ्ग ऐसा था जैसे कि एक बैठा हुआ शेर मौक़ा पाते ही झपटने को तैयार रहता है।

केसी ने अपने पास बैठे हुए नौजवान से पूछा—"वह शख्स कौन है?"

नौजवान ने रूखेपन से कहा—"माफ़ कीजिये, मैं नहीं जानता।"

रङ्ग ढङ्ग से केसी समझ गया कि उसका सवाल आस-पास के लोगों को बहुत बुरा लगा है। इससे उसकी उत्सुकता और ज्यादा बढ़ गई। उसे भी मालूम हो गया कि ज्यादातर तमाशबीन आदमी को पहिचानते हैं, पर अब किसी से इस बारे में पूछताछ करना बेवकूफ़ी थी।

पर उस नौजवान शख्स का ख़याल केसी के दिल से किसी तरह दूर न हो सका। इसलिये जब थियेटर ख़त्म हो गया तो उसने उसके पास जाने की कोशिश की। पर लोगों की धक्कमधक्का में आगे बढ़ सकना बिलकुल नामुमकिन था। जब वह थियेटर के बाहर आया तो फिर तेज़ी से उस शख्स की तरफ़ बढ़ा। इतने में किसी ने उसके मुंह पर ऐसे जोर से घूँसा मारा कि वह चक्कर खाकर वहीं खड़ा रह गया। थोड़ी देर बाद जब वह सम्हला तो उसकी उत्सुकेता को बढ़ाने वाला नौजवान निगाह से ओझल हो गया था। उस भीड़ में मारने

वाले का पता लगा सकना भी नामुमकिन बात थी। इसलिये वह चुपचाप अपने होटल की तरफ़ चला आया। आज की घटना से उसे दुनिया के ढङ्गों का एक नया नजुर्बा हुआ।

वह रात भर आराम से सोता रहा। बीच में कभी-कभी बंदूक़ों के चलने की आवाज़ सुनाई दे जाती थी। सुबह नाश्ता करने के बाद वह फिर उस आफ़िस की तरफ़ चला। इस बार भी उसे बहुत देर तक बाहर ठहरना पड़ा। अखीर में उसे एक वृद्ध सज्जन के सामने पेश किया गया जिसके चेहरे से दया और मिलनसारी का भाव साफ़ झलक रहा था। उसने बड़े ग़ौर से केसी के प्रमाणपत्रों की जाँच की। ये काग़ज़ात अभी तक केसी की कमर में छुपे हुये थे। इसके बाद उसने एक नौजवान शख्स को बुलाया और केसी से कहा—"आप इनके साथ जाइये, ये आपका इंतजाम कर देंगे।"

कई दिन तक केसी तरह-तरह के कामों में लगा रहा। इस बीच में उसने हर एक महकमे के अफ़सरों से बातचीत की, ख़ास-ख़ास नेताओं के साथ उसकी मुलाकात कराई गई और कई लैकचरों को उसने सुना। इन लैकचरों में बतलाया गया था कि हम किन तरकीबों से दुश्मन का मुकाबला अच्छी तरह कर सकते हैं। इन्हीं दिनों में एक बार नई चाल की थाम्पसन मशीनगन की जाँच करके दिखलाई गई और बतलाया गया कि किस तरह उसको अलग-अलग हिस्सों में कर लिया जाता है और फिर किस तरह तमाम हिस्सों को जोड़ा जाता है। यह मशीनगन अब तक की दूसरी मशीनगनों से बहुत भयंकर थी।

इन नेताओं में केसी उस नौजवान शख्स से भी मिला जिसे थियेटर में देख कर वह इतना उत्सुक हो गया था। जब उसने केसी के मुँह से उस दिन का हाल सुना तो वह खिलखिल कर हँसने लगा। उसने केसी को बतलाया कि मुझे इस बारे में किसी बात का पता नहीं है।

केसी को सबसे ज्यादा ख़ुशी यह देखकर हुई कि राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर

का काम बड़े क़ायदे के साथ होता है। एक तरफ तो सरकारी फौज हैडक्वार्टर के काम करने वालों को पकड़ने के लिये छोटी छोटी गलियों और शहर के बाहर बसी हुई बस्तियों पर हमला करती फिरती थी और दूसरी तरफ राष्ट्रीय सैना के नेता बीच बाजार में बने हुये किसी बड़े मकान में अपना काम करते रहते थे। सरकारी अफसरों को इस बात का ख़याल भी न था कि राष्ट्रीय सेना वाले ऐसी आम जगहों में अपनी कमेटी और दूसरे काम करते होंगे। इन मुक़ामों में वे लोग हमेशा नियमपूर्वक अपना काम करते थे जिनके नाम अब इतिहास में लिखे जा चुके हैं और जिनकी गिरफ्तारी या मौत के लिये सरकार मुँह माँगा इनाम देने को तैयार थी। ये लोग शाम के वक्त खुले तौर पर बाजार में निकलते थे जहाँ हज़ारों आदमी उनको पहिचानते थे, पर कभी किसी ने इस को ज़ाहिर नहीं किया।

× × × ×

जिन दिनों केसी डबलिन में था उस समय मेलार्न में उसके साथी बराबर अपना काम कर रहे थे। उस ज़िले के राष्ट्रीय सेनापति ने एक बार मेलार्न से पुलनमोर तक की तमाम छोटी-छोटी पुलिस की चौकियों पर हमला किया। अगर्चे इन हमलों में ज्यादा कामयाबी नहीं-मिली, पर सरकारी अफसर समझ गये कि मेलार्न के गाँव में अब उनके क़दम जम नहीं सकते। इससिये उन्होंने वहाँ से अपने सिपाही बिलकुल हटा लिये और इस तरह यह गाँव बहुत बरसों के बाद विदेशी हुकूमत के बन्धन से छूट कर आज़ादी की हवा में साँस लेने लगा।

केसी ख़ुशी-खुशी अपना काम ख़तम करके मेलार्न में वापस आ गया। लौटते समय रास्ते में कोई खास घटना नहीं हुई। दो जगह सरसरी तौर पर उसकी तलाशी ली गई। एक बार सरकारी सिपाहियों द्वारा और दूसरी बार राष्ट्रीय सेना की हद में घुसने पर।

युद्ध और प्रेम

—:o:—

जब मेलार्न से सरकारी सेना की चौकी उठा ली गई तो वहाँ पर सरकारी क़ानून का जोर भी नहीं रहा। सिवा उन मौक़ों के जब कि फौज का कोई बड़ा दल आकर लोगों को तंग करता था, कोई सरकारी हुकूमत को नहीं मानता था।

इस समय सब लोगों के दिलों में एक नये उत्साह और प्रसन्नता का भाव पैदा हो रहा था। अब तक राष्ट्रीय दल की अदालत अपना काम छुप कर करती थी। अब सरकारी फौज के हट जाने से उसमें खुल्लमखुल्ला हर तरह के मुक़दमों का फ़ैसला किया जाने लगा। लोग समझते थे कि इस वक्त इन्साफ का काम पहिले से अच्छी तरह चलाना हमारा फ़र्ज़ है। इसलिये हर खयाल के आदमी इस काम में राष्ट्रीय दल वालों की मदद करते थे। राष्ट्रीय दल वाले भी इस बात की बड़ी कोशिश करते थे कि किसी के साथ बेइंसाफी न हो और लोग ग़ैर क़ानूनी तरीके से न चलने लगें।

जो लोग इस बड़ी जिम्मेवारी के काम को करने के लिये चुने गये थे, वे बड़े लायक और ईमानदार आदमी थे। इनमें फादर एमन भी शामिल था, जिसे सरकार ने कुछ दिनों तक क़ैद रख कर छोड़ दिया था। उसकी मिहनत से राष्ट्रीय अदालत का इन्तज़ाम बड़ा अच्छा रहता था।

जिस दिन वह राष्ट्रीय अदालत मेलार्न में खोली गई उस दिन बड़ा जलसा किया गया। सब लोग उम्मेद करने लगे कि अब एक नया युग आने वाला है जब कि परदेशी लोग किसी तरह की बेइंसाफ़ी या जुल्म नहीं कर सकेंगे। कुछ घरों में लड़ाई में अपने रिश्तेदारों के मारे जाने या सम्पत्ति के नष्ट हो

जाने के लिये रंज भी किया जाता था। पर साथ ही इस खयाल से कि हमारे तकलीफ उठाने से देश की आज़ादी में मदद मिली है, वे लोग एक तरह का गर्व अनुभव करते थे।

उस दिन शाम को जब राष्ट्रीय सेना के तमाम गोरिल्ला फौजी क़ायदे के साथ कंधों पर बंदूकें रख कर निकले, तो जोश का तूफ़ान आ गया। छोटे-छोटे लड़के गला फाड़ कर चिल्ला रहे थे। बड़ी उम्र के आदमियों की आँखें हर्ष और अभिमान से चमक रही थीं और बहुत दिनों के बाद आज वे खुल कर मन की बातें कर रहे थे। गोरिल्लाओं में किसी का लड़का, किसी का भाई, किसी का रिश्तेदार और किसी का दोस्त था। सब लोग उनको देख-देखकर प्रेम के आँसू बहा रहे थे और उनकी मंगल-कामना कर रहे थे।

रात के वक्त उस दिन की खुशी में नाच का जलसा किया गया, जिसमें युवकगण सुबह तक अपनी प्रेमिकाओं के साथ नाचते रहे। उस दिन जलसे में कितनों ही का ब्याह-शादी पक्का हुआ और कितनों ही की मामूली जान-पहिचान प्रेम के रूप में बदली। आखीर में जब गाँव के पुराने मास्टर जेम्स केसी ने 'सिपाहियों का गाना' गाया और सब गोरिल्ला भी उसके सुर में सुर मिला कर गाने लगे तो वहाँ एक भी आदमी ऐसा न था जिसके दिल में आयरलैण्ड और राष्ट्रीय सेना वालों के लिये श्रद्धा का भाव न पैदा हुआ हो। अगर कोई आदमी ऐसा होगा भी तो उस समय उसने अपने मन का भाव ज़ाहिर नहीं किया।

फोयले और केसी भी उस जलसे में शामिल हुये थे और बड़े खुश दिखलाई पड़ते थे। पर उनकी खुशी में कुछ रंज का भाव छुपा हुआ था जो दूसरे लोगों को मालूम नहीं पड़ता था। इस रंज का एक खास सबब था। जब से ये लोग राष्ट्रीय सेना के काम से बार-बार पुलनमोर जाने लगे थे, उनका दो नवयुवतियों से प्रेम हो गया था। इनमें से एक का नाम था कैथलीन और दूसरी का एली। ये दोनों मिसेज़ हेनली नामक विधवा की लड़कियाँ थी।

मिसेज़ हेनली की एक कपड़े की दूकान थी जो खूब चलती थी। आज उन दोनों ने वायदा किया था कि हम अपने भाई टाम के साथ जलसे में आयेंगी। पर किसी सबब से वे न आ सकीं और यही केसी और फ़ोयले के रंज का सबब था।

फोयले ने केसी से कहा—"मालूम होता है कि उनके न आ सकने का सबब टाम ही है। वह शराब के नशे में चूर हो गया होगा और इसीलिये उनको न ला सका।"

यहाँ पर टाम हेनली के बारे में भी कुछ बतलाना ज़रूरी है। करीब एक साल पहिले तक वह पुलनमोर का सबसे मशहूर फुटबाल खेलनेवाला और ताक़तवर नौजवान था। राष्ट्रीय सेना से भी उसका ताल्लुक़ था और वह इस काम में काफ़ी मदद दिया करता था। उसका स्वभाव बड़ा हँसमुख था और सब लोग उसे प्यार करते थे! उस समय तक उसके चालचलन में किसी तरह का ऐब न था। इसके बाद वह एकाएक शराब की तरफ़ झुका और उसमें पड़ कर सब कामों को भूल गया। कुछ लोग कहते थे कि उसके इस बदलाव का सबब यह था कि उसका अपनी प्रेमिका नेली बरनन से झगड़ा हो गया था। पर इस बात में बहुत कम सचाई थी। आजकल वह हद से ज्यादा शराब पी कर अपनी तन्दुरुस्ती और घर के पैसे को बर्बाद कर रहा था। उसके सबब से उसकी माँ का कारबार भी चौपट हो रहा था। फोयले और केसी जब कभी अपनी प्रेमिकाओं से मिलने जाते, तो उनको ऐसा मालूम होता था कि टाम के सबब से उसका तमाम घर बड़ी तकलीफ में है। उसकी मा और बहिनें इस बारे में बाहरी लोगों से बातचीत करना पसंद नहीं करती थीं और जब टाम को समझाया जाता तो वह चिल्ला कर कहने लगता था—"तुम लोग अपना काम देखो।"

× × × ×

दूसरे दिन फोयले और केसी अपने गोरिल्लाओं को पहाड़ी के भीतर

छावनी में भेज कर पैरगाड़ी पर पुलनमोर की तरफ रवाना हुये। उनको सेनापति से कुछ जरूरी बातें करनी थीं और साथ ही मिसेज़ हेनली के घर जाने का भी इरादा था। कस्बे में पहुँच कर उन को पता लगा कि सेनापति से शाम के वक्त मुलाकात हो सकेगी। इसलिये दोपहर के वक्त वे मिसेज़ हेनली के यहाँ पहुँचे। उस वक्त दुकान खरीदारों से भरी हुई थी और कैथलीन दूसरे नौकरों के साथ सौदा बेचने का काम कर रही थी। उससे बातचीत कर सकना नामुमकिन देख कर वे एली से मिलने के लिये रसोई घर में गये। पर वहाँ भी सिवा एक बुड्ढी नौकरानी के और कोई न था। उस नौकरानी ने बतलाया कि–"आज मा की तबियत कुछ खराब है और एली ऊपर के कमरे में उसकी सेवा में लगी हुई है।"

थोड़ी देर बाद एली नीचे आई और कुछ संकोच के साथ बात करने लगी। जब फोयले ने उस से पूछा कि वह रात को नाच के जलसे में क्यों आई, तो वह कुछ जवाब न दे सकी और उसके चेहरे से बड़े दुःख का भाव ज़ाहिर होने लगा। यह देख कर फोयले ने केसी से कहा--"केसी, तुम इस वक्त जाओ। मैं तुम से कुछ देर बाद मैथ्यू के मकान पर मिलूँगा। मैं एली से अकेले में कुछ बात करना चाहता हूँ।"

दुकान से जाते समय केसी, कैथलीन से मिला और कहा--"जब फुरसत होगी तो मैं फिर तुमसे मिलने आऊँगा।"

घन्टे भर बाद फोयले भी आ पहुँचा। वह बड़े गुस्से में था। केसी के पूछने पर उसने कहा–"मैंने एली को तमाम बातें साफ-साफ कहने के लिये बहुत दबाया। उससे मुझे मालूम हुआ कि यह तमाम खराबी उस बदमाश टाम के सबब से है। पिछले महीने से उसका शराब पीना बहुत बढ़ गया है और वह हर रोज रात को शराब पीकर घर में बड़ा दंगा फसाद मचाता है। वह रुपये के लिये घर वालों को बहुत तंग करता है और उसके कामों से तीनों मा बेटी बड़ी दुखी हो रही हैं। कल वह दुकान की सन्दूक़ में से तमाम रुपया

निकाल ले गया। जब मा उसको समझाने लगी तो टाम ने उसे एक सन्दूक पर ढकेल दिया। अगर्चे एली ने शर्म के मारे मुझसे नहीं कहा, पर मेरा अन्दाज़ है कि उसने मा को मारा भी है। उसको चोट ज्यादा नहीं लगी है, पर वह शर्म और बदनामी के सबब से बिस्तर पर पड़ी है। यही हालत एली और कैथलीन की है। टाम अभी तक शराब की खुमारी में ऊपर पड़ा सो रहा था। मैं चाहता था कि उसके कमरे में जाकर दस-बीस लातें लगाऊँ। पर एली ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया।"

वे दोनों बड़ी देर तक इस मामले पर गौर करते रहे। ऐसी मुसीबत के समय अपनी भावी पत्नियों के कुटुम्ब की मदद करना उनका फ़र्ज था। पर बहुत कुछ गौर करने पर भी कोई ऐसी तरकीब न सूझी जिससे उनका मतलब पूरा हो सकता। साथ ही एली और कैथलीन की राय लेना भी जरूरी था, क्योंकि वे बड़ी स्वाभिमानिनी और अपने घर की इज्जत का खयाल रखने वाली लड़कियाँ थीं। इसलिये वे फिर मिसेज़ हेनली के मकान पर गये और उन दोनों बहनों से इस बारे में बातचीत की। पर इस वक्त भी कोई तरकीब न निकल सकी। उनको यह भी जान पड़ा कि इस मामले में ज्यादा बातें करने से एली और कैथलीन को दुःख होता है। टाम में सब कुछ ऐब होने पर भी वे अपने भाई को दिल से प्यार करती थीं और कोई ऐसी बात उनको मंजूर न थी जिससे टाम को तकलीफ हो। वे सिर्फ यह चाहती थीं कि वह किसी तरह शराब पीना छोड़ दे और पहिले की तरह रहने लगे।

शाम के वक्त फ़ोयले और केसी सेनापति से मिलने गये। वहाँ से लौटते वक्त केसी के दिमाग में एक नई तरकीब आई जिसे फोयले ने भी पसंद किया। उनका इरादा था कि टाम को नशे की हालत में पकड़ कर पहाड़ी के भीतर ले जायँ और वहाँ ढंग के साथ उसकी शराब छुड़ाई जाय। वे बड़ी देर तक इस बारे में बातें करते रहे। फिर उन्होंने एली और केथलीन को भी

अपना इरादा कुछ घटा बढ़ा कर सुनाया और समझा-बुझा कर उनको राजी कर लिया।

उस दिन रात के वक्त जब टाम मेगर शराबखाने से झूमता-झामता आ रहा था तो रास्ते में उसकी मुलाकात केसी और फोयले से हुई। वे भी शराबी की तरह लड़खड़ा कर चल रहे थे। उनकी यह हालत देख कर टाम खूब हँसने लगा, क्योंकि उसके सामने वे लोग बड़े परहेज़दार बना करते थे। वह खुशी से उनके साथ एक छोटी सी गली में चला गया। वहाँ पर फोयले ने खूब तेज शराब की एक बोतल निकाली। उन दोनों ने धोखा देने के लिये बोतल मुँह से लगाई, पर एक बूँद भी शराब नहीं पी। इसके बाद उन्होंने बोतल टाम को दे दी और वह पूरी बोतल गटक गया। वह केसी और फोयले की यह 'उदारता' देख कर बड़ा खुश हुआ और उनके साथ एक मोटर गाड़ी में बैठ गया। मोटर तेजी के साथ मेलार्न की तरफ चली। हवा लगने से टाम गहरी नींद में सो गया। मेलार्न पहुँच कर उसको मोटर से उतारा गया और एक चारपाई पर लिटा कर कुछ गोरिल्लाओं की मदद से पहाड़ी के भीतर पहुँचा दिया गया। वहाँ उसे एक खलिहान के भीतर, जहाँ गोरिल्लाओं का पड़ाव था, रखा गया।

सुबह दस बजे टाम को होश आया। उसने देखा कि पास ही फोयले खड़ा हुआ मुस्करा रहा है। वह बड़ी देर से उसके जगने की राह देख रहा था। टाम को जगा हुआ देख कर वह बोला—"टाम, तबीयत कैसी है?"

टाम ने खुमारी की हालत में जवाब दिया—"बहुत खराब है।" फिर वह चारों तरफ देख कर बोला—"अरे, मैं यहाँ कहाँ से आ गया?"

फोयले ने हँसते हुये कहा—"अपनी क़सम जो मुझे कुछ भी मालूम हो। हम सब लोग नशे में थे और तुमने हमारे साथ आने की ज़िद की थी। खैर तुम्हारे लिये शराब हाज़िर है।"

टाम ने ताज्जुब से कहा–"सचमुच।" इतने में फोयले ने उसके सर के पीछे रखी हुई आलमारी में से एक बोतल निकाल कर उसका डाट खोला। जब टाम ने बोतल को मुँह से लगा लिया तब उसको एतबार हुआ कि फोयले उसके साथ मजाक नहीं कर रहा है। जब उसने देखा कि फोयले ने दूसरी बोतल निकाल कर उसका भी डाट खोल डाला तब तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

फोयले ने दूसरी बोतल को टाम के पास रख कर कहा—"मुझे एक काम से बाहर जाना है। यहाँ पर अभी शराब की कई बोतलें रखी हैं, तुम खुशी से जितना चाहो, पी सकते हो।"

फोयले के बर्ताव से टाम को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह गुनगुना कर कहने लगा "फो-फो-फोयले बड़ा अच्छा आदमी है।" वह दूसरी बोतल भी पी गया और तीसरी के लिये हाथ बढ़ाया। चार बोतलें खतम कर चुका तब वह बहुत खुश होकर खड़ा हो गया। इस समय उसे कुछ भूख भी मालूम हुई। बाहर जाकर पूछने पर पता लगा कि सब लोग सुबह का खाना खा चुके हैं और अब कुछ नहीं बचा है। इन वालंटियरों में से कितने ही उसके पहिचान वाले भी थे। उसने फोयले के लिये पूछा तो कहा गया कि वह बाहर गया है। इधर-उधर की कुछ बातें करके वह अपने कमरे में वापस आ गया और धीरे-धीरे शराब की कई बोतलें खाली कर दीं। इतने में बाहर से खाना पकने की सुगंध आई। पहले तो उसका खयाल था कि जब भोजन तैयार हो जायेगा तब मुझे बुला लिया जायेगा। पर जब उसने देखा कि सब लोग घास पर बैठ कर खाना खाने लगे तो वह दौड़ता हुआ उनके पास पहुँचा और बोला–"क्या खाना शुरू कर दिया?"

केसी ने जवाब दिया–"हाँ, हम लोग भोजन कर रहे हैं।"

टाम ने फोयले की तरफ देख कर कहा—"मुझे बड़ी भूख लगी है, बैठने को थोड़ी जगह दो।"

फोयले ने बड़ा रंज ज़ाहिर करते हुये कहा—"टाम, हम लोगों के पास खाने का सामान बहुत कम है।" इसी समय उसने कोई आध सेर का एक मांस का टुकड़ा खाने के लिये उठाया।

अब फ़ोयले के बारे में टाम की राय कुछ बदल गई। उसको कुछ गुस्सा भी आया और उसने नाराज होकर पुरुनमोर का रास्ता पूछा। कई लोगों ने हाथ उठा कर उसे रास्ता दिखला दिया। वह बिना किसी से बातचीत किये उस रास्ते पर चल पड़ा। दो फर्लांग जाने के बाद एक पहरेदार मिला जिसने उससे परवाना मांगा। टाम ने गुस्से से जवाब दिया—"परवाना किस बात का? फोयले और केसी कल रात को मुझे यहाँ ले आये थे और अब मैं अपने घर वापस जा रहा हूँ।"

पहरे वाले वालंटियर ने कहा—"मुझे हुक्म दिया गया है कि कोई आदमी कप्तान फोयले के परवाने के बिना बाहर नहीं जा सकता। अगर तुम मेरी बात न मान कर आगे बढ़ने की कोशिश करोगे तो मैं गोली मार दूँगा।"

पहरेदार के गम्भीर चेहरे और रूखी बातों से टाम को एतबार हो गया कि वह मजाक नहीं कर रहा है। इसलिये वह लाचार होकर बड़बड़ाता हुआ फिर वापस आ गया। इस समय वालंटियर खाना खतम कर चुके थे और बहुत सा सामान बचा रखा था। उसने पहरेवाले की बातें फोयले को सुनाईं। फोयले ने जवाब दिया—"मैं लाचार हूँ। आज सुबह ही सेनापति ने मेरे पास खबर भेजी है कि जब तक वह यहाँ का मुआयना न कर जाय तब तक कोई आदमी यहाँ से बाहर नहीं जा सकता। उसके आने में दस-पंद्रह दिन की देर है; तब तक मैं किसी को बाहर जाने का परवाना नहीं दे सकता।"

अब टाम कुछ घबड़ाया और कहने लगा—"तो अब मैं घर कैसे पहुँचूँगा। अगर घर वालों को खबर न हुई कि मैं यहाँ हूँ तो उनको बड़ा फिक्र होगी।"

फोयले ने जवाब दिया—"इतना काम मैं कर सकता हूँ। तुम घर वालों के लिये जो चिट्ठी लिखोगे वह उनको पहुँचा दी जायगी। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कर सकता।"

टाम को बड़ा गुस्सा आ रहा था। पर कुछ ज़ोर चलता न देख कर वह अपने कमरे में लौट गया और शराब की दो बोतलें खतम कर डालीं। इस समय बाहर सन्नाटा था। तमाम वालंटियर कहीं चले गये थे और सिर्फ एक आदमी सफाई करने के लिये वहाँ रह गया था। टाम के पेट में भूख के मारे चूहे दौड़ रहे थे। अखीर में उससे न रहा गया और बाहर जाकर मांस का एक टुकड़ा उठा लिया। फ़ौरन ही किसी ने पीछे से आकर उसके गाल पर एक चपत मारी और डाट कर कहा—"इसको रखो। इस छावनी के भीतर लूट-मार नहीं हो सकती।"

चपत लगने से टाम बड़े ताव में आया। उसने सर फिरा कर देखा कि एक बदसूरत शकल का बुड्ढा सिपाही खड़ा हुआ है। टाम ने उससे कहा—"तुम्हारी उम्र मुझसे लड़ने लायक नहीं है। पर अगर तुमने मुझको फिर हाथ लगाया तो तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ कर रख दूँगा। मुझे बड़ी भूख लगी है और मैं यह मांस का टुकड़ा जरूर लूँगा।"

बुड्ढे सिपाही ने मुँह बना कर कहा—"अरे बेटा, तुम मरना तो नहीं चाहते। तेरे जैसा शराबी आदमी पांच मिनट भी मेरे सामने नहीं ठहर सकता। अपना कोट उतार डालो, और अगर तुम पाँच मिनट तक मेरे मुक़ाबिले में डटे रहे तो जितना चाहो खा लेना। जानते हो, मेरा नाम ओहारा है।"

एक वक्त ऐसा था जब कि पुलनमोर के पहलवानों में टाम सब से अच्छा घूँसेबाज़ समझा जाता था। उसे अब भी अपनी ताक़त का वैसा ही घमण्ड था। ओहारा की जली-कटी बातें सुन कर वह उस पर टूट पड़ा। दो मिनट तक दोनों कुत्ते-बिल्ली की तरह लड़ते रहे। इस दरम्यान ओहारा ने बीस-

पचीस ऐसे ज़ोर के घूंसे मारे कि टाम होश भूल गया और जमीन पर गिर पड़ा।

यह देख कर ओहारा बोला-"क्यों बड़ी बातें बना रहा था। तू एक छोटे लड़के से भी नहीं जीत सकता।"

टाम चुपचाप ओहारा की फ़टकार सुनता रहा। अपनी कमज़ोरी पर उसे बड़ी शरम मालूम हो रही थी। वह उठ कर बिना कुछ कहे अपने कमरे में चला गया और काँपते हुये हाथों से शराब की बोतल खोल कर एक गिलास भरा। पर उसके पीने की हिम्मत उसे नहीं हुई। वह गिलास को हाथ में लेकर कुछ देर तक देखता रहा और फिर एकाएक भरे गिलास को जमीन पर फेंक दिया। वह कहने लगा—"इस कमबख्त शराब ने ही मेरे शरीर को मिट्टी कर दिया। एक साल पहले मैं दो-चार घूंसों में ही उसका कचूमर निकाल सकता था। एक बुड्ढे आदमी ने मुझे गिरा दिया—कितने शरम की बात है।"

वह दो घंटे तक वहीं पड़ा रहा। उसका मन घृणा, निराशा और क्रोध के समुद्र में गोते खा रहा था। उसके बाद फिर उसका हाथ अपने आप शराब की बोतल की तरफ बढ़ा। आधी रात के वक्त उसने वहाँ से निकल भागने की कोशिश की, पर पहरेदार की ललकार सुनकर चुपचाप लौट कर पड़ रहा। वह रात टाम को उम्र भर याद रही होगी। भूख के सबब से उसे जरा भी नींद नहीं आई और तमाम वक्त सोच-विचार और बेचैनी में कटा। सबेरे सात बजे उसकी आँख जरा लगी।

जब वह उठा तो देखा आलमारी में शराब की दूसरी बोतलें रखी हुई हैं। पर आरजू, मिन्नत, खुशामद सब कुछ करने और गालियाँ देने पर भी कोई खाने की चीज उसे न मिल सकी। आखीर में उसने फ़ोयले को पकड़ लिया।

फोयले ने कहा—"टाम, हम अपने खाने का सामान किसी बाहरी और

बेकार आदमी को नहीं दे सकते। इसके सिवा जो तुम्हारा सब से जरूरी भोजन है, उस शराब को हम तुम्हें काफ़ी दे देते हैं। अगर तुम उसके अलावा कुछ और चाहते हो तो उसके लिये छावनी के भंडारी के पास जाओ। पर यह याद रखो कि भोजन के बदले में वह तुमसे काम करायेगा।"

पर भंडारी के पास जाने की टाम को इच्छा न हुई। क्योंकि यह वही शख्स था जिसने कल उसे पीटा था अखीर में शाम के वक्त जब भूख के सबब से उसकी बुरी हालत हो गई और जान बचाने का कोई उपाय दिखलाई न दिया तो वह भंडारा के पास पहुँचा। ओहारा ने उसको पाखाने के लिये एक लम्बी नाली खोदने का काम दिया। रात के दस बजे तक टाम नाली को खोदता रहा और तब उसे खाने का सामान दिया गया। इसके बाद वह इतना थक गया कि शराब की तरफ़ उसका ख्याल भी नहीं गया और पड़ते ही खुर्राटे भरने लगा।

उस दिन से टाम कड़ी मिहनत करके अपनी रोटी कमाने लगा। ओहारा उससे गुलामों की तरह रात दिन काम कराता था। एक हफ्ते के भीतर टाम की हालत बिलकुल बदल गई। अब वह ओहारा की सख्ती से बहुत तङ्ग आ गया था और उससे लड़ने को तैयार हो गया। दोनों में फिर घूँसेबाजी शुरू हुई और पद्रह मिनिट तक बड़े जोर की लड़ाई होती रही। अखीर में ओहारा ने टाम को गिरा दिया, पर वह खुद भी हाँफने लगा और उसकी एक आँख में भी कुछ चोट लगी।

जब टाम का होश ठिकाने आया तो ओहारा ने कहा—"अब की बार तुमने कुछ बहादुरी दिखलाई। मैं इतना बुड्ढा हो गया, पर आज तक कोई आदमी मुझसे घूँसेबाजी में नहीं जीता। पिछली बार तो मैंने तुमको खड़े होते ही गिरा दिया था। पर अब की बार मैं खुद मुशकिल से बच सका। मालूम पड़ता है कि अब तुम आदमी बनते जाते हो।"

ओहारा की जबान से अपनी तारीफ़ सुन कर टाम को बड़ा संतोष हुआ।

फिर कभी उसने ओहारा के हुक्म को मानने से इनकार नहीं किया और काम को बड़ी मिहनत और शौक से करने लगा। तीन चार दिन बाद वह फोयले से मिला और बोला—"कप्तान, तुम कब तक मुझे यहाँ रखना चाहते हो?"

फोयले ने नरमी के साथ कहा—"जब तुम यह दिखला दोगे कि तुम एक मर्द की तरह बर्ताव करते हो और खराब लोगों की संगत में पड़ कर अपने शरीर और घर को बर्बाद नहीं करोगे, उसी समय तुम यहाँ से जा सकते हो।"

टाम ने कुछ शरम के साथ जवाब दिया—"फोयले, मैं तुम्हारा बड़ा अहसानमन्द हूँ। मैं सचमुच बर्बादी की तरफ जा रहा था। पर अब मैं कभी इस रास्ते पर क़दम नहीं रखूँगा। तुम जिस तरह चाहो मेरी जाँच कर सकते हो।"

दो-तीन दिन बाद फोयले और केसी के साथ टाम हेनली अपने घर पहुँचा। अब वह बिलकुल नया आदमी बन गया था और उसकी मा और बहिनों ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया। कुछ ही समय में राष्ट्रीय सेना और खेलने के क्लब के साथ फिर उसका ताल्लुक हो गया। सब से ज्यादा अचम्भे की बात यह हुई कि नेलो बरनन फिर उसकी प्रेमिका बन गई।

टाम हमेशा ओहारा की बड़ी इज्जत करता रहा। वह बातचीत करते समय कितनी ही बार अपने दोस्तों से कहा करता था—"तुम ओहारा को जानते हो? वह एक असली आदमी है!"

———

काल के मुंह से निकल आये

मेलार्न और उसके पास की फौजी चौकियों के हटाने के कई सबब थे। एक सबब यह था कि पुलनमोर के पास मंस्टर जिले में राष्ट्रीय सेना का जोर बहुत बढ़ गया था और वहाँ की सरकारी सेना के लिये उनका दबा सकना नामुमकिन हो गया था। इसलिये सरकारी अफसरों ने तय किया कि मेलार्न से सेना हटा कर मंस्टर वालों की मदद के लिये भेजा जाय। इस पर राष्ट्रीय सेना वालों ने निश्चय किया कि अब पुलनमोर की छावनी पर ही छोटे-मोटे हमले किये जाय और उनके कामों में हर तरह से रुकावट डाली जाय जिससे वे मंस्टर की सेना की मदद न कर सकें।

इस सबब से फोयले और उसके गोरिल्लाओं को मेलार्न छोड़ना पड़ा। उनके जिम्मे यह काम रखा गया कि वे पुलनमोर और बालून नामक कस्बों के बीच में रेल, तार और सड़कों को खराब करते रहें और इस तरह फौज के आने-जाने में रुकावट डालें।

फोयले ने अपने वालंटियरों को छोटे-बड़े कई हिस्सों में बाँट दिया। इस वक्त भी उनका हैडक्वार्टर पहाड़ी के भीतर था, पर उनका कार्य-क्षेत्र इतना फैला हुआ था कि कई कई दिन तक उनको बाहर ही रहना पड़ता था। इन दिनों वे या तो मैदान में किसी छुपी हुई जगह में रहते थे या इक्के-दुक्के किसानों की झोंपड़ियों का सहारा लेते थे। इन किसानों को गोरिल्लाओं से बड़ा प्रेम था और उनको इस बात का अभिमान था कि वे उनकी खातिर करने को चौबीसों घन्टे तैयार रहते हैं। बहुत इनकार करने पर भी ये किसान उनको अपने बिस्तरों पर सुलाते थे और आप जमीन पर पड़ रहते थे। अक्सर यह

देखा जाता था कि सफेद बालों वाली बुढ़ियाएँ गोरिल्लाओं को आराम पहुँचाने के लिये अपना खाना, सोना भूल जाती थीं और उनकी निगरानी के लिये रात-रात भर जागती रहती थीं।

एक दिन केसी के मातहत दल ने बालून के पास एक रेल के पुल को उड़ा दिया। इस पुल पर से फौजी सिपाहियों की एक गाड़ी निकलने वाली थी। अपना काम पूरा करने के बाद ये लोग तेजी के साथ एक पास वाले जंगल में लौट गये। इस जंगल में एक छोटा सा मकान बना हुआ था जिसमें पहिले एक अंगरेज साधु रहता था। पर जब से राष्ट्रीय दल और सरकार में लड़ाई होने लगी थी तब से वह उस बंगले को छोड़ कर अपने देश को चला गया था। इस वक्त राष्ट्रीय सेना वालों ने उसका अपना अड्डा बना रखा था और वे अक्सर उसमें ठहरा करते थे। यह मकान बहुत एकान्त में था और इसलिये गोरिल्ला इसे बहुत हिफाजत की जगह समझते थे। यह मकान सड़क से तीन मील दूर था और एक टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी वहाँ तक जाती थी जो इस समय बड़ी खराब हालत में थी। इस जगह को आस पास के देहाती लोग 'डेविल्स बैएड' (शैतानी चक्कर) के नाम से पुकारते थे।

केसी के साथ नौ पिस्तौल वाले और दो बन्दूक वाले, सब मिला कर ग्यारह गोरिल्ला थे। ये लोग रात को दस बजे उस मकान में पहुँचे। इनको पिछली दो रातें जागते हुये बीती थीं। इसलिये झटपट कुछ खा-पीकर सब लोग कम्बल ओढ़ कर जमीन पर सो रहे। सिर्फ दो आदमी मकान के सामने और पीछे की तरफ पहरा देने को जागते रहे। ये पहरे वाले घन्टे घन्टे में बदले जाते थे।

× × × ×

अब थोड़ी देर के लिये इन गोरिल्लाओं को इस मकान में सोता हुआ छोड़ कर हमको बाहर निकलना चाहिये। जब राष्ट्रीय सेना वाले इस मकान की तरफ आ रहे थे तो उनके पीछे-पीछे क्लर्कों की सी पोशाक पहिने एक नौजवान

शख्स भी चल रहा था। वह इन लोगों से इतने फासले पर था कि कोई उसे देख नहीं सकता था। जब वे लोग उस घने जङ्गल में जाकर निगाह से ओझल हो गये और यह मालूम हो गया कि वे उस मकान में ठहरने के लिये जा रहे हैं तो वह नौजवान आदमी पीछे लौट आया।

सड़क पहुँच कर वह झाड़ियों के भीतर छुपाई हुई अपनी पैरगाड़ी को ढूँढने लगा। पर बहुत देर तक मिहनत करने पर भी उसका पता न लगा। तब वह बकता-झकता हुआ पैदल ही बालून की तरफ रवाना हुआ और करीब साढ़े ग्यारह बजे सरकारी फौज की छावनी में पहुँचा। वह तुरंत फौज के बड़े अफसर मेजर स्मिथ के सामने हाजिर हुआ।

मेजर स्मिथ उसे देखते ही बोला—"कहो कप्तान ओकूले, तुम यहाँ कहाँ आ पहुँचे? क्या तुम भी पुल के उड़ने की आवाज सुन कर बालून आये हो? मालूम होता है कि हम लोगों के इतनी कोशिश करने पर भी वे कंगले फिर से निकल भागे।"

ओकूले ने जवाब दिया—"मेजर साहब, मैं किसी दूसरे ही काम के लिये आप से मिलने आ रहा था। पुल के उड़ने का धड़ाका होने के थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि दस ग्यारह बाग़ी मुझसे थोड़ी दूर पर खेतों के बीच से दौड़े हुये जा रहे हैं। उनमें से दो-एक आदमियों ने मुझे देख लिया और इससे मैं बहुत डरा। पर उनको मेरे ऊपर शक न हुआ और वे अपने रास्ते चले गये। मैंने सोचा कि जरा इनके पीछे चल कर देखूँ कि ये कहाँ जाते हैं। अपनी पैरगाड़ी झाड़ियों में छुपा कर मैं चुपके-चुपके उनके पीछे चला। मैंने देखा कि ये 'डेविल्स बैएड' वाले मकान की तरफ़ जा रहे हैं। हमने इस मकान पर कभी शक नहीं किया था। मुझे पूरा भरोसा है कि आज रात को वे उसी मकान में ठहरेंगे और अगर हम उनको सोते हुये घेर लें तो बड़ा काम बन जाय। मैं उस जगह को अच्छी तरह जानता हूँ, क्योंकि जर्मनी की लड़ाई के पहिले मैं छुट्टियों में अकसर वहाँ पर झील में मछलियों का शिकार करने

जाया करता था। अगर होशियारी से काम किया जाय तो उस मकान से बीस गज के फासले तक मजे से छुप कर पहुँचा जा सकता है। अगर ज़रूरत हो तो मैं भी आप लोगों के साथ चलने को तैयार हूँ।"

कप्तान ओकूले की बात सुन कर मेजर साहब खुशी के मारे उछल पड़े। वे बोले—"शाबास ! शाबास !! मि० ओकूले, तुम सचमुच बड़े चतुर आदमी हो। तुम को जरूर हमारे साथ चलना होगा। हम उन लोगों के इस तरह साफ़ बचकर निकल जाने से बड़े रंज में थे और सोच रहे थे कि देखें बड़े सेनापति साहब कैसी खरीखोटी सुनाते हैं। इस पुल के उड़ने की आवाज पुलनमोर तक पहुँची थी और वहाँ से बहुत सी सेना हमारी मदद के लिये आई थी। पर बागियों का कुछ पता न लगा और हमारे ज्यादातर सिपाही नाउम्मेद होकर लौट आये। बचे हुये लोग भी अब आते ही होंगे। तब तक हम एक जगह बैठ कर हमला करने का कोई ढंग सोच लें। अगर हम उन सूअरों को पकड़ सकें तो बहुत कुछ संतोष हो सकेगा !"

मेजर स्मिथ ने एक घंटी बजाई और थोड़ी देर में ही तमाम फौजी और जासूसी महकमे के अफसर एक बड़ी मेज के चारों तरफ़ बैठ कर उस मुकाम का नकशा सामने रख कर आपस में सलाह करने लगे। कप्तान ओकूले उसी जिले का निवासी था और आजकल सरकारी फौज के जासूसी महकमे में काम करता था। मेजर को उस पर सब से ज्यादा भरोसा था। आखीर में उन लोगों ने हमला करने का ढङ्ग पूरी तरह से तय कर लिया।

करीब एक बजे रात को सरकारी सेना के तीन बड़े बड़े दल मशीनगनों और बन्दूकों से सज कर 'डेविल्स बैएड' की तरफ़ रवाना हुये। इनमें से एक दल पैरगाड़ी वालों का था जिनका मुखिया कप्तान ओकूले बनाया गया था। यह दल बहुत सा चक्कर काट कर धीरे-धीरे उस मकान के पीछे की तरफ़ चला। बाकी दो दल मोटर लारियों में सवार थे। पगडंडी के पास पहुँच कर उन्होंने अपनी गाड़ियों को मजबूत पहरे में छोड़ दिया और पैदल सिपाही होशियारी

के साथ उस मकान की तरफ़ रवाना हुये। चाँदनी रात के सबब से रोशनी बहुत काफ़ी थी, पर वे लोग आवाज होने के डर से बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे।

सब से पहिले कप्तान ओकूले का दल उस मुकाम पर पहुँचा। उस वक्त करीब ढाई बज चुके थे। वे लोग मकान से तीस गज की दूरी पर एक नाली में छुप कर बैठ गये। वे बिलकुल चुपचाप थे और ज़ोर से सांस भी नहीं लेते थे। उस नाली में कीचड़ बहुत था और उससे उनको बड़ी तकलीफ हो रही थी। पर जब तक दूसरे लोग न आ जायँ तब तक वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। उनको पूरी उम्मेद थी कि आज हमारी कामयाबी होगी और इस खुशी में वे तमाम तकलीफ़ों को धीरज के साथ सह रहे थे। उनको इस हालत में करीब आधे घंटे तक बैठना पड़ा, जब कि दूसरे दोनों दल वहाँ आ पहुँचे। कुछ देर बाद उस मकान से धीरे-धीरे बात करने की आवाज आई। यह देख कर सरकारी फौज वाले कुछ घबड़ाये, और अगर अचानक कोई नई बात हो जाय तो उसके लिये तैयार होकर बैठ गये। पर कुछ देर बाद आवाज़ आना बन्द हो गया और फिर सन्नाटा छा गया।

× × × ×

करीब तीन बजे राष्ट्रीय सेना वालों का पहरा बदला। टाम नोलन और ओहारा आँखें मलते हुये पहरे की जगह पर खड़े हुये और पहिले दोनों वालंटियर सोने लगे। इन्हीं की बातचीत बाहर खड़े हुये सिपाहियों ने सुनी थी। उस मकान में दो बैठने के कमरे, एक सोने का कमरा और एक रसोई घर था। मकान के ऊपर छत की जगह फूस का छप्पर था। मकान के आगे और पीछे के दरवाज़े मजबूत लकड़ी के बने थे। पीछे के कमरे में एक खिड़की थी और सामने वाले में दो। टाम नोलन पीछे के कमरे में जाकर पहरा देने लगा, पर अभी नींद के सबब से उसकी आँखें पूरी तरह न खुली थीं। ओहारा सामने वाले कमरे में था और वह अपनी आदत के माफिक चारों तरफ़ निगाह गड़ा-गड़ा कर देख रहा था।

थोड़ी देर तक कोई खास बात न हुई। अचानक उसके चेहरे का भाव बदला और उसने अपनी बन्दूक उठाकर एक मुकाम पर निशाना लगाया। वह अपने मन में कहने लगा—"कुछ समझ में नहीं आता। मुझे तो यह कोई सरकारी फौज का आदमी जान पड़ता है।" उसे यह मालूम न था कि उस वक्त वह मकान चारों तरफ़ से सरकारी फौज से घिरा हुआ था।

थोड़ी देर बाद उसे अच्छी तरह मालूम हो गया कि फ़ौज वाले उस मकान के पास आ पहुँचे हैं। एक हवलदार धीरे-धीरे खिसकता हुआ बँगले के पास आ रहा था। एक बार ग़लती से उसका सिर जरा ऊँचा हो गया। उसी समय ओहारा ने एक गोली से उसका काम तमाम कर दिया। बंदूक की आवाज़ सुन कर तमाम गोरिल्ला जग पड़े।

ओहारा ने चिल्ला कर कहा—"होशियार हो जाओ। दुश्मन आ पहुँचा है।"

ओहारा के गोली चलाते ही सरकारी फौज भी उस मकान पर मशीनगनों और बंदूकों से गोलियों की बौछार करने लगी। आफत को सर पर आया देख कर राष्ट्रीय सेना के वालंटियर जहाँ तक हो सका जल्दी बचाव के मुकामों पर खड़े हो गये। कुछ लोगों ने इधर उधर पड़े हुये ईंट पत्थरों को लाकर खिड़कियों के सामने रख दिया और उनकी आड़ में से दुश्मन पर गोलियाँ चलाने लगे। इतने में केसी ने हुक्म दिया—"तुम लोग ज्यादा गोलियाँ मत चलाओ। हमारे पास सामान थोड़ा है और न मालूम कब दुश्मन हम पर हमला बोल दे।"

असल में सरकारी फौज वालों का इरादा यह था कि कुछ लोग मकान की बगल में होकर जायें और खिड़कियों में से भीतर बम फेंक कर चले आवें। पर वे ओहारा की निगाह से न बच सके और उनका इरादा रद्दी हो गया।

गोरिल्लाओं को गोली चलाना बंद करते देख कर मेजर स्मिथ की हिम्मत बढ़ी। तो भी उसको शक था कि राष्ट्रीय सेना वाले किसी तरह की चालाकी

कर रहे हैं। उसने अपने आदमियों को भी गोली चलाने से रोक दिया और बड़े घमण्ड के साथ चिल्ला कर राष्ट्रीय सेना वालों से कहा—"तुम लोग हार मान कर बाहर आ जाओ। हमने तुमको चारों तरफ से घेर लिया है और अब तुम सिवा हार मानने के किसी तरह अपनी जान नहीं बचा सकते।"

केसी ने भीतर से जवाब दिया—"अच्छा, जरा देर ठहरो। हम लोग आपस में सलाह कर लें।"

मेजर स्मिथ ने तेज़ी के साथ कहा—"ठीक है। पर जल्दी करो मैं सलाह करने के लिये तुमको दो मिनट का वक्त देता हूँ।"

केसी ने अपने साथियों को एक जगह इकट्ठा करके कहा—"भाइयो, तुम क्या चाहते हो? हम लोग चारों तरफ से घिरे हुये हैं और बचने का कोई रास्ता नहीं है। तुम में से अगर कोई आदमी हार मान कर दुश्मन की शरण में जाना चाहे तो मैं उसे रोकना नहीं चाहता। पर मैं तो अपनी जगह से हट नहीं सकता और अखीर दम तक लड़ कर मरूँगा। जो लोग हार मानना चाहते हों वे हट कर दूसरी तरफ खड़े हो जावें।"

अगर्चे सैकड़ों सरकारी सिपाहियों के मुकाबले में इन बारह गोरिल्लाओं का लड़ सकना नामुमकिन था और थोड़ी ही देर में सब का मारा जाना निश्चित था, तो भी कोई आदमी अपनी जगह से नहीं हटा; न कोई कुछ बोला। अखीर में ओहारा ने अपनी बन्दूक़ में नया कारतूस भरते हुए कहा—"हार मानने की बात को चूल्हे में जाने दो। मैं तो सिवा यमराज के और किसी के सामने हार मानना नहीं जानता। यह सच है कि मुझे भी मरना पड़ेगा, पर जब तक मेरे अन्दर जरा भी जान बाकी रहेगी तब तक मैं, अगर हथियार न होगा तो खाली हाथों और दाँतों से ही लड़ूंगा।"

केसी ने तमाम लोगों पर फिर एक बार निगाह डाल कर कहा—"अच्छा, सब लोग अपनी अपनी जगह पर खड़े हो जाओ। जब तक जिन्दगी है तब

तक उम्मेद भी है। अपनी गोली-बारूद होशियारी से खर्च करो। भगवान हमारी मदद करेंगे।"

इसी समय मेजर स्मिथ की जोरदार आवाज फिर सुनाई दी—"वक्त खतम हो गया। तुम लोगों ने कुछ फैसला किया?"

केसी ने कहा—"हाँ, तुम हमला करो। हम तैयार हैं।"

मेजर ने चिल्ला कर कहा—"अच्छा, तुम्हारी मर्जी। पर मैं तुमको फिर जताये देता हूँ कि अगर तुम फौरन हार मान कर हथियार नहीं डाल दोगे तो तुम में से एक भी आदमी इस मकान से जिन्दा न निकल सकेगा। हम मशीन-गनों से एकाएक को उड़ा देंगे।"

ओहारा ने ताने के साथ जवाब दिया—"अजी मेजर साहब, जरा आगे तो बढ़ो। हम लोग सरकारी सेना वालों के चाचा हैं। तुम तो हमको उड़ाने की बात कर रहे हो; पर जरा मेरी निगाह से बच कर रहना, वरना तुम खुद ही उड़ जाओगे।'

इस पर फिर गोलियाँ चलने लगीं; फौज वालों ने कई बम भी फेंके जो उस मकान की दीवार से टकरा कर बाहर ही फूट गये। सिपाहियों ने सामने के दरवाजे की तरफ दो मशीनगनें लगा दीं और कुछ ही मिनटों में दरवाजा टुकड़े-टुकड़े हो गया। पाँच-छै हिम्मत वाले सिपाही बन्दूकों की आड़ लेकर मकान के पास बम फेंकने को चले, पर या तो वे गोरिल्लाओं की गोलियों से मारे गये या पीछे लौट आये। गुस्से में आकर मेजर स्मिथ ने तीसरी मशीनगन भी सामने की तरफ मँगा ली और तीनों मशीनगनें टूटे हुये दरवाजे और खिड़कियों की तरफ चलाई जाने लगीं।

वालंटियरों में से दो-चार आदमी घायल हुये थे, पर उनके घाव बहुत भारी नहीं थे। वे लोग किसी तरह वक्त निकाल रहे थे, पर उनको अब तक बचने की कोई सूरत नजर नहीं आती थी। सब लोग मौत का निश्चय कर चुके थे और उसकी राह देख रहे थे। पर इससे उनके दिलों में बजाय डर के एक

निराले आनन्द का भाव पैदा हो रहा था। वे लोग मौत के खयाल में यहाँ तक चूर थे कि जब सिपाहियों ने मकान के छप्पर में आग लगा दी और चारों तरफ लपटें फैल गईं तब भी किसी ने उसका ज्यादा खयाल न किया।

केसी सोच रहा था कि देखें अंत की घड़ी किस तरह आती है। बाहर से सिपाहियों के चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं—"अरे कुत्तो, बाहर आ जाओ, नहीं तो जिन्दा जल मरोगे।" पर इन बातों का किसी पर कुछ असर न पड़ा।

एकाएक ओहारा ने केसी का हाथ जोर से पकड़ कर कहा—"देखो, पीछे की तरफ बड़ा धुआँ फैल रहा है। इसमें होकर हम अच्छी तरह भाग सकते हैं। यह भगवान की ही कृपा है।"

सचमुच उस भीगे हुये छप्पर के जलने से बेहद धुआँ निकल रहा था और हवा के जोर से मकान के पीछे की तरफ जा रहा था। उसके सबब से पचास गज तक ऐसा अँधेरा हो रहा था कि कोई भी चीज़ दिखलाई नहीं पड़ती थी। यह घटना सब लोगों को एक दैवी आश्चर्य की तरह जान पड़ी।

केसी ने कहा—"भाइयो, यह हमारे बचने का एकमात्र उपाय है। हमको धुएँ के बीच में होकर निकल चलना चाहिये और जब तक जान रहे किसी तरह न रुकना चाहिये। हम लोग मेलार्न की पहाड़ी की तरफ चलेंगे। दरीबाजा खोलो और मेरे पीछे एक कतार में चले आओ।"

वे मकान के बाहर निकल कर बाईं तरफ को भागे। उधर से दुश्मन के कुछ सिपाही भी धुएँ में होकर मकान के भीतर बम फेंकने को आ रहे थे। अँधेरे के सबब से उनमें से कई आदमी राष्ट्रीय सेना वालों से टकरा गये पर वालंटियर लोग पिस्तौल, घूँसे, लात वगैरह हर तरह से उनको मारते हुये आगे बढ़ गये। राष्ट्रीय सेना वालों का असली इरादा समझने में दुश्मन को कुछ देर लगी और उस हलचल में वे लोग काफी दूर निकल गये।

पाँच सात मिनट बाद जब असली बात सरकारी सेना वालों की समझ में आई और मेजर स्मिथ को मालूम हुआ कि उसके तमाम शिकार धुएँ में होकर भाग गये तो वह सन्न रह गया और उसने फ़ौज को उनका पीछा करने का हुक्म दिया। पर अब मौक़ा निकल गया था और सरकारी सिपाही बिना सोचे-समझे इधर-उधर गोलियाँ चलाते हुये दौड़ने लगे। उनको दौड़ते-दौड़ते सुबह हो गई और तब उन्होंने देखा कि वे एक पहाड़ी में आ फँसे हैं। उस समय राष्ट्रीय सेना के आठ आदमी सकुशल मेलार्न की पहाड़ी में अपने पुराने मुकाम पर जा पहुँचे थे। तीन आदमी दूसरे दिन तलाश करने पर जंगल में छुपे हुये मिल गये। वे लोग थकावट और घावों में से खून निकल जाने के कारण बड़े कमज़ोर हो गये थे और दूसरे लोगों के साथ न चल सकने के सबब से चुपके से किसी छुपे हुये मुकाम में पड़ रहे थे। वे लोग अपने साथियों की सेवा शुश्रूषा के फल से थोड़े ही अरसे में बिलकुल चंगे हो गये। चौथा आदमी मरा हुआ पाया गया। उसका शरीर गोलियों से चलनी हो गया था। साफ़ मालूम पड़ता था कि वह सरकारी फ़ौज वालों के हाथ में पड़ गया था और सब ने अपना गुस्सा उसी पर निकाला था।

पर दुश्मन का नुकसान राष्ट्रीय सेना वालों की बनिस्बत बहुत ज्यादा हुआ था। उनके सात आदमी मारे गये थे और नौ सख्त घायल हुये थे। मरने वालों में कप्तान ओकूले भी शामिल था। उसके बारे में लोग कहते थे कि वह राष्ट्रीय सेना वालों का पीछा करते समय एक सरकारी अफ़सर की गोली से मारा गया था। मालूम नहीं कि गोली अचानक लग गई थी या जान बूझ कर मारी गई थी।

इस घटना का जो हाल सरकारी फ़ौजी महक़मे की तरफ़ से अख़बारों में छापने के लिये भेजा गया वह बिलकुल गलत था। पर उस जगह के गाँव वाले आज भी 'डेविल्स बैएड' की लड़ाई का जिक्र बड़े ताज्जुब के साथ किया करते हैं।

एक निरपेक्ष डाक्टर

बालून में फ्रांसिस ओग्रीन नाम का एक मशहूर डाक्टर रहता था। उसकी उमर करीब ५५ वर्ष की थी और वह शरीर का बड़ा लम्बा चौड़ा और हट्टा-कट्टा था। उसका जन्म एक मामूली किसान के घर में हुआ था। पर वह अपनी लियाकत के सबब से तरक्की करते करते इस बड़े ओहदे पर पहुँच गया था। उसका बाप पक्का देशभक्त था और आयरलैण्ड की आजादी उसको प्राणों से प्यारी थी। पर डाक्टर ओग्रीन राजनीति से सदा दूर रहता था। बालून के रहने वाले उसे जिले भर में सब से बड़ा डाक्टर समझते थे। अगर्चे उसकी रोजी उस कस्बे के निवासियों की बदौलत ही चलती थी, पर वह उनके साथ बड़ी लापरवाही और घमण्ड का बर्ताव करता था। उसका चरित्र बड़े ऊँचे दर्जे का था, वह सदा खरी बात कहता था और उसकी शकल सूरत ऐसी रुआबदार थी कि सब लोग उसको बड़ी इज्जत की निगाह से देखते थे और साथ ही डरते भी थे। उसके दिमाग़ में कुछ खब्त भी था और कभी-कभी वह बहुत गाली गलौज बका करता था। बालून में वह सिर्फ एक आदमी को अपनी बराबरी का मानता था। वह था उस कस्बे का एक मात्र वकील। उन दोनों की दोस्ती भी बड़े अजीब ढङ्ग की थी। गरमी, सरदी, बरसात कुछ भी क्यों न हो, वे हर रोज बालून के बीच बाजार में एक दूसरे से मिलते थे और घंटों बातचीत करते हुये इधर-सधर फिरते रहते थे। उनकी बातचीत ऐसे ज़ोर से होती थी कि हर एक राहगीर दूर से ही उसे सुन सकता था। उनकी सलाम बदगी का क़ायदा निराला था। डा० ओग्रीन झपट कर अपने दोस्त की तरफ़ जाता और चिल्ला कर कहता—"ओ बदमाश, सलाम।"

वकील भी उसी तरह कड़ी आवाज़ में कहता—"ओ हत्यारे, सलाम।"

फिर डाक्टर कहता—"अच्छा, झूठे—डाकू।"

वकील फौरन जवाब देता—"अच्छा, कसाई, जहर देने वाले।"

इसके बाद वे दोनों दिल खोल कर हँसते और तब दूसरी बातचीत शुरू होती।

सन् १६१४ में जब जर्मनी की लड़ाई शुरू हुई तो ज्यादा उमर हो जाने पर भी डा० ओग्रीन सरकारी फ़ौज में काम करने को चला गया और चार साल तक बालून के निवासियों ने उसकी शकल भी नहीं देखी। जब वह लौटा तो फिर अपना धंधा करने लगा। इन चार सालों में सिवा इसके कि उसकी रीछ की सी काली दाढी कुछ सफेद हो गई थी, उसमें कुछ भी बदलाव न हुआ था। पर अब वह लड़ाई का बड़ा विरोधी बन गया था और जब कभी बातचीत चलती तो कहता था—"अगर मैं फिर कभी लड़ाई में जाऊँ तो ईश्वर उसी दिन मुझे मार डाले। लड़ाई सिर्फ़ लालच, बेरहमी और खून की प्यास को बुझाने के लिये की जाती है। यह आदमियों का नहीं, जानवरों का काम है।"

अब भी स्थानीय वकील के साथ उसकी दोस्ती थी, पर अब वे पहिले की तरह एक दूसरे को गालियाँ नहीं देते थे। जब आयरलैण्ड में सरकार और राष्ट्रीय दल में लड़ाई होने लगी तो डाक्टर राजनीति से और भी दूर रहने लगा। इसी समय दोस्त वकील को सरकारी अफसरों ने गिरफ्तार कर लिया। अगर्चे डाक्टर को मालूम हो गया कि उसके दोस्त का छुपे तौर पर राष्ट्रीय दल से ताल्लुक था तो भी इस तरह उसकी गिरफ्तारी से उसके दिल को बड़ी चोट लगी। अब वह लोगों की आँखों से और ज्यादा दूर रहने लगा। वैसे भी अब कस्बे की हालत बदल गई थी। जिस वक्त डाक्टर लड़ाई पर गया था उस वक्त कस्बे में जो लोग मुखिया या बड़े आदमी समझे जाते थे अब उनकी जरा भी पूछ न थी। अब जनता की बागडोर नौजवान लोगों के हाथ में थी और

ये ही उस जगह की म्युनिसपैलिटी के कर्ताधर्ता थे। ये नौजवान बुजुर्ग लोगों की ज्यादा इज्ज़त नहीं करते थे।

शुरू में राष्ट्रीय दल वाले और सरकारी अफसर दोनों समझते थे कि डाक्टर अगर उनका दोस्त नहीं है तो दुश्मन भी नहीं है। पर डाक्टर को खरी बात कहने की आदत थी और वह दोनों दलों पर तरह-तरह के ऐब लगाया करता था। इसलिये कुछ समय बाद दोनों तरफ वाले उसे शक की निगाह से देखने लगे। पर डाक्टर को इस बात का कुछ खयाल न था। वह उन लोगों में से था जो किसी की खुशी या नाराज होने की परवा नहीं करते।

पर जैसे-जैसे दोनों दलों का झगड़ा जोर पकड़ता गया डाक्टर की मुशकिल भी बढ़ती गई। एक दिन कुछ गोरिल्ला लाठी और पिस्तौल लेकर उसके घर में हथियारों के लिये घुस गये। डाक्टर ने गुस्से में आकर उनको मारने के लिये एक कुरसी उठाई और सब को भगा दिया। पिस्तौल वाले वालन्टियर ने डाक्टर को डराने की कोशिश की, पर क्योंकि वह खाली थी इससे उसका कुछ असर न हो सका। जब यह खबर बालून के फौजी अफसर मेजर स्मिथ के पास पहुँची तो उसने कुछ सिपाहियों को डाक्टर के यहाँ से हथियार ले आने को भेजा। मालूम नहीं कि डाक्टर के यहाँ हथियार थे या नहीं, पर सिपाहियों को कुछ नहीं मिल सका। डाक्टर की रूखी बातों से सिपाही बहुत बिगड़े और मुमकिन था कि वे डाक्टर को बेइज्जत करते। पर मेजर स्मिथ ने उनको सख्त हुक्म दे रखा था कि डाक्टर को किसी तरह की तकलीफ न हो।

राष्ट्रीय सेना के अफसर को अपने गोरिल्लाओं के पीटे जाने पर कुछ भी गुस्सा न आया। वरन् ये लोग इस बात पर खूब हँसे और डाक्टर की हिम्मत की तारीफ करने लगे। उनका इरादा था कि एक बार डाक्टर के यहाँ फिर कोशिश की जाय, पर इसके दो ही दिन बाद एक ऐसा मामला हुआ जिससे उनको अपना इरादा छोड़ देना पड़ा।

उस दिन बालून में बाजार का दिन था। उसी दिन दोपहर को वहाँ होकर चार-पाँच सरकारी सिपाहियों की लाशों का जलूस निकलने वाला था। ये सिपाही पहाड़ियों में गोरिल्लाओं के हाथों मारे गये थे और उनकी लाशों को दफन करने के लिये डबलिन भेजा जा रहा था। लाशों के जलूस के साथ सेना का एक बड़ा दल भी था। जब यह जलूस निकल रहा था तो सिपाही जबर्दस्ती तमाम लोगों की टोपियाँ उतरवाते जाते थे। डाक्टर ओग्रीन उस समय बाजार में होकर कहीं जा रहा था। भीड़ के सबब से उसको रास्ते में ठहर जाना पड़ा। जब लाशों का जलूस पास आया तो उसने सभ्यता के कायदे के मुताबिक खुद ही अपनी टोपी उतार ली और जब लाशें निकल गईं तो फिर टोपी को सर पर रख लिया। बदकिस्मती से ज्योंही उसने टोपी सर पर रखी कि एक सिपाही उसके पास आ पहुँचा। यह सिपाही दो दिन पहिले डाक्टर के घर हथियार लेने गया था और शायद उसके रूखे बर्ताव की बात को अब तक न भूल सका था। उसने अपने हाथ से डाक्टर की रेशमी टोपी को उतार कर दूर फेंक दिया। घायल शेर की तरह गरज कर डाक्टर ने उस सिपाही के मुँह पर एक घूँसा मारा जिससे वह सड़क पर गिर पड़ा। यह देख कर दूसरे सिपाहियों ने डाक्टर पर हमला किया और उसे सड़क पर गिरा कर लातों से मारने लगे। एक अफसर ने जो सब के पीछे चल रहा था इस घटना को देखा और सिपाहियों को मारने से रोक कर डाक्टर को गिरफ्तार कर लेने का हुक्म दिया। इस तरह डाक्टर की जान तो बच गई, पर उसके कई दाँत टूट गये, नाक में चोट लग गई, और चेहरा कई जगह से कट गया।

डाक्टर को ज्यादा देर तक हवालात में नहीं रखा गया। मेजर स्मिथ और दूसरे बड़े अफसर इस मामले से नाखुश थे और उन्होंने जहाँ तक हो सका जल्दी इसे रफा-दफा कर देने की कोशिश की।

डाक्टर एक महीने तक लँगड़ाता रहा। पर उसने अपना काम बन्द नहीं

किया। वह बालून के रहने वालों, सरकारी सिपाहियों, राष्ट्रीय सेना वालों वगैरह सब का इलाज उसी निरपेक्ष भाव से करता था। उसने अपनी बातचीत या किसी काम से यह हरगिज जाहिर नहीं होने दिया कि वह दोनों में से किसी दल को अच्छा समझता है। ज्यादातर सरकारी सिपाहियों का खयाल था कि डाक्टर भीतर ही भीतर राष्ट्रीय सेना वालों से मिला है। पर दोनों तरफ के बड़े अफसरों को अब पूरी तरह विश्वास हो गया था कि डाक्टर जरूरत से ज्यादा निरपेक्ष है। अगर वह कोई मामूली आदमी होता तो मुमकिन था कि कोई उसकी तरफ खयाल न करता। पर अब उसे तरह-तरह से तंग होना पड़ता था। सरकारी फौज के सिपाही उसकी मोटर को अकसर रास्ते में रोक कर उसकी तलाशी लिया करते थे और उससे बार-बार पैटरोल का हिसाब पूछा जाता था।

× × × ×

राष्ट्रीय सेना वालों ने इस घटना के बाद उसको सिर्फ एक बार तंग किया। बात यह थी कि बालून के एक जमींदार का लड़का वहाँ के जासूसी महकमे का मुखिया था। जब सरकारी सेना ने राष्ट्रीय सेना से हमदर्दी रखने वालों के मकान जलाये, तो राष्ट्रीय गोरिल्लाओं के सेनापति ने निश्चय किया कि इसके बदले में सरकारी सेना वालों और उनसे सहानुभूति रखने वालों के मकान जलाने चाहिये। जेम्स केसी को बालून में उस जमींदार के मकान जलाने का हुक्म दिया गया। पर यह काम आसान न था, क्योंकि इस मकान के बिलकुल पास ही सरकारी फ़ौज की एक बड़ी चौकी थी। इसके सिवा मकान को उड़ाने के लिये बम और दूसरे मसाले जो हैडक्वार्टर से आने वाले थे वे समय पर नहीं आये। तो भी केसी ने निश्चय किया कि जिस तरह हो सके वह मकान जरूर जलाना चाहिये। इस काम के लिये इधर-उधर से बहुत सा पेटरोल इकट्ठा करके डाक्टर ओग्रीन के बाग में छुपा दिया गया। यह बाग उस मकान की चारदीवारी से बिलकुल लगा हुआ था। जब रात कुछ

ज्यादा हो गई तो गोरिल्ला चुपके से डाक्टर के मकान में घुस गये और वहाँ के रहने वाले तमाम आदमियों को बाँध दिया। इसके बाद उन्होंने अपना काम शुरू किया। पहिले बहुत सी बोतलों में पैटरोल भर कर उनमें कपड़े का पलीता लगा दिया गया। फिर धीरे धीरे उन बोतलों और पैटरोल के दूसरे डिब्बों को उस जमींदार के मकान के पास पहुँचाया गया। जब वालन्टियर ये चीजें ले जा रहे थे उस वक्त एक बड़े शिकारी कुत्ते ने उन पर हमला किया। पर एक गोरिल्ला ने उसके सर में बन्दूक के कुन्दे की ऐसी चोट मारी कि वह उसी जगह ढेर हो गया। जब सब सामान ठीक हो गया तब वे लोग एक खिड़की को तोड़ कर मकान के भीतर घुसे। वालन्टियरों का एक दल कमरों में पैटरोल छिड़कने लगा और दूसरे दल ने मकान के तमाम लोगों को पिस्तौलों से डरा कर और बाहर ले जाकर अस्तबल में बंद कर दिया। हर एक कमरे में पैटरोल की दो चार बोतलें डाल दी गईं और तमाम जल सकने वाली चीजों को पैटरोल से अच्छी तरह भिगो दिया गया। यह तमाम काम खतम करने पर वालन्टियर लोग दो एक कमरों में जलता हुआ कपड़ा फेंक कर जल्दी से बाहर निकल आये और बिना हल्ला-गुल्ला मचाये पहाड़ियों की तरफ चलते बने।

आग कुछ ही लगी थी कि चौकी के सिपाहियों ने उसे देख लिया। वे लोग फौरन मौके पर पहुँचे और उनको पूरा भरोसा था कि हम अभी आग को बुझा देंगे। वे एक खिड़की में होकर भीतर जाने की कोशिश कर रहे थे कि पैटरोल की एक बोतल बड़े जोर से फूटी। फिर एक के बाद दूसरा धड़ाका होने लगा।

सिपाहियों के अफसर ने चिल्ला कर कहा—"पीछे चले आओ, मकान में बम रखे हुये हैं। पर इस हुक्म के पहिले ही सिपाही अपनी जान बचाने के लिये भागने लग गये थे। अब धड़ाके और भी जोर से हो रहे थे और उनके सबब से किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि मकान के पास जाने की

कोशिश करे। उस कस्बे में आग बुझाने का और कोई उपाय न था। अखीर में जब सुबह हुई तो तमाम मकान और उसका सामान जल कर कोयलों और राख का ढेर हो चुका था।

सुबह होते ही सरकारी सेना वाले राष्ट्रीय सेना वालों को ढूँढ़ने के लिये आस-पास के मकानों की तलाशी लेने लगे। उनका खयाल था कि शायद अभी वे लोग यहीं किसी जगह छुपे होंगे। उन्हीं में से कुछ सिपाही डाक्टर के यहाँ पहुँचे और उसको अपने नौकरों के साथ बँधा पाया। इस घटना के सबब से डाक्टर के दिल पर बड़ी चोट लगी। पर दूसरे दिन उसको राष्ट्रीय सेना के सेनापति का खत मिला जिसमें उसे बाँधने के लिये माफी माँगी गई थी। इस खत से डाक्टर का रंज बहुत कुछ कम हो गया।

उधर सरकारी सिपाहियों का यह शक कि डाक्टर भीतर ही भीतर बागियों से मिला है, इस मामले से और भी मजबूत हो गया। वे लोग उसको बहुत तंग करते। पर मेजर स्मिथ ने उनको ऐसा करने से रोक दिया। इन सब बातों से डाक्टर को बड़ा गुस्सा आता था और वह कभी एक दल को और कभी दूसरे दल को गालियाँ दिया करता था। उसने इस बात की कसम खा ली थी कि वह किसी दल की तरफदारी नहीं करेगा।

× × × ×

कुछ दिन बाद फोयले के पास खबर आई कि सरकारी सेना का एक दल सुबह होने से पहिले पुलनमोर से बालून की तरफ जाने वाला है। जब से राष्ट्रीय सेना का जोर बढ़ा था तब से सरकारी फौज वाले अँधेरे में सफ़र करने की हिम्मत बहुत कम करते थे। इसलिये फोयले ने इस मौके पर चूकना ठीक न समझा। दिन के वक्त भी पहाड़ियों के ऊपर से सरकारी फौज पर गोलियाँ चलाई जा सकती थीं। पर ऐसा न करने का सबब यह था कि आज कल वालन्टियरों के पास गोली बारूद की कमी थी और उनकी मशीनगन भी किसी दूसरे जिले में मँगनी गई थी। फोयले चाहता था कि गोली बारूद

के लिये सेनापति के पास आर्डर भेजने के पहिले कोई बड़ा काम कर दिखाना चाहिये। इस लिये उसने सरकारी फौज के इस दल पर हमला करने का निश्चय कर लिया। उसी दिन शाम को सेनापति के यहाँ से उसके पास दो सुरंगें आई थीं। उनमें से एक सुरंग को आधी रात के वक्त बालून से छै मील के फासले पर सड़क के एक मोड़ पर गाड़ दिया गया। उस जगह से पचास गज की दूरी पर एक बड़े चट्टान के पीछे एक आदमी बैठाया गया जिसके हाथ में सुरंग को चलाने के लिये बिजली की बैटरी और तार था। उससे कुछ दूर पर पहाड़ी के ऊपर जगह-जगह वालन्टियरों के दल बन्दूकें लिये छुपे हुये थे। पर उस रात को सरकारी सिपाहियों का कोई दल उस रास्ते से नहीं गुजरा। दिन निकल आने पर वे लोग वहाँ से उठ गये और खा पीकर और कुछ आराम करके फिर अपनी जगह आ बैठे। जब उनको यह मालूम हुआ कि उनके पीछे से सिपाहियों का एक छोटा दल उनकी सुरंग पर होकर बेखटके चला गया तो उनको बहुत रंज हुआ। फिर भी वे धीरज के साथ बैठे हुये किसी दूसरे फौजी दल की राह देखने लगे।

× × × ×

उस दिन शाम को अँधेरा हो जाने पर डाक्टर ओग्रीन एक मरीज़ को देख कर अपनी मोटर पर बालून को लौट रहा था। सड़क के मोड़ पर जहाँ राष्ट्रीय सेना वालों की सुरंग गड़ी हुई थी उसको सरकारी सेना की दस मोटर लारियाँ बालून की तरफ़ से आती मिलीं। सिपाहियों ने डाक्टर की मोटर को रोक लिया और उससे तरह-तरह के सवाल करने लगे। आखीर में सिपाहियों के अफसर ने उसको हुक्म दिया—"अपनी मोटर बीच में कर लो और हमारे साथ चलो।"

डाक्टर ने धीरे से कहा—"जनाब, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे घर जाने दें। मैं इन झगड़ों से किस तरह का ताल्लुक नहीं रखता।

मेरा काम लोगों को तकलीफ से छुड़ाना है। मैं मारकाट करने वालों के साथ हरगिज़ शामिल होना नहीं चाहता।"

अफसर ने झल्ला कर कहा—"मैं तुम्हारी ये बेमतलब की बातें सुनना नहीं चाहता। तुम अपने को गिरफ्तार समझो, और अगर ज़्यादा गड़बड़ करोगे तो अभी खत्म कर दिये जाओगे। बस, सीधी तरह अपनी मोटर को लारियों के बीच में करके हमारे साथ चले आओ।"

डाक्टर ने ज़ोर के साथ जवाब दिया—"मैं आपका हुक्म नहीं मान सकता। 'मैं एक बिलकुल आज़ाद आदमी हूँ और मुझे आपके साथ चलना सख्त नापसंद है। इसलिये जब तक आप मुझे जबर्दस्ती पकड़ कर न ले जायँ तब तक मैं आपके साथ नहीं जाऊँगा।"

अफसर जरा देर तक उसकी तरफ ताकता रहा और तब बोला—"सार-जंट, तुम इस शख्स को अपनी हिरासत में ले लो और इसका कोई उज्र मत सुनो।' फिर उसने एक ड्राइवर को हुक्म दिया—"डाक्टर की खाली मोटर को हाँक ले चलो।"

डाक्टर सड़क पर खड़ा हुआ गुस्से के मारे काँप रहा था। इसी समय आगे वाली मोटर लारी जरा आगे बढ़ी और ठीक उस जगह जा पहुँची जहाँ पर राष्ट्रीय सेना वालों की सुरंग गड़ी हुई थी। सारजंट ने अपना हाथ डाक्टर के कंधे पर रखने के लिये बढ़ाया ही था कि एकाएक बज्र के समान शब्द हुआ। आगे वाली मोटर लारी एकदम ऊपर उठ गई और चूर चूर होकर सड़क पर गिर गई। डाक्टर और दूसरे सिपाही जो उसके पास खड़े थे उछल कर दूर जा गिरे। मिनट भर के लिये चारों तरफ सन्नाटा छा गया। सब से पहिले डाक्टर को होश आया और वह छुपने के लिये चट्टानों की तरफ भागा।

उसी वक्त पहाड़ी पर से मोटरों पर गोलियाँ चलने लगीं। सिपाहियों ने भी जवाब में अपनी मशीनगन चलाई। दो घंटे तक दोनों दलों में घमासान

लड़ाई होती रही। इसके बाद बहुत सी सरकारी फौज अपने साथियों की मदद को आ पहुँची और तमाम पहाड़ी सर्चलाइट की रोशनी से जगमगा उठी। यह देख कर राष्ट्रीय सेना वालों ने गोली चलाना बन्द कर दिया और अपने मुकाम की तरफ चल दिये। सरकारी फौज ने कुछ दूर तक पीछा किया, पर उन पहाड़ियों में रात के वक्त उनको पकड़ सकना नामुमकिन था। कई घंटों के बाद फौज वाले थके और चिढ़े हुए अपनी छावनी को वापस चले गये।

× × ×

जब सवेरा हुआ तो लोगों ने देखा कि डाक्टर का मुर्दा शरीर पहाड़ी के नीचे पड़ा है। न मालूम किस तरफ की गोली से वह मारा गया था। क्योंकि वह भाग कर दोनों दलों के बीच में जा पड़ा था और दोनों तरफ वाले उसे दुश्मन समझ कर मार सकते थे।

मरने के वक्त भी डाक्टर ओग्रीन निप्रेक्ष ही बना रहा!

———

युद्ध के दावपेंच

—:०:—

कप्तान निकलसन बालून की वालंटियर सेना में नौकर था। जाहिर में वह बड़ा सीधासादा मालूम पड़ता था, पर जो लोग उसका पिछला हाल जानते थे उनको मालूम था कि उसके जैसा बदमाश और चालाक आदमी उस तमाम पलटन में मिलना मुशकिल था। निकलसन, मिडशायर (इंगलैण्ड) के एक बड़े जमीदार का लड़का था। उन्नीस साल की उमर में ही पक्का गुंडा बन गया और उसने एक बुड्ढे मालदार की औरत को फँसा लिया। उसके इस काम की चारों तरफ बुराई होने लगी और मा-बाप ने नफरत के साथ उसको घर से निकाल दिया। जब बुड्ढे शख्स को अपनी औरत के चाल-चलन का पता लगा तो उसने शरम के मारे आत्म-हत्या कर ली। निकलसन कुछ दिन तक उस औरत के साथ रहा और बाद में मौका पाकर उसका बेशकीमत मोतियों का हार और कुछ दूसरे जेवर लेकर भाग गया। उसके इस बर्ताव से औरत के दिल पर बड़ी चोट लगी और वह अपने बुड्ढे पति के लिये बड़ा शोक करने लगी। कुछ सोच-समझ कर उसने इस मामले को यों ही रहने दिया और पुलिस को खबर नहीं दी।

इसके बाद छै साल तक निकलसन इधर-उधर लोगों को ठग कर अपना काम चलाता रहा। कई बार उसके फँसने का मौका आया, पर वह बार, बार नाम बदल कर बच गया। उसकी अक्ल तेज थी और उसे सभ्य समाज में मिलने के कायदे खूब आते थे, इसलिये वह बिना कुछ काम किये दूसरे लोगों के भरोसे चैन करता था। वह ताश खेलने में भी बड़ा होशियार था और हमेशा जुए में कुछ न कुछ जीत लेता था। इस तरह रहते-रहते जर्मनी की

लड़ाई का जमाना आ पहुँचा। जबर्दस्ती भरती के कानून के मुताबिक उसको भी फौज में शामिल होकर लड़ने को जाना पड़ा। यहाँ भी उसने अपने पुराने ढङ्ग न छोड़े और वह जुआरी अफसरों के साथ ताश खेल कर उनका रुपया अपनी जेब में पहुँचाता रहता था। लड़ने के वक्त वह सब से पीछे रहता था। पर अपनी चालाकी से बड़े अफसरों को हर तरह से खुश रखता था। इसलिये सब से कम खतरा उठाने पर भी उसे दूसरों से ज्यादा बहादुरी के मेडल मिल गये।

जब लड़ाई खतम हो गई और निकलसन लौट कर इङ्गलैण्ड में आया तो उसे मालूम हुआ कि अब वहाँ का रङ्ग बदल गया है। बेकारी के सबब से अब और भी बहुत से आदमी 'अक्ल' से गुजारा करने वाले पैदा हो गये थे और उन सब के मुक़ाबले में कामयाबी हासिल कर सकना सहज न था। इसलिये बहुत सोच-विचार कर उसने आयरलैण्ड की वालंटियर सेना में नौकरी करना तय किया। इस काम में तनखाह बहुत काफ़ी मिलती थी और इसी लिये उसने यह नौकरी पसन्द की थी। बालून में आने के बाद वह कोई ऐसा तरीक़ा तलाश करने लगा जिससे तनखाह के सिवा कुछ ऊपरी आमदनी भी हो सके। पर कुछ ही दिनों में उसे मालूम हो गया कि उसके साथी उससे भी ज्यादा चालाक हैं और वह ताशों के खेल में या दूसरी किसी तरक़ीब से उनसे कुछ नहीं पा सकता।

इसके बाद निकलसन इस बात की कोशिश करने लगा कि राष्ट्रीय सेना वालों के भेदों का पता लगा कर सरकार से कुछ इनाम हासिल किया जाय। पर इस काम में भी वह नाकामयाब रहा। उसके लिये आयरलैण्ड वालों के तरीक़े और ढङ्गों को समझ सकना बिलकुल नामुमकिन बात थी। इसलिये उसकी खबरें सदा ग़लत निकलती थीं और कभी-कभी तो उनके सबब से बड़ा नुक़सान हो जाता था। एक बार उसने एक ऐसे शख्स के खिलाफ़ शिकायत कीजो पक्का राजभक्त था। इस खबर के आधार पर सिपाहियों ने एक दिन

रात के समय उस शख्स की मोटर को रास्ते में रोक लिया और पूछताछ करने लगे। इससे उसको इतना ग़ुस्सा आया कि उसने मोटर रोकने वाले सिपाहियों को मार कर भगा दिया। जब इस घटना का पता मेजर स्मिथ को लगा तो उसे बड़ी नम्रता के साथ उस शख्स से माफ़ी माँगनी पड़ी। पर तो भी वह पूरी तरह से राज़ी नहीं हो सका।

अख़ीर में निकलसन ने सोचा कि राष्ट्रीय सेना वालों से मिल कर आमदनी का कोई ढङ्ग निकालना चाहिये। उसे न इङ्गलैण्ड से प्रेम था न आयरलैण्ड से घृणा। उसका उद्देश्य सिर्फ रुपया कमाना और मौज करना था। उसने देखा कि राष्ट्रीय सेना वालों को हथियार और गोली बारूद की बड़ी ज़रूरत रहती है। इसलिये अगर उनके एजंटों से ताल्लुक़ कर लिया जाय तो काफी आमदनी हो सकती है।

अपने इस इरादे को पूरा करने के लिये उसने एक तरकीब निकाली। एक दिन उसने अपने एक साथी अफ़सर का पिस्तौल और पचास कारतूस चुराये और उनको ले जा कर एक टूटे-फूटे मकान में एक बड़े पत्थर के नीचे छुपा दिया। इन चीजों के साथ एक पुरजा भी था जिसमें लिखा था—"इन चीज़ों को तुम कितनी क़ीमत की समझते हो? बाद में और भी चीज़ें आने वाली हैं।" यह पुरजा उसने हाथ से नहीं लिखा था, बल्कि एक अखबार में छपे हुये अक्षर काट कर उनको जोड़ कर बनाया था। वह थोड़ी देर तक वहाँ खड़ा रहा। कुछ देर बाद सामने वाले मकान से एक आदमी बाहर निकला। उस मकान वाले पर सरकारी अफ़सरों को शक था और इसलिये उसे नजरबंद करके रखा गया था। निकलसन ने हाथ से पत्थर की तरफ़ इशारा किया और चुपचाप चला गया। दूसरे दिन उस जगह जाकर जब उसने पत्थर को हटाया तो उसके नीचे से तीन पौण्ड का एक नोट लिफाफे में रखा मिला। पंद्रह दिन के भीतर उसने पिस्तौलों को चुरा चुरा कर बीस पौण्ड पैदा किये। पिस्तौलों की

चोरी से छावनी में बड़ी हलचल मची, पर निकलसन ने अपने ऊपर किसी को शक नहीं होने दिया।

× × × ×

एक रात को निकलसन बालून के होटल में बैठा हुआ एक क्रिकेट खेलने वाले नौजवान से बातचीत कर रहा था। बातें होते-होते पता चला कि वह राष्ट्रीय सेना वालों का एजंट है। पर उस दिन कोई मतलब की बात न हो सकी। जब ये लोग दूसरी बार मिले तो कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद असली मतलब पर आये। वह नौजवान पुलनमोर का रहने वाला था और उसने अपना नाम हडसन बतलाया है तो भी उसको भरोसा था कि उसका काम सच्चा है। दोनों ने आपस में ज़रूरी शरतें तय कर लीं। निकलसन ने इस बात का पूरा खयाल रखा कि वह किसी तरह से धोखे में न पड़ जाय या उसका भेद सरकारी अफ़सरों पर न खुल जाय।

अब की बार निकलसन का काम बहुत खतरनाक था। उसको दोनों तरफ़ जासूसी करनी थी। पर इस काम में फ़ायदा ख़ूब था और दोनों तरफ से इनाम मिलने की उम्मेद थी। वह यह भी समझता था कि अगर मैंने किसी के साथ दग़ाबाज़ी की तो फिर जान नहीं बच सकती। सब बातों पर अच्छी तरह गौर करके अखीर में उसने इस काम को करने का पक्का इरादा कर लिया। वह एक तरफ़ की सुनी हुई बातों में से जितना हिस्सा मुनासिब समझता था दूसरी तरफ़ वालों को सुना देता था। राष्ट्रीय सेना वाले भी उसकी तरफ़ से बहुत चौकन्ने रहते थे और एकाएक उसकी बात पर एतबार नहीं करते थे।

उसने पहली बार राष्ट्रीय सेना वालों को जो ख़बर दी वह बड़े काम की थी। पर उन लोगों ने बिना जाँच किये उस पर अमल करना मुनासिब न समझा। बाद में पता लगा कि वह ख़बर दरअसल ठीक थी। इससे उनको निकलसन पर कुछ भरोसा हुआ और उन्होंने तय किया कि अब वह जो ख़बर

दे उससे फ़ायदा उठाने की कोशिश की जाय। पर बहुत दिनों तक ऐसा कोई मौका हाथ न लगा।

एक दिन शाम के वक्त कप्तान निकलसन पुलनमोर में हडसन के एक साथी से मिला। उसने बतलाया कि "कल सबेरे सात बजे की गाड़ी से सरकारी फ़ौज के लिये बहुत सी पिस्तौलें और कारतूस आ रहे हैं। वे तीन बक्सों में भरे हुये हैं और उनके ऊपर 'लोहे का सामान' का लेबिल लगा है। ये बक्स कस्बे के एक मशहूर सौदागर के पते से आने वाले थे। सब से ज्यादा ताज्जुब की बात यह थी कि उन पर पहरे का कोई इन्तजाम न था। पर ज्योंही गाड़ी स्टेशन पर पहुँचेगी पुलनमोर की फ़ौज के सिपाही उनको अपने कब्जे में ले लेंगे।" हडसन के साथी की उत्सुकता और जाने की जल्दी को देख कर उसने समझ लिया कि कल पुलनमोर के स्टेशन पर जरूर ही कोई मज़ेदार मामला होगा।

इस तरह विचार करता हुआ वह अपनी छावनी में पहुँचा। वहाँ उसने जासूसी महकमे के अफ़सर को खबर दी कि उसे कुछ लोगों की बातचीत से ऐसा मालूम हुआ है कि राष्ट्रीय सेना वाले कल या जल्दी ही कोई 'बड़ा काम' करने वाले हैं। वह 'बड़ा काम' क्या होगा यह उसने उन लोगों की समझ पर छोड़ दिया। इस खबर को पाकर उस रात को छावनी में बड़ी तैयारियाँ होती रहीं और लोग उत्सुकतापूर्वक दूसरे दिन की राह देखने लगे।

उधर रात के एक बजे राष्ट्रीय सेना का सेनापति, फोयले और दूसरे खास-खास काम करने वाले एक छुपी हुई जगह में बैठे हुये इस बात पर बहस कर रहे थे कि उन हथियारों को कैसे लूटा जावे। उनको पिस्तौलों और कारतूसों की बडी सख्त जरूरत थी और उनका पक्का इरादा था कि कैसे भी खतरे का सामना क्यों न करना पड़े, इस मौक़े को हाथ से नहीं जाने देना चाहिये।

पुलनमोर के स्टेशन पर उनको लूट सकना नामुमकिन बात थी। इसलिये सिर्फ एक तरकीब यही थी कि रास्ते में गाड़ी को रोक कर हथियारों को निकाल लिया जाय। पर रेल की पटरी के आसपास हमेशा सिपाही गश्त लगाते रहते थे।

अगर उनमें से कोई भी उनको देख लेता और बन्दूक चला कर अपने साथियों को ख़बरदार कर देता तो पंद्रह मिनट के भीतर तमाम रास्ते रोक दिये जा सकते थे। इसके सिवा और भी कितने ही सवाल थे; जैसे गाड़ी को कहाँ रोका जाय, हथियारों को किस तरह लाया जाय, गाड़ी को रोकने वाले किस तरह वापस आवें। सब लोगों की राय थी कि बिना मोटर के हथियार नहीं लाये जा सकते और गाड़ी रोकने वालों की हिफाजत का कोई ख़ास इन्तजाम करना चाहिये।

अखीर में उन लोगों ने इस काम के करने का एक उपाय निश्चित किया। यह तय हुआ कि फोयले दस पिस्तौल वाले गोरिल्ला लेकर गाड़ी को रोकने और हथियारों को छुपाने का काम करेगा और सेनापति के ऊपर उनकी हिफ़ाजत की जिम्मेदारी रहेगी।

रेलगाड़ी को रोकने के लिये जो मुक़ाम सोचा गया था वह पुलनमोर से तीन मील दूर था। उससे आधी मील के फ़ासले पर हिन्दुस्तान से लौटे हुये एक पेंशनयाफ्ता कर्नल का बंगला था। वह कर्नल पक्का राजभक्त था, अगर्चे फ़ौजी महकमे के बड़े अफ़सरों के साथ उसका बहुत झगड़ा होता रहता था। वह एक बुड्ढा आदमी था और उसका मिजाज चिड़चिड़ा था। पर राष्ट्रीय सेना वाले उसे बड़ा अच्छा आदमी समझते थे क्योंकि दो-तीन महीने पहले वे उसके घर में घुस कर बहुत से हथियार उठा ले गये थे।

उस दिन सुबह छै बजे जब कि बुड्ढा कर्नल सो रहा था, कुछ वालंटियर उसके बंगले में घुसे और चुपके से उसकी मोटर को बाहर निकाल लाये। कुछ वालंटियर बंगले के भीतर पहरा देने लगे कि अगर कोई-नौकर-चाकर

जग जाय तो उसको वहीं रोक दिया जाय। दो सरकारी सिपाही गश्त लगाते हुये रेल की पटरी के किनारे किनारे जा रहे थे। गोरिल्लाओं ने पीछे से उनको जा पकड़ा और हथियार छीन कर बाँध दिया। यह सब काम गाड़ी आने के आठ दस मिनट पहिले हो गया। अब फोयले और उसके दस साथी एक छुपी हुई जगह में बैठ कर गाड़ी की राह देखने लगे। जब गाड़ी आती दिखलाई दी तो एक आदमी पटरी के बीच में खड़ा होकर लाल झंडी हिलाने लगा। गाड़ी बड़ी खडखडाहट के साथ झंडी दिखलाने वाले के ठीक सामने आकर रुक गई। फौरन एक गोरिल्ला पिस्तौल लेकर इंजन के ऊपर चढ़ गया और बाकी लोग पीछे के डिब्बों में हथियारों के संदूक तलाश करने लगे। सब मुसाफिरों को कह दिया गया कि वे चुपचाप बैठे रहें, किसी से कुछ नहीं कहा जायगा। पाँच मिनट के भीतर उन लोगों ने दूसरे सामान के नीचे से तीन बकस खींच कर निकाल लिये जो देखने में कप्तान निकलसन के बताये मालूम पडते थे। बकस बहुत भारी थे और कुछ मुसाफ़िरों की मदद से उनको उठा कर मोटर में रखा गया। उसी वक्त फोयले को बंदूक की एक आवाज सुनाई दी जो कि उसे होशियार करने के लिये उसके साथियों ने चलाई थी। वह समझ गया कि अब देर करना खतरनाक है। इधर रेलगाड़ी फिर से स्टेशन की तरफ़ चली और उधर मोटर बड़े ज़ोर से कर्नल के बँगले की तरफ दौड़ी। बँगले के अहाते के पास पहुँच कर उन्होंने ऊपर से ही उन बकसो को भीतर की तरफ डाल दिया। मोटर उसी तेज़ी से चलने लगी और कुछ ही मिनटों में पहाड़ी के नीचे पहुँच गई। उसे वहीं छोड़ दिया गया और वालंटियर पैदल पहाड़ी के भीतर घुस गये।

कर्नल के मकान में जो वालंटियर मौजूद थे उन्होंने हथियारों के बकसों को अस्तबल में सैकड़ों मन घास के ढेर के नीचे छुपा दिया। दो दिन तक वे बकस वहीं रखे रहे और तब थोड़ा थोड़ा करके उनमें रखे हथियारों को राष्ट्रीय सेना के भंडार में पहुँचा दिया गया।

सेनापति ने फोयले और उसके साथ वाले गोरिल्लाओं के लौटने का बड़ा अच्छा इन्तजाम किया था, जिससे वे लोग बिना किसी मुशकिल के साफ बच कर निकल गये। सड़कों के चौराहों और दूसरे खास मुकामों पर कटे हुये पेड़ और बिना पहियों की गाडियाँ डाल कर सरकारी सेना का रास्ता रोक दिया गया था। कई मुकामों पर राष्ट्रीय सेना के गोरिल्ला भी छुपे हुये थे जिन्होंने गोलियाँ चला कर सरकारी फौज वालों को बहुत देर तक अटका रखा।

× × × ×

उसी दिन कप्तान निकलसन किसी काम से बाहर जा रहा था। वह एक ऊँची मोटर लारी पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था कि अचानक उसकी पिस्तौल परतल्ले से निकल कर मोटर में गिर गई। उसी समय फैर होने की आवाज आई और पिस्तौल की गोली जमीन पर खड़े हुये निकलसन की छाती में बाईं तरफ लगी। लोग उसे उठा कर छावनी के अस्पताल में ले गये, पर उसके प्राण रास्ते में ही निकल गये।

देशभक्ति का प्रमाण

—:o:—

बहुत से लोग इस घटना पर एतबार नहीं करेंगे क्योंकि यह किसी अखबार या सरकारी गजट में प्रकाशित नहीं हुई। खैर, वे लोग इसे एक किस्से की तरह ही पढ़ लें।

× × × ×

सन् १९२१ के अप्रैल महीने में राष्ट्रीय सेना का स्थानीय सेनापति पुलनमोर में अचानक पकड़ लिया गया। वह कसबे के एक होटल में बैठा हुआ था कि सरकारी सेना ने उस मकान को चारों तरफ से घेर लिया। करीब दस-बारह नौजवान पकड़े गये जिनमें सेनापति भी शामिल था। जब इन सब को सरकारी छावनी में लाये तो कुछ लोगों ने सेनापति को पहचान लिया। इस बात से सरकारी अफसरों की खुशी का ठिकाना न रहा, तो भी उन्होंने इस बात को बिलकुल छुपा कर रखा। यह खबर डबलिन में रहने वाले बड़े सेनापति के पास भेजी गई और पूछा गया कि राष्ट्रीय सेना के सेनापति का क्या किया जाय? लोगों का अन्दाजा था कि सेनापति को डबलिन भेजा जायगा, जहाँ पर उसे फाँसी दी जायगी या गोली से उड़ा दिया जायगा।

ये सब बातें राष्ट्रीय सेना वालों को अपने एक दोस्त से, जो सरकारी फौज वालों में मिला हुआ था, मालूम हुईं। इस खबर से उनको बड़ा धक्का लगा, क्योंकि सेनापति बड़ा होशियार आदमी था और सब लोग दिल से उसे प्यार करते थे। नायब सेनापति भी बहुत लायक आदमी था। पर वह ज्यादा पढ़ा-लिखा और विचारक शख्स था। वीरता में वह किसी से कम न था और

उसमें हर एक बात को समझने की अनोखी ताकत थी। सेनापति तमाम बातों का निश्चय उसकी सलाह से ही करता था।

बड़े सेनापति के पकड़े जाने से सब से ज्यादा मुशकिल नायब सेनापति के ही सामने पेश आई। अब उसकी जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई। उसके लिये सब से कठिन काम उन नौजवानों को कब्जे में रखना था जो सेनापति के पकड़े जाने से अधीर हो गये थे और चाहते थे कि उसको छुड़ाने के लिये फौरन कोई भयंकर साहसपूर्ण काम करना चाहिये। उस रात को जब राष्ट्रीय सेना वालों की कमेटी हुई तो सिवा नायब सेनापति के हर शख्स बिना देर लगाये कुछ न कुछ करने के पक्ष में था। लोगों के इस जोश के सबब से नायब सेनापति को आगे का प्रोग्राम (कार्यक्रम) तय करने में बड़ी मुशकिल जान पड़ी। उसने कहा—"हम लोग अब बड़े सेनापति के लिये कुछ नहीं कर सकते। जब हम लड़ाई कर रहे हैं तो इस तरह की घटनाओं का होना लाजिमी बात है। अगर हम जल्दी में कोई उलटा-सीधा काम कर बैठेंगे तो उससे हमारी हालत और भी खराब हो जायगी।"

वह पंद्रह मिनट तक इस तरह लोगों को समझाता रहा। पर जब मामला बढ़ने लगा और दूसरे आदमी किसी तरह चुप रहने को राजी न हुये तो कसान फोयले बोला—"मैं समझता हूँ कि सब लोग बिना देर लगाये कोई न कोई जोरदार उपाय करना चाहते हैं। इसलिये मेरी राय में सब को इस बारे में अपना-अपना ख्याल जाहिर करना चाहिये कि यह काम किस तरह किया जाय जिससे कामयाबी हो सके।"

नायब सेनापति ने कहा—"यह ठीक है। सब लोग अपना प्रस्ताव अलग-अलग पेश करो। सब से पहिले फोयले, तुम अपनी राय जाहिर करो।"

अब वादविवाद कुछ शान्ति के साथ होने लगा। करीब घन्टे भर तक सब अपनी-अपनी राय बतलाते रहे। इसी वक्त सरकारी छावनी से फिर उनके दोस्त ने खबर भेजी कि डबलिन से हुकम आ गया है और कल सवेरे सेनापति

को बड़े कड़े पहरे में यहाँ से भेज दिया जायगा। अब लोगों का जोश और भी बढ़ गया और सब ने पक्का इरादा कर लिया कि चाहे फायदा हो या नुकसान, पर एक बार सेनापति को छुड़ाने की कोशिश जरूर की जाय। नायब सेनापति भी लोगों के जोश के साथ बह गया।

× × ×

अब इन लोगों को तो यहीं पर बहस करने और हमला करने का ढंग सोचने के लिये छोड़ दीजिये और पुलनमोर से बारह मील पर बसे हुये मोयवीन नामक गाँव के हवाई जहाजों के अड्डे में चल कर टामी मैमफ़ेट से मुलाक़ात कीजिये। उस वक्त वह अपने दोस्तों की मण्डली में बैठा हुआ आनन्द कर रहा था। उस दिन वहाँ महायुद्ध की किसी खास घटना की यादगार में एक जलसा किया गया था और सब लोग खा-पीकर खूब मस्त हो रहे थे।

टामी मैकफ़ेट हवाई जहाज़ों का काम करने वाला कारीगर था। वह महायुद्ध में जर्मनी वालों से लड़ा था, और एक बार बहुत घायल हुआ था। इससे वह लड़ने के नाक़ाबिल हो गया और उसे हवाई जहाज़ों की मरम्मत का काम दिया गया। वह इस काम में बहुत होशियार था, पर उस तोप के गोले की आवाज़ ने, जिससे वह घायल हुआ था, उसके दिमाग़ में कुछ ख़राबी पैदा कर दी थी जिससे कभी-कभी वह सनक जाया करता था। अपने दिमाग़ की इस कमज़ोरी को दूर करने के लिये वह शराब पीने लगा और होते-होते उसकी आदत यहाँ तक बढ़ गई कि दिन-रात में एक घंटा भी बिना शराब के उसका काम नहीं चल सकता।

टामी मैकफेट आयरलैण्ड का रहने वाला था और उसको आयरिश राज्यक्रांति से बड़ा प्रेम था। उसने कई बार आयरिश राष्ट्रीय सेना में भरती होने की कोशिश की। पर राष्ट्रीय सेना वालों ने कभी उसकी बातों का खयाल न किया। क्योंकि वे समझते थे कि इस बातूनी और शराबी को अपने दल में

शामिल करने से क्या फायदा ? टामी मैकफेट इस बात से बड़ा नाराज होता और कहता था–"मैं भी आयरलैण्ड का वैसा ही सच्चा पुत्र हूँ जैसे कि तुम लोग। मैं दिल से पक्का बागी हूँ और अगर कभी मेरा दिमाग ठिकाने आ गया तो मैं सरकार के ऊपर एक ऐसी जोरदार चोट जमाऊँगा कि तुम सब देखते ही रह जाओगे।"

पर उसकी इन 'बहादुरी' की बातों पर सिवा उसके शराबी दोस्तों के और कोई ध्यान नहीं देता था। राष्ट्रीय सेना वाले उसे एक सीधासादा पागल समझते थे और दया की निगाह से देखते थे।

टामी मैकफेट ने आज के जलसे का निमंत्रण बड़ी खुशी के साथ मंजूर किया था; क्योंकि वहाँ पर मनमानी शराब मिलने का मौका था। पर एक बड़े ताज्जुब की बात यह थी कि उस दिन वह एक समझदार आदमी की तरह बातचीत कर रहा था। उसकी आँखों में एक खास तरह की चमक मालूम देती थी और वह अपने दाँतों को बार-बार इस तरह पीस रहा था जिससे मालूम होता था कि उसने किसी काम के करने का पक्का इरादा कर लिया है। आज टामी हर एक बात का जवाब ऐसी सावधानी और शांति से दे रहा था जैसा कि उसने बरसों से नहीं किया था। पर उसके इस बदलाव की तरफ किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि सब लोग खुशी मनाने, शराब पीने या सोने में लगे हुये थे।

टामी किसी बात का इन्तजार करता मालूम होता था। अब सुबह के छः बजने वाले थे। सोने वाले जग रहे थे और रात भर जलसे में जागने वाले सोने की तैयारी कर रहे थे। इतने में उस जहाज़ी अड्डे के दो बड़े अफ़सर चार्ल्स मैडफ़ाक्स और जान समिट बाहर आये। दोनों अफ़सर खुश दिखलाई देते थे और उनके चेहरे से साफ़ मालूम पड़ता था कि उन्होंने रात को खूब शराब उड़ाई है। अफ़सरों ने टामी और दूसरे तीन-चार आदमियों को अपने पास आने का इशारा किया। चार्ल्स ने टामी से कहा—"तुम लोग जल्दी से

एक छोटा और सबसे अच्छा जहाज़ ले आओ। हम थोड़ी देर के लिये सैर के वास्ते जाना चाहते हैं। यह भी देख लेना कि जहाज़ की तोपें पूरी भरी हुई हैं। क्योंकि हम पहाड़ियों की तरफ सैर करने को जायेंगे और वहाँ पर ख़ुश-किस्मती से शायद हमको कुछ बाग़ी मिल जायँ।"

टामी और दूसरे लोग लड़खड़ाते हुए और अफ़सरों को अपने दिल में बुरा-भला कहते जहाज़ों के छप्पर के भीतर गये। उन्होंने जब तक जहाज़ को तैयार किया तब तक चार्ल्स साहब भी अपना चमड़े का कोट और हैमलेट (मुंह ढकने का टोपा, जिसे हवाई जहाज़ वाले काम में लाते हैं) पहिन कर आ गये। वे जहाज़ चलाने वाले की जगह पर बैठ गये और टामी से कहा—"देखो, भीतर जाकर समिट साहब से कहो कि मैं तैयार हूँ और उनका रास्ता देख रहा हूँ।"

टामी बिना कुछ बोले भीतर चला गया। उस वक्त समिट साहब अपने कमरे में खड़े हुये चमड़े का कोट पहिन रहे थे और हैमलेट उनके पास पड़ा हुआ था।

टामी ने हैमलेट को उठा कर अपने सर पर रख लिया और गुर्रा कर बोला—"यह कोट भी मुझे दो।"

जान समिट ने गुस्से में भर कर कहा—"हरामज़ादे, क्या बकता है! तेरी इतनी हिम्मत!"

उस वक्त टामी के चेहरे से पागलपन का भाव साफ़ जाहिर हो रहा था। जान समिट सोचने लगा कि इस पागल का क्या इलाज किया जाय। इतने में टामी ने जोर से उसके पेट में लात मारी और उसे नीचे गिरा कर दोनों हाथों से गला पकड़ कर दबाने लगा। इस अचानक हमले के सबब से जान समिट अपना कुछ भी बचाव न कर सका और टामी ने एक ही मिनट में उसकी गर्दन तोड़ दी। उसने चमड़े का कोट समिट साहब के बदन से उतार कर खुद पहिन लिया और उसकी पिस्तौल अपने जेब में रख ली। इसके बाद उसने

जान समिट के मुर्दा शरीर को एक जीने के नीचे छुपा दिया और शांति के साथ बिना किसी तरह की घबराहट जाहिर किये वह हवाई जहाज़ के पास आया।

चार्ल्स साहब बिना पीछे की तरफ़ मुड़े पुकार कर बोले—"अरे, जल्दी से बैठो। तुम तो बड़ा वक्त ख़राब करते हो।"

दूसरे लोगों ने, जो हवाई जहाज के पंखों को पकड़ कर खड़े थे, इस बात की तरफ़ कुछ खयाल नहीं किया कि जहाज में कौन बैठ रहा है। अगर्चे टामी का मुँह हैमलेट से बिलकुल छुपा हुआ था तो भी उसके बदन और चार्ल्स से साफ़ फर्क मालूम पड़ता था। पर उस वक्त सब लोग शराब के नशे में चूर हो रहे थे और चाहते थे कि किसी तरह यह बला दूर हो तो सोने को जायँ।

टामी पिछली बैठक में जाकर बैठ गया और जहाज़ धीरे-धीरे ऊँचा उठने लगा। चार्ल्स साहब का ध्यान जहाज़ के चलाने में लगा था और उन्होंने अपने साथी से बहुत देर तक कुछ भी बातचीत न की। टामी ने धीरे-धीरे तोपों को ठीक किया और चलाने के लिये बिलकुल तैयार कर लिया। पर उसकी निगाह चार्ल्स पर बराबर लगी हुई थी।

कुछ देर तक वे पुलनमोर की तरफ़ उड़ते रहे। पर, टामी का इस तरफ़ कुछ खयाल न था। अभी वह किसी खास काम के करने का निश्चय न कर सका था। इतने में चार्ल्स ने कहा—"वह देखो पुलनमोर से हमारी फ़ौज की कुछ मोटर गाड़ियाँ आ रही हैं। मैं जहाज को उनके पास ले चलता हूँ, जरा उनसे राजी-खुशी पूछ लें।"

टामी ने एक हुंकारा भर कर अपनी राय दे दी। उसने देखा कि पुलनमोर की सड़क पर एक हथियारबन्द मोटर गाड़ी चली जा रही है और उसके पीछे दो फौजी मोटर लारियाँ हैं। वह नहीं जानता था कि उस गाड़ी में राष्ट्रीय सेना का सेनापति डबलिन भेजा जा रहा है और कुछ मील आगे राष्ट्रीय सेना वाले इन गाड़ियों पर हमला करने की घात में बैठे हुये हैं। वह सिर्फ़ इतना

समझता था कि यह सरकारी सिपाहियों का एक दल कहीं को जा रहा है। हवाई जहाज़ धीरे-धीरे नीचे उतरता हुआ मोटर गाड़ियों की तरफ जा रहा था। उस वक्त तक टामी ने एक आवाज़ भी मुँह से नहीं निकाली। जब जहाज़ मोटर-गाड़ियों के ठीक ऊपर पहुँच गया तो उसने एकाएक तोपों का मुँह उनकी तरफ़ खोल दिया। कई मन जलती हुई धातु मोटरों पर गिरी। मोटर वालों ने भी घबड़ा कर अपनी तोपें हवाई जहाज की तरफ छोड़ीं, पर चार्ल्स ने उसे एक-दम ऊपर उड़ा दिया।

"जान, क्या तुम पागल हो गये हो! तुमने यह क्या किया कि अपने ही आदमियों पर तोप चला दी!!" चार्ल्स अपने को किसी तरह सँभाल कर इतनी बात कह सका।

टामी गुर्रा कर बोला—"अब तुम जहाज़ को सीधी तरह पुलनमोर की छावनी को ले चलो। आज मैं उन सब को थोड़ा-थोड़ा मज़ा चखाना चाहता हूँ। ये बदमास राष्ट्रीय सेना वाले कहते थे कि मैं उनमें शामिल होने लायक़ नहीं हूँ। अब उनको पता लग जायगा कि मैं उनसे भी सच्चा आयरलैण्ड का पुत्र हूँ। अच्छा, अब तुम भले आदमी की तरह मेरी बात मान कर जहाज़ को पुलन-मोर ले चलते हो या नहीं?"

चार्ल्स साहब को फ़ौज का काम करते हुये कितनी ही बार बड़ी-बड़ी आफतों का मुकाबला करना पड़ा था; पर ऐसा बेढब मामला कभी उनके सामने नहीं आया था। उन्होंने जर्मनी वालों के साथ लड़ने में बड़ी बहादुरी दिखाई थी, इसलिये बड़े अफसर उनकी इज्जत करते थे। वे इस अनोखी आफत से निकलने की कोई तरकीब सोचने लगे। आखीर में उन्होंने तय किया कि या तो वे अपने पीछे बैठे हुए शख्स को मारेंगे या खुद मर जायँगे। अपनी मातृभूमि के साथ दग़ाबाजी करने का काम उनसे कभी नहीं हो सकता।

चार्ल्स ने चुपके से अपनी पिस्तौल उठाई और एक दम पीछे की तरफ फिर कर टामी पर निशाना लगाया। टामी को अगर्चे इस बात का खयाल नहीं था कि चार्ल्स इतनी जल्दी फैसला कर लेगा तो भी वह तैयार बैठा था। दोनों की पिस्तौलें एक साथ छूटीं और अपने निशाने पर लगीं। अब हवाई जहाज का कोई रखवाला न रहा और वह कुछ मिनट तक इधर-उधर चक्कर खाकर लोटता-पोटता हुआ जमीन पर गिरा। कुछ ही सेकण्ड में उसमें आग लग गई और जब सरकारी सिपाही उसकी तलाश करते-करते उस मुकाम पर पहुँचे तो उनको कुछ राख एक टूटे-फूटे इंजन और आदमी की कुछ हड्डियों के सिवा कुछ न मिला।

× × × ×

राष्ट्रीय सेना वालों ने मोटरों पर हमला करने की जो तैयारी की थी यह यों ही रह गई। हवाई जहाज की तोपों से मोटरों का बड़ा नुकसान हुआ था। उनमें बैठे हुये ज्यादातर सिपाही घायल हो गये और कई मर भी गये। पर खुदकिस्मती से राष्ट्रीय सेना का सेनापति बच गया और उसको घाव भी बहुत हलका लगा। इसलिये जब सब लोग अपनी-जान बचाने की फिक्र कर रहे थे, और खूब गड़बड़ी मची हुई थी, वह भी चुपके से मोटर से उतर कर खेतों की तरफ भागा। उस वक्त तमाम सिपाही आँखें फाड़-फाड़ कर हवाई जहाज को देख रहे थे. और किसी का ध्यान सेनापति की तरफ नहीं गया।

इसके बाद आयरलैण्ड के बड़े हाकिमों ने इस मामले का भेद जानने की बड़ी कोशिश की, पर किसी तरह पता न लग सका। क्योंकि इस भेद को जानने वाला कोई बचा ही न था। करीब पंद्रह दिन बाद जीने के नीचे से जान समिट का मुर्दा शरीर बरामद हुआ। टामी का भी किसी तरह पता न चला। उसके बारे में यही खयाल किया गया कि वह नशे की झोंक में या तो

कहीं चला गया या उसने आत्महत्या कर ली। पर इन बातों को जाहिर करना राजनीति और सरकार की शान के खिलाफ था। इसलिये तमाम मामला भीतर ही भीतर दबा दिया गया और टामी के गुम होने के बारे में यह कहा गया कि राष्ट्रीय सेना वाले जासूस होने के सन्देह में उसे पकड़ ले गये और शायद जान से मार डाला !

कैदी की रिहाई

—:o:—

अप्रेल का महीना था। मौसम काफी अच्छा हो गया था। फोयले और उसके दल की ताकत इतनी बढ़ चुकी थी कि वे बहुत कुछ निश्चिन्त होकर अपना ज्यादा समय जिले की व्यवस्था करने में खर्च करते थे। ऐसे समय में एक दिन खबर आई कि उनका एक खास साथी जान होगन एक कस्बे में पकड़ा गया है। वह अपने एक सम्बन्धी के यहाँ किसी उत्सव में भाग लेने गया था कि सरकारी फौज को एक जासूस से उसका पता लग गया। उत्सव में भाग लेने वाले आधी रात तक खुशियाँ मना कर दो-तीन घन्टे ही सोये होंगे कि सरकारी फौज के एक बड़े दल ने उस मकान को घेर लिया। जान होगन अच्छी तरह जग भी नहीं पाया था कि सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया।

जान होगन गोरिल्ला दल में सर्व-प्रिय था और कुछ लोगों से उसकी बड़ी गहरी मित्रता थी। उन लोगों ने निश्चय किया कि जब पुलनमोर से कार्क जेल में भेजा जाय उस समय उसे छुड़ाने की अवश्य कोशिश की जाय।

पुलनमोर की फ़ौजी हवालात में जान होगन पर काफी अत्याचार किये गये। दल के संगठन का भेद खोल देने के लिये उसे काफी धमकाया और मारा-पीटा गया। उसे यह भी समझाया गया कि तुम्हारा भेद तुम्हारे साथियों ने ही खोल दिया था और इसी लिये तुम पकड़े जा सके। पर होगन

इन चालों को अच्छी तरह समझता था और सब कुछ कष्ट सह कर भी वह अपने दल के प्रति वफ़ादार बना रहा।

आठ-दस दिन तक होगन को हवालात में रखने के बाद कार्क की बड़ी जेल में भेजने का हुकम दे दिया गया। उसकी निगरानी के लिये चार सिपाही और एक सारजन्ट को साथ में भेजा गया। उन लोगों से कह दिया गया कि अगर रास्ते में कोई क़ैदी को छुड़ाने की कोशिश करे तो वे तुरन्त उसको जान से मार दें।

इधर होगन के मित्र इसके छुड़ाने की योजना कर रहे थे। उन्होंने बालून के स्टेशन को इस काम के लिये चुना, क्योंकि उन दिनों वहाँ के स्टेशन पर सरकारी सेना का पहरा न लगता था और कुछ ही दूर पर छुपने के लिये पहाड़ी स्थान था। उन लोगों ने अपने दो साथियों को पुलनमोर से ही रेल में बैठ जाने की आज्ञा दी थी ताकि जैसे ही गाड़ी बालून के स्टेशन पर पहुँचे वे इशारे से बतला दें कि कैदी कौन से डिब्बे में है। बालून के स्टेशन पर गाड़ी केवल दो मिनिट रुकती थी। और सम्भव था कि इतने समय में गोरिल्ला दल वाले उस डिब्बे को न ढूँढ़ पाते जिसमें होगन बैठा था।

गाड़ी शाम को ६ बजे आने वाली थी। केसी और उसके चार साथी पाँच बजे ही मौके पर पहुँच गये और स्टेशन से एक फर्लांग की दूरी पर एक बाग में छुप कर बैठ गये। पहले से स्टेशन पर पहुँच जाने से सम्भव था कि कोई जासूस उनमें से किसी को पहचान लेता और उनकी योजना को व्यर्थ करने की चेष्टा करता।

जब गाड़ी के आने का सिगनल हो गया और गाड़ी के आने में सिर्फ

पाँच मिनिट रह गये तो वे जल्दी से स्टेशन की तरफ दौड़े। मुसाफिरखाने में थोड़ी सी भीड़ थी और बचे हुये मुसाफिर प्लेटफार्म पर जल्दी पहुँचने की कोशिश कर रहे थे। हड़बड़ी में फोयले एक सभ्य वृद्ध मुसाफिर से टकरा गया और उसे गिरने से बचाने के प्रयत्न में वह स्वयं जमीन पर गिर गया। पर इस समय दूर से गाड़ी आने की आवाज़ सुनाई दे रही थी इसलिये ज्यादा सोच-विचार का या बुड्ढे से क्षमा माँगने का अवसर न था। फोयले जल्दी से उठ बैठा और सब लोग तेज़ी से प्लेटफार्म की ओर बढ़े।

गाड़ी अच्छी तरह खड़ी भी न होने पाई थी कि एक खिड़की में से गोरिल्लाओं के साथी ने इशारा किया। पाँचों आदमी उसी डिब्बे की तरफ दौड़े। यह डिब्बा कई छोटे-छोटे हिस्सों में बँटा था और हर एक में अलग से दरवाज़ा लगा था। बीच में एक लम्बी गली सी बनी हुई थी। होगन को एक कमरे में हथकड़ी पहने बैठा देखते ही फोयले ने हमले का हुक्म दिया। पाँच सैकिण्ड के भीतर ही सब लोग कैदी के कम्पार्टमेंट में कूद कर जा पहुँचे और सिपाहियों को हुक्म दिया—"हाथ ऊपर उठाओ।"—"हाथ ऊपर उठाओ।" बाद में इन लोगों को मालूम हुआ था कि इसके दो-चार सैकिण्ड पहले ही सारजण्ट ने संगीन की नोक होगन को चुभाते हुये दुष्टभाव से पूछा था कि, "अब तुम्हारे साथी तुमको छुड़ाने क्यों नहीं आते?"

जैसे ही ये लोग डिब्बे के भीतर कूद कर घुसे, सिपाहियों को उनका उद्देश्य मालूम हो गया। एक सिपाही ने पिस्तौल निकाल कर उसका मुँह कैदी के कान की तरफ किया। केसी जान गया कि वह सरकारी हुक्म के मुताबिक होगन की हत्या करना चाहता है। एक क्षण की देर होते ही मामला बिगड़

जाता। केसी ने तुरन्त उस सिपाही पर गोली चलाई जो छाती में लगी और वह बिना एक भी शब्द बोले एक ओर लुढ़क गया।

अब दोनों दलों में भयंकर लड़ाई शुरू हुई। मुसाफिरों को भी लड़ाई का पता चल गया और कितने ही व्यक्ति खिड़कियों से कूद कर इधर-उधर भागने लगे। पर गोरिल्लाओं को इस तरफ ध्यान देने का अवसर न था। उनका साथी हथकड़ियों से जकड़ा होने के कारण अब भी कुछ करने में असमर्थ था और उसे खींच कर बाहर निकालना आवश्यक था। चार सिपाहियों में से एक तो मर चुका था। दूसरा गोली के चलते ही बदहवास होकर दूसरी तरफ की खिड़की से कूद कर ऐसे जोर से भागा जैसे कोई साँड किसी भयंकर चीज़ से भड़क कर भागता है। बाद में सुनने में आया कि वह रात भर पागलों की तरह इधर-उधर घूमता फिरा और दूसरे दिन दोपहर को एक फौजी चौकी में पहुँच कर बेहोश होकर गिर पड़ा।

शेष दो सिपाही और सारजण्ट लड़ने लगे। पर रेल का कम्पार्टमेंट बहुत छोटा था और गोरिल्लाओं को केवल सिपाहियों की गोलियों का ही डर न था, बल्कि अपने ही साथियों की गोलियों से भी घायल हो जाने का भय था। तो भी उन्होंने अपनी जान की परवाह न करके होगन को डिब्बे से बाहर खींच कर एक सुरक्षित जगह में पहुँचा दिया। इतने समय में एक सिपाही और मारा जा चुका था और दूसरा बेहोश सा होकर गाड़ी के फर्श पर लेट गया था। गोरिल्लाओं ने उसे मरा हुआ समझ कर छोड़ दिया। अब सारजण्ट अकेला था और लड़ते-लड़ते वह प्लेटफार्म पर चला आया था। केसी, फोयले और इनके साथियों को भी ज़ख्म लगे थे, पर वे हिम्मत करके बराबर मुकाबला

कर रहे थे। जब ये लोग प्लेटफार्म पर सारजण्ट से लड़ने लगे तो गाड़ी में पड़ा हुआ सिपाही उठ बैठा और वहीं से बन्दूक से गोली चलाने लगा। उसकी एक गोली केसी के दाहिने हाथ में लगी और उसकी पिस्तौल छूट कर गिर पड़ी। केसी ने बायें हाथ से भी निशाने पर गोली मारने का अभ्यास कर लिया था। उसने तुरन्त दूसरी पिस्तौल निकाल कर सिपाही पर निशाना लगाया। यह देखते ही वह भाग खड़ा हुआ। इधर सारजण्ट भी लड़ते-लड़ते प्लेटफार्म पर गिर कर दम तोड़ रहा था।

× × × ×

यह तमाम घटना तीन-चार मिनिट में ही घट गई। रेल के ड्राइवर ने जब दूर से सारजण्ट को गिरते देखा तो डर कर उसने बिना सिगनल गिरे ही इंजिन को चला दिया। इधर गोरिल्ला भी दुश्मन पर विजय प्राप्त करके अपने साथी को लेकर स्टेशन से बाहर चले गये। इस समय स्टेशन पर चारों तरफ भगदड़ मची हुई थी। कितने ही लोग कमरों के भीतर घुस गये थे और कितने ही खम्भों के पीछे छुपे हुये थे। कुछ लोग जो भय के कारण भागने में भी असमर्थ थे बदहवास-से खड़े हुये गोरिल्लाओं की तरफ़ आश्चर्य से ताक रहे थे। किसी में भी इतना साहस न था जो इन लोगों से रोक-टोक करता। गोरिल्लाओं में घायल तो सभी हुये थे, पर केसी की हालत खराब थी। बन्दूक की गोली उसके शरीर में घुस गई थी और घाव से बराबर खून निकल रहा था। इस कारण स्टेशन से निकलते समय उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। एक अनजान व्यक्ति ने उसे सहारा देकर सड़क तक पहुँचाया, जहाँ उसके अन्य साथी जान होगन की हथकड़ियों को काट रहे थे। थोड़ी ही देर बाद वे

फिर चलने लगे क्योंकि जैसे-जैसे समय बीत रहा था दुश्मन के आने का डर बढ़ता जाता था। धीरे-धीरे वे एक पहाड़ी पगडण्डी द्वारा चार-पाँच मील की दूरी पर एक गाँव में जा पहुँचे। वहाँ उनकी भेंट गोरिल्ला दल से सम्बन्ध रखने वाले कुछ लोगों से हुई जिन्होंने उनको आश्रय दिया। केसी को एक चारपाई पर लिटा दिया गया और उसकी चिकित्सा के लिये एक डाक्टर बुलाया गया। डाक्टर ने बतलाया कि इसके बदन से खून अधिक निकल गया है, इसलिये बच सकने की आशा कम है। फिर भी उसने मरहमपट्टी कर दी। उधर सरकारी सेना के बड़े-बड़े दल बालून के आस पास के सब स्थानों में आक्रमणकारियों की खोज कर रहे थे। आधी रात के पहले ही खबर मिली कि फौज का एक दल उसी गाँव की तरफ जा रहा है। तुरन्त ही गाँव के प्रधान व्यक्तियों की एक कमेटी सलाह करने के लिये इकट्ठी हुई। कहीं से एक मोटर गाड़ी लाकर उसमें बेहोश केसी को लिटा दिया गया। दूसरे साथी भी उसमें बैठ गये और सब लोग अपने हैडक्वार्टर की तरफ रवाना हुये। रास्ते में वे लोग सरकारी फौज की उसी चौकी के पास होकर गुजरे जिसमें बालून के स्टेशन पर मारे गये दो सिपाहियों और सारजण्ट के शव लाकर रखे गये थे पर सौभाग्य से किसी ने उनकी मोटर पर सन्देह नहीं किया और वे खतरे के क्षेत्र से बाहर निकल गये। हैडक्वार्टर मे पहुँच कर घायलों की सेवा-सुश्रूषा का पूरा प्रबन्ध किया गया। केसी की दशा दो सप्ताह तक सन्देहजनक बनी रही, पर अन्त में अपने साथियों के प्रयत्न से वह बच गया और एक महीने के बाद चंगा होकर फिर गोरिल्ला दल की कार्यवाहियों में भाग लेने लगा।

सरकारी सेनापति पर आक्रमण

——:o:——

अब आयरलैण्ड के गुरिल्ला दल की शक्ति इतनी बढ़ चुकी थी कि पुलिस या फौज के छोटे-मोटे दलों पर रास्ते में हमला करने के बजाय वे उनकी बैरकों और छावनियों पर ही हमला करने की योजनायें करने लगे। इतना ही नहीं अब उनका इरादा फौजी सिपाहियों और पुलिस कान्स्टेबिलों के बजाय बड़े-बड़े सरकारी अफसरों पर हमला करने का भी हो रहा था जिससे देश में हलचल मच जाय। ब्रिटिश सरकार तथा दुनिया का ध्यान आयरिश गुरिल्ला दल की तरफ आकर्षित हो सके।

इन्हीं दिनों पुलनमोर के राष्ट्रीय सेनापति को खबर मिली कि आयरलैण्ड स्थिति सरकारी सेनाओं के बड़े सेनापति का दौरा उस ज़िले में होने वाला है। यद्यपि क्रान्तिकारियों के भय से उस समय बड़े अफसरों के आने-जाने की खबरें बहुत गुप्त रखी जाती थीं, तो भी गुरिल्ला दल को अपने जासूसी विभाग से सरकारी सेनापति के आने की तारीख और समय का ठीक पता बहुत पहले से लग गया। उनके सूचना देने वाले ने बतलाया कि सर्व साधारण को पता न लगे इस ख्याल से सेनापति का स्वागत स्टेशन पर न किया जायगा। बल्कि ठीक समय पर कुछ फ़ौजी गाड़ियाँ स्टेशन पर पहुँचकर उनको छावनी में ले आयेंगी और वहीं धूम-धाम से स्वागत होगा। गोरिल्ला-दल ने निश्चय किया कि इस मौके पर सेनापति पर हमला करके दुश्मन पर अपनी धाक जमाई जाय, जिससे फिर साधारण फौजी पुलिस दलों का साहस ही मुकाबला करने का न हो।

सरकारी सेनापति की स्पेशल गाड़ी पुलनमोर के स्टेशन पर शाम के

पाँच बजे पहुँचने वाली थी। कई दिन पहले से ही गुरिल्ला दल वालों ने उसके आस पास के सब स्थानों की जाँच करके अपनी योजना पक्की कर ली। स्टेशन मुख्य सड़क से दो सौ गज की दूरी पर था। स्टेशन से आने वाली सड़क जिस जगह मुख्य सड़क में मिली थी उसी जगह एक चाय वाले का होटल था। इस होटल में प्रायः रेल के पाजी और आस पास के देहाती लोग आया करते थे और कभी-कभी शहर के घूमने वाले भी पहुँच जाते थे।

सरकारी सेनापति पर हमला करने का काम फोयले के दल के सुपुर्द किया गया था और उसने इसी चाय के होटल के मुकाम को अपनी कार्यवाही के लिये चुना था। ये सब लोग, जिनकी संख्या १२ होगी, दोपहर के बाद दो-दो, एक-एक करके बाइसकिलों हर शहर से रवाना हुये और चार बजे के लगभग होटल में एकत्रित हो गये। वहाँ पर ये लोग अलग-अलग टेबुलों पर बैठ कर चाय पीने लगे और इस तरह बातें करने लगे जैसे एक दूसरे से विशेष परिचित न हों और संयोग से होटल में मिल गये हों। इनकी बातें ज्यादातर खेती के और फसल आदि के बारे में थीं, राजनैतिक चर्चा का एक शब्द भी किसी ने मुँह से नहीं निकाला।

जब पौने पाँच का समय हो गया तो ये लोग सावधान होकर इधर-उधर ताकने लगे। इस बीच में कई लोगों की निगाह अपनी घड़ियों की तरफ गई। अब भी गाड़ी के आने में दस-बारह मिनट की देर थी। सब से पहला चिह्न जो इन लोगों को दिखलाई पड़ा वह एक पुलिस का सिपाही था जो उसी समय एक फर्लांङ्ग की दूरी पर स्थित पुलिस की चौकी से आकर सड़क के चौराहे पर खड़ा हो गया था। उसके आने का मतलब यही था कि सेनापति की गाड़ी के आने के समय अन्य सवारियों को रोक दे। इसके चार-पाँच मिनट बाद चार फौजी मोटर लारियाँ, जिनमें हथियारबन्द सिपाही बैठे थे, छावनी से आईं और स्टेशन के बाहर पहुँच कर क़ायदे के साथ खड़ी हो

गई। इसके सिवाय फौजी पुलिस के और भी कई व्यक्ति स्टेशन वाली सड़क पर इधर से उधर घूम कर पहरा देने लगे।

गोरिल्लाओं ने भी अपना सब इंतज़ाम एक दिन पहले ही कर लिया था। उनको मालूम था कि सबसे पहले रक्षकों की एक मोटर आयेगी, उसके बाद सेनापति की गाड़ी होगी और उसके पीछे अन्य फौजी मोटर लारियाँ आयेंगी। चाय के होटल के बगल में ही खेती के काम की एक भारी लकड़ी की गाड़ी पड़ी थी। ठीक वक्त पर केसी, ओहारा और अन्य दो गुरिल्ला इस गाड़ी को खींच कर सड़क के बीच में लाने वाले थे जिससे सेनापति की गाड़ी का रास्ता रुक जाय और जैसे ही इस बाधा के कारण उसकी चाल धीमी पड़े दूसरे लोग उस पर बम गोला फेंक कर मारें। उसके बाद दूसरी लारियों के सिपाहियों का मुकाबला रिवालवरों से किया जायगा।

अब स्टेशन पर इंजिन के आने की सीटी सुनाई थी। सब गोरिल्ला चौकन्ने हो गये, पर कोई अपनी जगह से उठा नहीं। क्योंकि अभी दो-तीन मिनट की देर थी और अगर वे ठीक समय से एक सेकिण्ड पहले भी अपना काम शुरू कर देते तो उनकी सारी योजना व्यर्थ हो सकती थी। जरा देर बाद स्टेशन की तरफ से मोटरों के इंजिन के स्टार्ट होने की आवाज आने लगी। अब ठीक समय आ गया था और सब गुरिल्ला बाहर निकल कर अपनी-अपनी जगह पर मुस्तैदी से खड़े हो गये। केसी और उसके तीनों साथी खेतों की गाड़ी को पकड़ कर सड़क की तरफ घसीटने लगे। गाड़ी उनके अनुमान से अधिक भारी निकली। इसलिये उनको अपनी पूरी ताकत उसे ढकेलने में लगा देनी पड़ी।

अचानक केसी को किसी की आवाज सुनाई पड़ी। उसने सर उठा कर देखा तो चौराहे पर खड़ा कांस्टेबिल दौड़ कर उनके पास आ गया था और उनको धमका रहा था—"खबरदार, अभी गाड़ी को मत लाओ। बड़े सेनापति साहब कुछ सेकिण्डों में ही यहाँ से गुजरने वाले हैं।"

गोरिल्लाओं ने उसकी बातों पर ध्यान न देकर अपना काम जारी रखा। केवल केसी ने जोर से उसे धमकाया और रास्ते से हट जाने को कहा। पर वह ऐसा मूर्ख था कि अभी तक इन लोगों का मतलब न समझा। उसने यही ख्याल किया कि ये खेत वाले मेरी बात का मतलब नहीं समझे हैं। इसलिये वह बार-बार इनको रोकने लगा। ओहारा उसी समय कांस्टेबिल को मारने को तैयार हुआ, पर केसी ने इशारे से उसे रोक दिया, क्योंकि उसे भय था कि अगर एक भी गोली की आवाज सुनाई दे गई तो सम्भव है सेनापति की गाड़ी स्टेशन पर ही रुक जाय, और बना-बनाया खेल बिगड़ जाय। पर एक अन्य साथी ने, जो दूर एक पेड़ के पीछे खड़ा था, इस झगड़े को देखा और दौड़ कर अपना बम पुलिसमैन के सर पर फेंक दिया। पर जल्दबाज़ी में उसे यह ख्याल न रहा कि हमारे साथी भी पास ही खड़े हैं और बम से वे भी घायल हो सकते हैं। कुशल हुई कि बम हलके ढङ्ग का था और सिवाय पुलिसमैन के घायल होने के किसी को खास चोट न लगी। हाँ, उसके धमाके के जोर से सब गिर अवश्य पड़े। पर दूसरे ही क्षण वे फिर खड़े हो गये और गाड़ी को सड़क की तरफ ले जाने लगे। इसी समय सेनापति के दल के आगे चलने वाला 'डिस्पैच राइडर' अपनी मोटर साइकिल पर तेजी से गुजरा। दो सैकिण्ड बाद पहली मोटर गाड़ी आई और गोरिल्लाओं ने उस पर गोली चलाई। मोटर में से भी गोली के जवाब में गोली आई। पर यह गाड़ी ठहरी नहीं, तेजी से आगे बढ़ गई। गोरिल्लाओं ने भी उसकी तरफ ज्यादा ध्यान न दिया क्योंकि उनका मुख्य निशाना तो दूसरी गाड़ी थी, जिसमें वे समझते थे कि सेनापति बैठे होंगे। पहली गाड़ी पर तो उन्होंने दो-एक गोलियाँ सिर्फ इसी ख्याल से चला दी थीं कि वह डर कर जल्दी से भाग जाय। यह पहली गाड़ी इतनी तेजी से जा रही थी कि केसी और उसके साथी उसमें बैठे हुये लोगों की एक झलक भी न देख सके।

अब खेती की गाड़ी बीच सड़क पर पहुँची और उसी समय दूसरी

मोटर उसके पास पहुँच कर रुकी, तुरन्त ही हर तरफ से उस पर बम गोलों और गोलियों की वर्षा होने लगी। पर यह एकतरफा लड़ाई न थी। दुश्मन की दूसरी लारी वालों के पास बन्दूकें और मशीनगनें थीं, वे भी इन लोगों पर गोलियों की वर्षा करने लगे। इधर गोरिल्ला न० २ की मोटर का निशाना लगा कर गोलियाँ चला रहे थे और उधर पिछली मोटर लारी वाले इनको निशाना बना रहे थे। इस समय केसी और उसके तीन साथी, जो खेती की गाड़ी के पास खड़े थे, बड़े खतरे में थे। उन पर फौजी सिपाहियों की गोलियाँ तो चल ही रही थीं, पर अपने दल वालों द्वारा फेंके हुये बम गोलों से भी उनको बड़ा खतरा था। उनका कोई टुकड़ा उछल कर उनको लग जाता तो चोट लगने में कुछ भी सन्देह न था। पर इस समय इसका किसी को ख्याल न था; सब मतवाले होकर लड़ रहे थे। अचानक केसी के एक साथी की छाती में फौजी सिपाहियों की गोली लगी और वह वहीं गिर कर खत्म हो गया। केसी के भी पैर में घाव लगा, पर वह उतना भयंकर न था। गोरिल्लाओं को अपने साथी की मृत्यु से बड़ा दुःख हुआ, पर यह समय रोने का न था। चारों तरफ से दुश्मन की गोलियों की बौछार हो रही थी और अपने बचाव का उपाय करना आवश्यक था। शेष सब लोग तो पहले ही से आड़ से गोली चला रहे थे। पर केसी, ओहारा और उसका एक साथी गाड़ी के पास होने से दुश्मन का निशाना बने हुये थे। वह तो घबराहट और हड़बड़ी के कारण सरकारी सिपाही निशाना लगा कर गोली न चला सके, वर्ना इनमें से एक भी न बच पाता। अब ये लोग भी चाय के होटल की तरफ दौड़े और उसकी आड़ से गोली चलाने लगे। पर सरकारी सिपाहियों ने ज्योंही रास्ता साफ़ देखा वे लोग भी छावनी की तरफ़ भाग खड़े हुये। केवल नं० २ की मोटर टूटी-फूटी हालत में वहाँ खड़ी रह गई। उसमें बैठे हुये सब लोग मुर्दा या घायल उसी के भीतर पड़े थे।

इस प्रकार अंत में मैदान गुरिल्लाओं के हाथ रहा। उनको विश्वास था कि

हमने बड़े सेनापति को मार दिया और इस खुशी में वे अपने साथी के मरने का दुख बहुत कुछ भूल गये। पर यह समय जरा भी देर करने का न था। क्योंकि जैसे ही छावनी में हमले की खबर पहुँचती वहाँ से सैकड़ों सिपाहियों का इनके मुकाबले के लिये मोटर गाड़ियों पर दौड़ कर आना निश्चित था। इस समय वे अपने मुर्दा साथी के शव को ले भी नहीं जा सकते थे, अतः उन्होंने उसे उठा कर चाय घर में रख दिया, उसके लिये ईश्वर-प्रार्थना की और सब लोग बाइसकिलों पर चढ़ कर शहर की तरफ़ रवाना हुये। थोडी ही दूर जाने पर फोयले को जान पड़ा कि उसकी बाइसकिल की हवा निकल गई है। उसने तुरन्त उसको वहीं छोड़ दिया और ओहारा की गाडी के पीछे खड़ा हो गया। पर दो आदमियों को लेकर बाइसकिल तेज़ी से नहीं चल सकती थी, और इस समय जल्दी की जितनी आवश्यकता थी उतनी शायद ही कभी पडी होगी। फोयले ने इधर-उधर निगाह डाली और कुछ दूरी पर एक आदमी को बाइसकिल लिये पैदल जाते देखा। यह व्यक्ति शायद बाहर से शहर की तरफ़ जा रहा था और गोले-गोलियों की आवाज़ सुन कर उतर पड़ा था। फोयले दौड़ कर उसके पास पहुँचा और पिस्तौल दिखला कर उससे बाइसकिल माँगी। बिना आनाकानी के आज्ञा का पालन किया गया। बाइसकिल पर चढ़ते-चढ़ते फोयले ने कह दिया कि उसकी बाइसकिल आज शाम को शहर के बड़े होटल के दरवाजे पर रख दी जायगी। वह उसे वहाँ से ले सकता है। दर असल गुरिल्ला नागरिकों के साथ किसी प्रकार की सख्ती नहीं करना चाहते थे। केवल लाचारी की हालत में आत्म-रक्षा के लिये ही उनको इस प्रकार धमका कर बाइसकिल लेनी पडी थी।

थोडी हीं देर में सब लोग शहर जा पहुँचे और अपने सुरक्षित मुक़ामों में चले गये। केसी के सिवाय और किसी के चोट नहीं आई थी। सब लोग अपनी सफलता पर बड़े प्रसन्न हो रहे थे। पर जब दूसरे दिन उन्होंने अखबारों में अपने इस हमले का वर्णन पढ़ा तो उनको मालूम हुआ कि उस दिन बड़े सेनापति ने स्टेशन पर पहुँचने पर कुछ सोच-विचार कर अचानक दूसरी गाडी

के बजाय पहली गाड़ी में जाने का निश्चय किया था और इसलिये वह बच कर निकल गया था। दूसरी गाड़ी में दो साधारण फौजी अफसर मारे गये थे। इस खबर ने उनको बड़ा निराश कर दिया और उनका उत्साह बहुत कुछ ठण्डा पड गया। तो भी उनको इस बात का संतोष था कि हमने विदेशी सरकार के सबसे बड़े फौजी अफसर पर हमला किया और इसकी चर्चा देश-विदेशों में फैल गई जिससे संसार का ध्यान उनके आन्दोलन की तरफ़ आकर्षित हुआ।

लड़ाई का अन्त

दूसरे वर्ष गरमी के मौसम तक पुलनमोर की सरकारी फ़ौज का असर बिलकुल खतम हो गया। इसका सबब यह न था कि वहाँ पर सिपाहियों या हथियारों की कमी थी। बल्कि बात यह थी कि फ़ौजी अफ़सर यह फैसला न कर सकते थे कि हम क्या करें? डबलिन और लंदन में जो बड़े सेनापति और युद्ध-मंत्री रहते थे वे कभी एक तरह का हुक्म भेज देते थे और कभी दूसरी तरह का। एक दिन वे लिखते थे कि खूब कड़ी दमन नीति से काम लो और दूसरे दिन उसी हुक्म के मुताबिक काम करने के लिये स्थानीय अफ़सरों को डाँटा जाता था। इसका सबब यह था कि बड़े हाकिमों में भी अकसर मतभेद रहता था और हर एक अपने मन के माफ़िक काम करना चाहता था। इन दुतरफ़ी बातों से स्थानीय अफ़सर बड़े नाराज रहते थे और बार-बार आपस में सवाल करते थे कि आखिर हम किस तरह से काम करें? पुलनमोर की फौज का सेनापति बुरा आदमी नहीं था। वह सिर्फ़ नौकरी की खातिर आयरलैण्ड में नहीं आया था, बल्कि उसे अपने कर्तव्य का पूरा खयाल था और उसके लिये वह अपनी जान तक देने को तैयार था। वह राष्ट्रीय दल वालों के साथ खुल कर लड़ने की बड़ी इच्छा रखता था। पर उनका ढङ्ग ही निराला था। जब सेनापति साहब लड़ने के लिये तैयार होकर आते तो उनको मैदान बिलकुल खाली मिलता; और जब वे राह देखते-देखते थक जाते और भूख-प्यास के कारण उनकी बुरी हालत हो जाती तो राष्ट्रीय सेना वाले किसी कोने से निकल कर अचानक उन पर हमला करते। आम लोगों की तरफ़ से भी अब उसको बड़ा

डर मालूम पड़ता था। अब लोग सिपाहियों के जुल्मों और लूट-मार को सहते-सहते पक्के हो गये थे और इन बातों की कुछ भी परवा न करते थे।

अब सरकारी अफ़सरों को हर एक आयरलैण्ड निवासी पक्का बाग़ी जान पड़ता था। हर रोज बड़े अजीब किस्से सुनने में आते थे और अच्छे-अच्छे समझदार आदमी उन पर एतबार करते थे। कहा जाता था कि छापा मारने वाले गोरिल्लाओं को उनके काम के माफिक इनाम दिया जाता है और किसी पुलिस या फौजी अफ़सर के मारने की क़ीमत शेयर मारकेट की तरह उतरती-चढ़ती रहती है। मालूम नहीं कि यह अफ़वाह कहाँ तक सच थी, पर इसमें शक नहीं कि उस ज़माने में हर एक अफ़सर अकेला छावनी के बाहर जाने में डरता रहता था। उसे भय रहता था कि न मालूम कब कौन सी आफ़त मेरे ऊपर आ टूटे और मेरी जिन्दगी का खातमा हो जाय।

आयरलैण्ड के बड़े-बड़े जमीदारों और अमीरों पर भी इन घटनाओं का असर कम नहीं पड़ा था। अब उनको अच्छी तरह मालूम हो गया था कि सरकारी क़ानून और उसकी फौज हमारी हिफाजत नहीं कर सकती। उनके घरों को चाहे जो वेख़ौफ होकर लूट सकता था। जैसा राज्यक्रांति के जमाने में अक्सर हुआ करता है। इस वक्त आयरलैण्ड में बहुत से लुटेरे और डाकू पैदा हो गये थे, और कितने ही आदमी अपने पुराने दुश्मनों से बदला लेने के लिये भी फसाद करने लगे थे। राष्ट्रीय सेना वालों ने ऐसे लोगों के दबाने का बड़ा पक्का इन्तजाम कर रखा था और उनके सामने किसी की हिम्मत सर उठाने की नहीं पड़ती थी। इसलिये जो मालदार लोग राजभक्त थे और बग़ावत करने वालों को बुरा समझते थे उनको भी अपनी हिफाजत के लिए राष्ट्रीय सेना वालों का सहारा लेना पड़ता था।

पुलनमोर की सरकारी फौज हर तरह से मजबूत थी और उसके पास सामान की भी कुछ कमी न थी। इधर राष्ट्रीय सेना वालों की तादाद बहुत कम थी और उनको इधर-उधर से हथियार और दूसरा सामान इकट्ठा करना पड़ता था।

तो भी सरकारी सेना के करे-धरे कुछ नहीं होता था। सरकारी सिपाही फौजी कायदे के साथ लड़ते थे, पर यहाँ उनका युद्ध-शास्त्र कुछ काम नहीं देता था। खास कर सड़क, तार और रेल की पटरियों के बार-बार तोड़ दिये जाने से उनको बड़ी तकलीफ होती थी। अकसर ऐसा होता था कि राष्ट्रीय सेना वालों के बड़े-बड़े दल गाँवों और छोटे कसबों में पहुँचते थे और वहाँ पर खुल्लम-खुल्ला घंटों तक अपना काम करते रहते थे। पर सरकारी सेना को कभी ठीक वक्त पर उनकी खबर नहीं मिलती थी।

× × × ×

इस बार फोयले और उसके दल को पुलनमोर से दूर एक दूसरे जिले में जाकर काम करने का हुक्म दिया गया। इस जगह को वहाँ के लोग छाया घाटी के नाम से पुकारते थे। यह जगह बिलकुल पहाड़ी थी और उसके बीच में होकर सिर्फ एक सड़क गई थी जो कई मील तक बड़ी रद्दी हालत में थी। सरकारी फ़ौज वाले इस रास्ते से बहुत डरते थे और भूल कर भी उसमें होकर जाने का नाम नहीं लेते थे। सिर्फ एक बार 'ब्लैक एण्ड टैंस' वालों का एक दल वहाँ होकर गुजरा था; पर उसे बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। जब वे लोग बहुत से मुरदे और घायलों को लेकर छावनी में पहुँचे तो वहाँ का बड़ा अफसर बहुत गुस्सा हुआ। उसने कहा—"अच्छा हुआ, तुम लोग इसी लायक थे। तुम्हारा नालायक कप्तान गोली से मार देने लायक है जिसने अपने आदमियों को उस चूहेदानी में फँसा दिया।"

इस छाया घाटी की पहाड़ियों पर जगह-जगह राष्ट्रीय सेना के गोरिल्ला गिद्धों की तरह बैठे हुये अपने शिकार की राह देखा करते थे। पर उनकी आशा कभी पूरी नहीं होती थी। सरकारी सेना की बख्तरदार मोटर गाड़ियाँ भी जहाँ तक मुमकिन होता था इस बदनाम रास्ते को बचाकर निकलती थीं। इसलिये यह जिला एक तरह से सरकारी हुकूमत से बिलकुल बाहर था और वहाँ पर राष्ट्रीय दल वालों का ही हुक्म चलता था।

छाया घाटी का मुकाम चारों तरफ से पहाड़ी से घिरा था। बीच में थोड़े से गाँव थे। इन गाँवों के रहने वाले बड़े गँवार थे और उनको दुनिया की बातों का कुछ भी पता न था। उस जगह रेल, तार, डाकखाना वगैरह कुछ न थे। एक गाँव से दूसरे गाँव को जाने के वास्ते सिर्फ सैकड़ों वर्ष पुरानी पगडंडियाँ थीं। यहाँ पर बहुत से लोग कानून के खिलाफ शराब बना कर बेचते थे। इसी शराब के काम को रोकने के लिये फोयले का दल यहाँ पर भेजा गया था। साथ ही राष्ट्रीय सेना के सेनापति का मतलब यह भी था कि फोयले का दल बहुत थक गया है और उसे इस जगह कुछ आराम मिल जायगा।

इस जगह आते ही गोरिल्लाओं ने शराब बनने की जगहों का पता लगाया और उनके मालिकों के सामने ही शराब के बर्तनों को तोड़ कर फेंक दिया। उन्होंने हुक्म दिया कि जो कोई चोरी से शराब बनायेगा उसे कड़ी सजा दी जायगी। अपनी प्यारी चीज को इस तरह जमीन पर फैलते देख कितने ही लोग बड़े दुःखी होते थे और कभी-कभी राष्ट्रीय सेना वालों को बुरा-भला भी कहते थे। एक दिन एक बहुत बूढ़ी औरत ने केसी से कहा—"लोगों के खाने-पीने की चीज को तुम इस तरह बर्बाद करते हो यह बड़ा बुरा काम है। भगवान के यहाँ से इसका फल अच्छा नहीं मिलेगा। सरकारी फौज वाले हमें कभी इस तरह तंग नहीं करते थे। वे कभी-कभी पीने के लिये दस-पाँच बोतलें उठा ले जाते थे। तुम लोग भी अगर कभी दो-चार घूँट पी लिया करो तो हम को किसी तरह का एतराज़ न होगा और तुम्हारी थकावट दूर होकर तबियत खुश रहेगी।"

पर जब वे उनकी बातों पर कुछ ध्यान न देते तो वे ओहारा की चिरौरी करने लगते थे। उसके लाल चेहरे को देख कर उनको पक्का भरोसा हो जाता था कि वह खाली चाय पीने वाला आदमी नहीं है। इसलिये जब उस बुढ़िया ने देखा कि केसी उसकी बात नहीं सुनता तो वह ओहारा की खुशामद करने

लगी कि—"तुमको हमारे साथ ऐसा बर्ताव नहीं करना चाहिये। तुम तो इस अंगूरी शरबत के प्रेमी जान पड़ते हो। तुमको जरूर हमारी मदद करनी चाहिये।"

ओहारा ने दया के साथ कहा—"मा, ईश्वर ने मेरे और दूसरे तमाम लोगों के भीतर पहिले से ही शैतान का अंश रख दिया है। फिर शराब पीकर उसकी जड़ मजबूत करने से क्या फायदा? अगर तुम कुछ भी विचार करो तो तुमको मालूम होगा कि हम तुम्हारे भले का काम कर रहे हैं।"

राष्ट्रीय सेना वालों की कोशिश से थोड़े ही दिनों में वहाँ शराब बनना बंद हो गया। गाँवों के ज्यादातर लोग उनके काम की तारीफ करते थे। सिर्फ वे लोग जो शराब बनाकर रुपया कमाते थे उनसे नाराज थे।

करीब दो हफ्ते तक फोयले का गोरिल्ला-दल छायाघाटी में रहा। उनका ज्यादातर वक्त मछलियाँ पकड़ने और शिकार खेलने में जाता था। यहाँ पर वे खूब खा-पीकर और आराम करके तगड़े हो गये। अब उनको अपने जिले में लौट कर फिर काम में लगने की इच्छा प्रबल होने लगी। जब पंद्रह दिन और बीत जाने पर भी सेनापति ने उनके लौटने का हुक्म न भेजा तब तो उनका जी बहुत ऊबने लगा। क्योंकि इस मुकाम पर खाने पीने के सिवा उनको और कोई काम न था और यह बेकारी सबको बुरी लगती थी। लोगों के मन का यह भाव देख कर फोयले ने कहा—"भाइयो, तुम यहाँ आराम करने को भेजे गये हो जिससे फिर अपना काम तेजी के साथ कर सको। सेनापति ने मुझसे कहा था कि जब जरूरत होगी वह हमको बुला लेगा। पर अब बेशक बहुत देर हो रही है। इसलिये मैं एक आदमी सेनापति के पास भेजता हूँ कि वह हमको लौटने का हुक्म दे। जब तक वहाँ से हुक्म नहीं आता तब तक हमको यहीं पर कोई काम ढूँढ निकालना चाहिये।"

दो दिन बाद खबर आई कि आठ-दस मील के फासले पर सरकारी फौज

की कुछ मोटर गाड़ियाँ आने-जाने लगी हैं। गोरिल्ला उन पर छापा मारने को वहीं पहुँचे। उनको वहाँ कुछ ही घंटे हुए होंगे कि वे यह देख कर बड़े ख़ुश हुये कि एक खुली हुई मोटर गाड़ी बेलीनेटी के कस्बे से उनकी तरफ आ रही है। पर यह देख कर उनको बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसमें बैठे हुये सिपाहियों में से सिर्फ दो के पास बन्दूकें हैं, और वे लोग बड़ी ख़ुशी से गाते हुये आ रहे हैं। मालूम होता था कि उनको किसी तरह के खतरे का खयाल तक नहीं है।

फोयले ने केसी से कहा—"न मालूम क्या बात है? खैर, सब लोग अपने मोरचे के पीछे खड़े हो जाओ और जब मोटर पास आ जाय तो ऊपर की तरफ कुछ गोलियाँ चलाओ। फिर जैसा होगा देखा जायगा।"

ये बातें हो रही थीं कि मोटर मोरचे के सामने आ पहुँची। दस-बारह बन्दूकें हवा में चलाई गईं और मोटर को ठहराने का हुक्म हुआ।

सरकारी सिपाही फौरन ठहर गये और उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठा दिये। उनमें से एक ने कहा—"क्या तुम राष्ट्रीय सेना वाले हो? अब तो हम लोगों की लड़ाई बन्द हो चुकी है।"

फोयले ने ज़ोर से कहा—"हाँ, हम लोग राष्ट्रीय सेना के गोरिल्ला हैं। तुम गाड़ी से उतर कर नीचे आओ और बन्दूकें अलग रख दो। और अपने हाथ इसी तरह ऊपर उठाये रहो जब तक दूसरा हुक्म न दिया जाय।"

सिपाहियों ने बिना देर लगाये फोयले के हुक्म के माफिक काम किया। जब बालंटियर उनके पास गये तो एक हवलदार ने फोयले से कहा—"क्या आप इस दल के मुखिया हैं? हमको हुक्म दिया गया था कि आज बारह बजे से राष्ट्रीय सेना वालों के साथ हमारी क्षणिक संधि हो जायगी। इस वक्त एक बजा है।"

फोयले ने जवाब दिया—"मेरे पास ऐसा कोई हुक्म नहीं आया है। तुम लोग अपने हाथ नीचे कर लो, पर भागने की कोशिश मत करना। जिम, तुम इनकी बन्दूकों और गोली-बारूद को अपने कब्जे में रखो। तब तक हम मोटर गाड़ी को जलाते हैं।"

वे लोग सचमुच मोटर को जलाने वाले थे कि उनका आदमी, जो सेनापति के पास भेजा गया था, भागता हुआ आता दिखलाई दिया। वह दूर से ही चिल्लाया—"लड़ाई बन्द हो गई; लड़ाई बन्द हो गई।" बाद में यह मालूम हुआ कि सेनापति ने तीन दिन पहिले अपने एक गोरिल्ला के हाथ क्षणिक संधि की खबर फ़ोयले के पास भेजी थी। पर वह पहाड़ी पर चढ़ते समय पैर फिसल जाने से गिर गया और मरा हुआ पाया गया।

फोयले ने सेनापति का हुक्म अच्छी तरह से पढ़ा और तब वह बोला—"यह खबर सच है कि सरकारी सेना के साथ हमारी क्षणिक संधि हो गई है। जिम, इन लोगों की बन्दूकें वापस कर दो।" इसके बाद सिपाहियों के पास जाकर उसने गलती के लिये बहुत रंज ज़ाहिर किया। थोड़ी देर बाद सिपाही अपनी गाड़ी में बैठ कर खुशी-खुशी चले गये।

जब सिपाही चले गये तो ओहारा ने कहा—"अब हम लोगों के लिये सिवा हँसने के और कोई काम नहीं है।"

फोयले बोला—"हाँ, बात तो ऐसी ही है। भाइयो, अब छावनी को उठाओ और अपने प्यारे घरों को चलो।"

उस दिन शाम को वे बेलीनेटी के स्टेशन से रेल में सवार होकर पुलन-मोर पहुँचे। रास्ते में जगह-जगह लोगों ने उनका बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। गोरिल्ला तमाम रास्ते क्षणिक संधि की चर्चा करते रहे। उन लोगों ने अपनी बन्दूकें एक अच्छी जगह छुपा दी थीं कि न मालूम आगे चल कर क्या हो? कितने ही लोग तो उसी रात को अपने घरों के लिये रवाना हो गये।

बाकी आदमी पुलनमोर में ही ठहरे रहे क्योंकि वहाँ उसी समय उनके स्वागत के लिये एक नाच का जलसा करने का इन्तजाम किया गया था। फोग्ले और केसी जितना जल्दी हो सका घर जाकर अपनी प्रेयसियों से मिले। सब लोग क्षणिक संधि के बारे में अखबारों के लेख पढ़ रहे थे और आपस में बहस करते जाते थे। जब ओहारा से उसकी राय पूछा गई तो उसने अँगूठे से अखबार को ठोंकते हुये कहा—"अब मेरी जिन्दगी में तुम लोगों को कभी विदेशी सरकार से लड़ने का काम नहीं पड़ सकता। इस बात से मुझे बड़ा रंज होता है, क्योंकि तुम लोगों को छोड़ कर मुझे फिर किसी दूसरे मुल्क को जाना पड़ेगा।"

ओहारा के जाने की बात सुन कर लोग बड़ा शोर मचाने और उसे समझाने लगे। पर ओहारा ने गम्भीर भाव से कहा—"मुझे तुम्हारे जैसे दोस्तों को छोड़ते समय जो दुःख होगा वह मैं ही जानता हूँ। पर इसका कोई इलाज नहीं। मुझे लड़ाई का रोग है और मैं उसके सिवा कोई दूसरा काम नहीं कर सकता। मेरे लिए दुनियादार आदमियों की तरह घर में चैन से पड़े रहना नामुमकिन है। मुझे तो भयंकर और खूनी लड़ाइयों में ही मजा आता है।"

केसी ने भरे हुए गले से कहा—"ओहारा, फिजूल की बातें मत करो। तुम्हारे जैसे आदमियों की आयरलैण्ड को बड़ी जरूरत है। जो मुल्क आजादी के लिये लड़ रहा हो उसके लिये तुम्हारे जैसा आदमी ही एक मात्र आधार है।"

ओहारा ने धीमी आवाज से कहा—"मैं आपके इस प्रेम के लिये बड़ा अहसानमन्द हूँ। जब आयरलैण्ड फिर विदेशियों से लड़ने को तैयार होगा और उस वक्त अगर मैं जिन्दा रहूँगा, तो कोई ताकत मुझे यहाँ आने से नहीं रोक सकेगी। पर तब तक मैं चुपचाप बैठा नहीं रह सकता।"

"पर तुम कहाँ जाओगे?" कितने ही गोरिल्लाओं ने एक साथ ओहारा से

सवाल किया। क्योंकि वे जानते थे कि वह जो कुछ कहता है उसे करके रहता है।

ओहारा ने जवाब दिया—"अपनी कसम जो मैं कुछ भी जानता हूँ। पर दुनिया में कोई न कोई ऐसी पराधीन जाति होगी ही जो अपने अन्यायी शासकों का मुकाबला कर रही हो। ओहारा उन्हीं लोगों में मिल कर गोरिल्ला-धर्म का पालन करना पसंद करता है।"

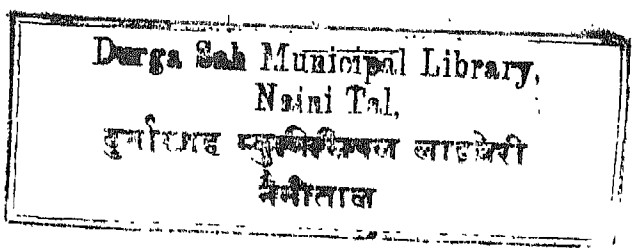
Durga Sah Municipal Library,
Naini Tal,
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
नैनीताल